जिनभाषित

वीर निर्वाण सं. 2528

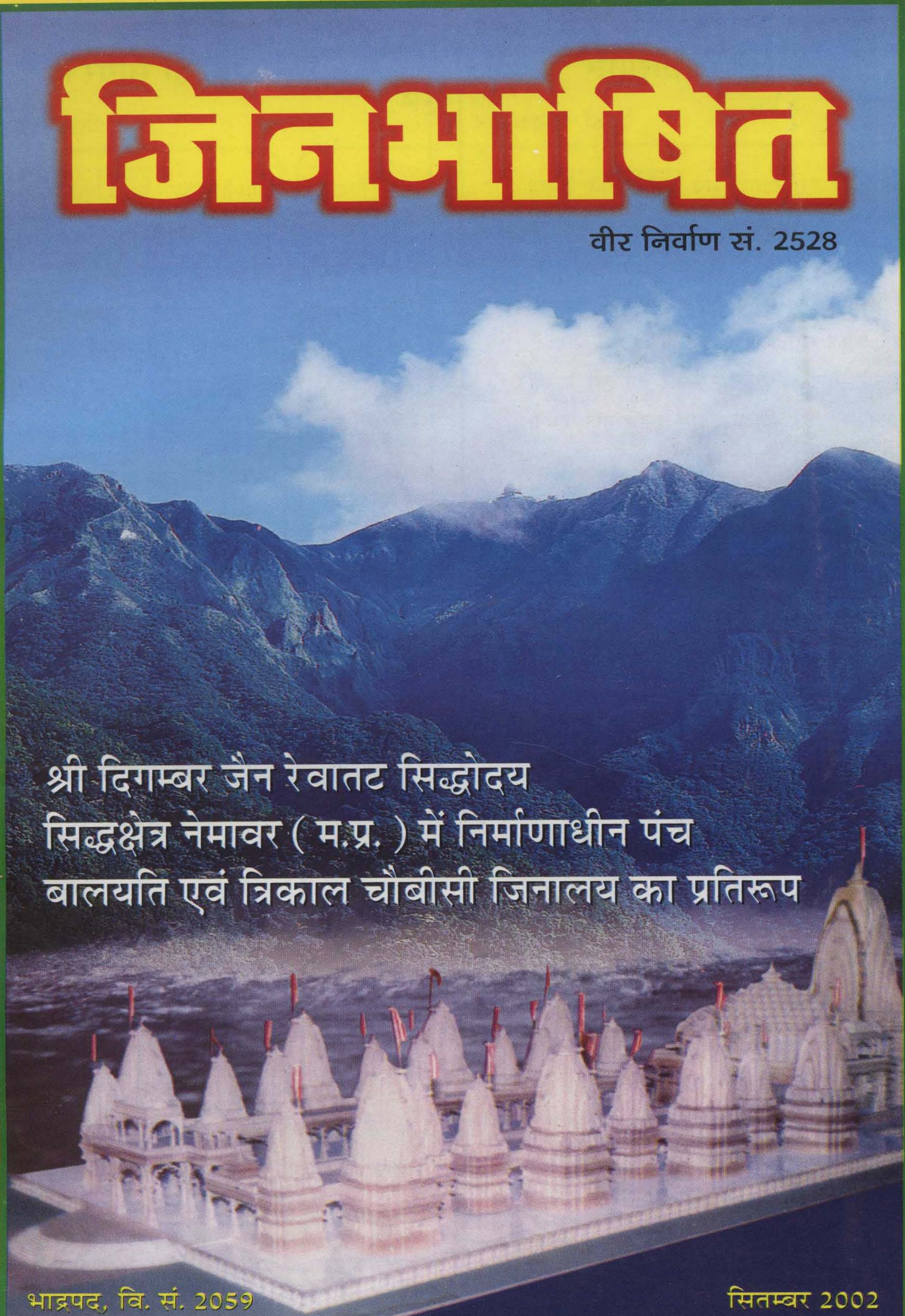

श्री दिगम्बर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर (म.प्र.) में निर्माणाधीन पंच बालयति एवं त्रिकाल चौबीसी जिनालय का प्रतिरूप

भाद्रपद, वि. सं. 2059

सितम्बर 2002

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुदेव विद्यासागर

डॉ. वन्दना जैन

गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।
प्रभंजन देखकर साहस तुम्हारा, ठहर जायेगा।

●

सरोवर की इसी माटी में, तुमने जन्म पाया है।
नये अंकुर सरीखा पथ, तुम्हें बचपन से भाया है।
तुम्हारे मान और सम्मान पर जग झूम जायेगा।
गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।

●

लिया संकल्प मुक्ति मार्ग पर चलने की बेला में।
पवन भी हो गया गतिहीन, उस अचरज की बेला में।
विजय का पथ ये साहस की निशानी देख पायेगा।
गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।

●

तुम्हारा देखकर तप त्याग, पूर्वज मुस्कराते हैं।
गगन से कुंदकुंदाचार्य जी कुंदन लुटाते हैं।
उन्हीं सा यश तुम्हारा, इस धरा पर फैल जायेगा।
गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।

●

है तुममें ओज शांति सा, दमक है वीर सागर सी।
शिव सागर सा जीवन दर्श तेरा है ओ तेजस्वी।
ज्ञान सागर का पाकर अंश जग ये जगमगायेगा।
गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।

●

नहीं संदेह अब हमको कभी दिग्भ्रांत होने का।
यही विश्वास है पक्का यहाँ प्रत्येक मानव का।
डगर का शूल बनकर फूल, फिर स्वागत में आयेगा।
गगन का हर सितारा अब तुम्हारे गीत गायेगा।

भाग्योदय तीर्थ
प्राकृतिक चिकित्सालय सागर (म.प्र.)

विद्या का ही सागर है

कैलाश मड़वैया

विद्या का ही सागर है या सागर की ही विद्या ये,
हाड़ मांस देह बीच ज्ञान-गीत-गागर है।
सम्यक् ज्ञान, सम्यक दृष्टि, सम्यक् चारित्र युक्त,
बीसवीं सदी का आश्चर्य ये उजागर है।
ज्ञान औ चरित्र जैसे पा गये शरीर एक
और इस शरीर में समाया धर्म आगर है।
सूरज की धूप और चन्द्रमा का रूप लिये,
तीर्थंकर सा धरती पै आज विद्यासागर है।

●

ज्ञान की पिपासा जिसे देख और और बढ़े,
ज्ञान मुक्ताओं में ये हीरा है-जवाहर है।
जिज्ञासा की हरी भरी भूमि पै वितान दिव्य,
सौम्य, सरल, श्वेत-शांत, ज्ञान-दीप्त-चादर है।
सिन्धु में तो सरितायें डूबतीं हैं आ-आकर,
किन्तु इस सागर से निकलतीं ज्ञान-धारायें।
लक्षण-विलक्षण-दशलक्षण का भव्य रूप,
आज 'जिनता' का पर्याय विद्यासागर है।

●

'नर्मदा का नरम कंकर' हो गया है 'मूक माटी',
और उस माटी में समाया 'समय सार' है।
दक्षिण से उत्तर का पानी, पानीदार हुआ
नर्मदा औ बेतवा में 'विद्या' वाली धार है।
'वर्णी' के बाद किसी सन्त ने जगाया ऐसा,
ऐसे लगा जैसे यह वही अवतार है।
'श्रवणबेलगोला' जैसे आ गये हों मध्य-देश,
उत्तर से दक्षिण का सेतु 'विद्यासागर' है।

75, चित्रगुप्त नगर, कोटरा
भोपाल (म.प्र.)-462003

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रजि. नं. UP/HIN/29933/24/1/2001-TC डाक पंजीयन क्र.-म.प्र./भोपाल/588/2002

जिनभाषित

मासिक

सितम्बर 2002

वर्ष 1, अङ्क 8

सम्पादक
प्रो. रतनचन्द्र जैन

कार्यालय
137, आराधना नगर,
भोपाल- 462003 (म.प्र.)
फोन नं. 0755-776666

सहयोगी सम्पादक
पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया
पं. रतनलाल बैनाड़ा
डॉ. शीतलचन्द्र जैन
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन
प्रो. वृषभ प्रसाद जैन
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती'

शिरोमणि संरक्षक
श्री रतनलाल कँवरीलाल पाटनी
(मे. आर.के.मार्बल्स लि.)
किशनगढ़ (राज.)
श्री गणेश राणा, जयपुर

द्रव्य-औदार्य
श्री गणेशप्रसाद राणा
जयपुर

प्रकाशक
सर्वोदय जैन विद्यापीठ
1/205, प्रोफेसर्स कॉलोनी,
आगरा-282002 (उ.प्र.)
फोन : 0562-351428, 352278

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक	5,00,000 रु.
परम संरक्षक	51,000 रु.
संरक्षक	5,000 रु.
आजीवन	500 रु.
वार्षिक	100 रु.
एक प्रति	10 रु.

सदस्यता शुल्क प्रकाशक को भेजें।

अन्तस्तत्त्व

		पृष्ठ
◆ आपके पत्र : धन्यवाद		2
◆ सम्पादकीय : उच्चतम न्यायालय का सराहनीय निर्णय		4
◆ लेख		
● महाश्रमण दिगम्बराचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज	मुनिश्री निर्वेगसागर जी	5
● उत्तम मार्दव	आचार्य श्री विद्यासागर जी	7
● पर्वराज पर्युषण	मुनिश्री समतासागर जी	11
● न अहं, न शर्म.....	डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	13
● और मौत हार गई	पं. मूलचन्द लुहाड़िया	15
● समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका	कु. समता जैन	18
◆ जिज्ञासा-समाधान	पं. रतनलाल बैनाड़ा	20
◆ परिचय : दि. जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर	महावीर प्रसाद पहाड़िया	23
◆ समाचार		12, 25, 31
◆ वर्षा योग : चातुर्मास 2002		26
◆ जरूरत है शाकाहार के पहंचान-चिह्न के नियम के पालन की		31-32
◆ कविताएँ :		
● गुरुदेव विद्यासागर	डॉ. वन्दना जैन	आवरण पृष्ठ 2
● विद्या का ही सागर है	कैलाश मड़वैया	आवरण पृष्ठ 2
● वाह रे! दूध के धुले	मुनि श्री उत्तमसागर जी	19
◆ आत्मकथा: एक बूढ़ी गाया की आत्मकथा	श्रीमती रंजना पटोरिया	6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आपके पत्र, धन्यवाद : सुझाव शिरोधार्य

जिनभाषित में आपके सम्पादकीय सभी स्पष्टोक्ति सहित एवं समाज के लिए आगमिक विवादों को सुलझाने में काफी उपयोगी एवं प्रशंसनीय हैं। बधाई स्वीकार करें।

पं. शिवचरणलाल जैन, शास्त्री
सीताराम मार्केट, मैनपुरी (उ.प्र)

जून 2002 की जिनभाषित पत्रिका प्राप्त हुई। इसमें सम्पादकीय लेख महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी का 30वाँ समाधि दिवस एवं अन्य सभी लेख पठनीय, मननीय एवं अत्यंत ज्ञानवर्द्धक हैं। पत्रिका का इतने सुंदर रूप में नियमित प्रकाशन ही महान उपलब्धि है, जिसके लिए आपको हार्दिक बधाई व कोटिश: धन्यवाद।

पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहकर उच्चतम ऊँचाइयों को प्राप्त करे ऐसी मेरी शुभभावना है। मैं इसमें बराबर सहयोग प्रदान करूँगा। मेरे पास 100जैन पत्र आते हैं, उनमें आपकी पत्रिका सर्वश्रेष्ठ है।

डा. ताराचन्द्र जैन बख्शी 'वीर'
सम्पादक : 'अहिंसा वाणी'

जिनभाषित के अंक अत्यन्त पठनीय तथा अनुकरणीय सामग्री से साथ बराबर मिल रहे हैं। मई अंक में दोनों पूजा पद्धतियाँ आगमसम्मत लेख पढ़ा। बीसपंथ और तेरापंथ,पद्धतियाँ देश के कोने-कोने में (ये दोनों पद्धतियाँ) प्रचलित हैं। उत्तर भारत में तेरापंथ की बहुलता, परन्तु दक्षिण में बीस पंथ प्रचलन में हैं। अत: सामाजिक सामंजस्य के लिए जन भावनाओं का सम्मान होना चाहिए। एक तीर्थस्थल पर वर्षों से सार्वजनिक मस्ताकाभिषेक में पंचामृत अभिषेक नहीं होता था, परन्तु एक व्यक्ति के महामन्त्री बनने पर वहाँ यह पद्धति अपनायी गई। ऐसी स्थिति में तेरापंथी लोगों में रोष देखा गया। इतना ही नहीं जब अभिषेक करने वालों ने जल से अभिषेक की माँग की, तब वह अनसुनी कर दी गई। ऐसे लोगों के लिए इस लेख से शिक्षा लेनी चाहिए। जनभावना को सर्वोपरि मानकर किसी को भी दूग्रही नहीं बनना चाहिए।

जुलाई माह में देवदर्शन पर पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज का प्रवचनामृत, श्री अजित प्रसाद जैन का "हिन्दुत्व और जैन समाज" तथा जे.एल. संघवी का "अहिंसा पर हमला" लेख पढ़कर यदि समाज जागरूक बन सके तो अच्छा है। मूकमाटी पर सम्पादकीय सम्पादक की विद्वत्ता का दिग्दर्शन कराता है। आत्मान्वेषी आचार्य श्री विद्यासागर जी, रत्नत्रय का प्रकाशपुंज, के साथ जिज्ञासा-समाधान भी पूर्ण लेख है। सामग्री का चयन उत्कृष्ट गैट, अप सुन्दर है। इसके लिए बधाई।

डॉ. नरेन्द्र जैन "भारती"
वरिष्ठ सम्पादक पार्श्व ज्योति
अ.दि.जैन उ.मा. विद्यालय सनावद (म.प्र.)

जिनभाषित के जून-जुलाई के अंक मिले। जून अंक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी मुनिराज के प्रेरक कर्त्तत्व एवं व्यक्तित्व को समर्पित है। विपरीत परिस्थितियों में विद्याध्ययन पश्चात संस्कृत-हिन्दी में जयोदय, वीरोदय, दयोदय, भाग्योदय आदि विपुल साहित्य की रचना अद्भुत एवं प्रेरक प्रसंग है, 'वीतरागता की पराकाष्ठा' उद्वेलित करता है। उनका संदेश 'मोक्षमार्ग पर चलने के लिए समर्पित भाव से समीप आये उसे शरण देना और स्वयं अनासक्त रहकर अपने आचरण में तत्पर रहना' आत्मार्थी के कल्याण हेतु राजमार्ग है। 'श्रुतपंचमी हमारा कर्तव्य' आलेख मार्गदर्शक है। आज के समय जबकि यत्र-तत्र जिनवाणी का बहिष्कार अपने द्वारा ही की जा रही हो, श्रुतपंचमी का संदेश दिशाबोधक सिद्ध होता है। ज्ञातव्य है कि 19.1.1935 में ग्वालियर स्टेट मे महगाँव में जैनधर्म के द्रोहियों द्वारा जैन मंदिर अपवित्र कर जैनशास्त्र जला दिये थे। तब परिषद के प्रस्ताव पर सर सेठ हुकमचन्द्र जी के नेतृत्व में 10 महानुभाव राजमाता ग्वालियर से न्याय प्रदान हेतु मिले। और 19.1.1936 को (महगाँव अत्याचार काण्ड) की वर्षी पर उपवास जल्से एवं तार आदि से आन्दोलन किया। ऐसी जागरूकता अब समाज में दिखाई नहीं देती। चिंता का विषय है। विश्वास है कि जिनदेवता-वाणी, गुरु आदि की रक्षा का भाव जागृत होगा।

जुलाई अंक के देवदर्शन हिन्दुत्व और जैन समाज, अहिंसा पर हमला, सम्पादकीय एवं अन्य आलेख वस्तु स्वरूप का चित्रण करते हैं। समाज के कर्णधार, अपने आपसी मतभेद भुला कर महावीर की वीतरागता/अहिंसा को केन्द्र बिन्दु बनाकर अपने अस्तित्व की रक्षा में संगठित हो तभी हमारी आत्मियता अक्षुण्ण बनी रहेगी। एकांकी अपनी-अपनी प्रशंसा, घटकों में विभाजन आदि से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक है। अत: नये-नये विवाद बिन्दु उत्पन्न कर समाज में विग्रह/विभ्रम के बीज बोये जा रहे हैं। सम्पादक जी, आप अपने दीर्घ अनुभव एवं जैन समाज की व्यक्तिवादी छीन्न-भिन्न स्थिति को दृष्टिपात कर पत्रिका के माध्यम से एकता के सूत्र संजोने की कृपा करें, इसी से जिन शासन, वीर शासन जयवन्त रहेगा। व्यक्ति नहीं शासन महान है।

डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल, अमलाई

जिनभाषित जुलाई 2002 का अंक प्राप्त हुआ। हम हमेशा जिनभाषित के नये अंक की प्रतीक्षा करते रहते हैं। अन्य अजैन मित्रों को भी इसके अंक दिखाते समय गौरव का अनुभव होता है। इस अंक का आलेख 'हिन्दुत्व और जैन समाज'-श्री अजित प्रसाद जी का काफी महत्त्वपूर्ण व प्रासंगिक है। फिलहाल जैन समाज का प्रधान लक्ष्य 'अल्पसंख्यक' वाला मुद्दा ही होना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आज के इस युग में बिना अधिकार के कोई भी कार्य मुश्किल है। और अधिकार प्राप्त करने के लिए लड़ना पड़ता है।

प्रत्येक अंक का सम्पादकीय तो शोधपूर्ण होता ही है, शंका-समाधान भी काफी जानकारियाँ देता है। यह पत्रिका जैन समाज में घर-घर में पहुँचानी चाहिए।

डॉ. अनेकान्त जैन
व्याख्याता
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

जिनभाषित जून 2002 का अंक मिला जिसमें आपने आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के बारे में काफी विस्तार से बतलाया। यह संपूर्णतः अच्छी और स्मरणीय पत्रिका साबित हुई है। मैं पत्रिका में निरन्तर निखार देख रहा हूँ।

इंजी. आलोक लहरी,
HD-22, डायमंड सीमेंट, नरसिंहगढ़, दमोह (म.प्र.)

पत्रिका जिनभाषित बेहद उपयोगी पत्रिका होती जा रही है जुलाई अंक के मुखपृष्ठ पर आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी का चित्र बहुत आर्कषक लगा। साथ ही अंदर के पृष्ठों पर मुनि श्री क्षमासागर जी द्वारा आचार्यश्री के जीवन परिचय का प्रस्तुतीकरण बहुत भाया। इस अनुपम प्रस्तुति पर साधुवाद।

श्रीपाल जैन, नेहरु वार्ड, गोटेगाँव (म.प्र.)

जून, 2002 की जिनभाषित पत्रिका प्राप्त हुई। इतने कम दामों में इतनी सुन्दरता के साथ पाठकों के लिये प्रतिमाह बेहद ज्ञानवर्धक पठनीय सामग्री देते रहना सचमुच सराहनीय कार्य है। इसके लिये पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सदस्य, प्रकाशक व सम्मानीय संरक्षक सदस्य बधाई के पात्र हैं। एक सुझाव है कि यदि यह पत्रिका माह के प्रथम सप्ताह में ही प्राप्त हो जाये तो इससे पाठकों को ज्यादा सांत्वना मिलेगी।

महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के 30वें समाधि दिवस पर प्रकाशित आलेख सम्पादकीय के रूप में रुचिकर लगा। (आचार्य विद्यासागर महाराज) के गुरुवर के अन्य ज्ञानवर्धक आलेख पढ़ते ही मन प्रफुल्लित हो उठा और परम पूज्य गुरुवर के श्री चरणों में झुक गया। "बारह भावना" जहाँ मन को भायी तो वहीं दमा का उपचार वाला प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित आलेख भी अच्छा लगा।

पत्रिका इसी तरह प्रकाशित होती रहे एवं प्रगति करती रहे, इसी भावना के साथ।

प्रकाश जैन रोशन
जतारा, टीकमगढ़, म.प्र.

जिनभाषित का प्रत्येक अंक यथा समय प्राप्त हो रहा है। आचार्यश्री के मुनि दीक्षा दिवस पर समर्पित जुलाई 2002 का अंक सारगर्भित एवं सच्चा दिग्दर्शन कराने वाला है। विशेषतः आपका सम्पादकीय, 'मूकमाटी: एक उत्कृष्ट महाकाव्य' ने श्रावकों की जिज्ञासा को एक नया आयाम दिया है। अपने आप में अद्वितीय इस उत्कृष्ट महाकाव्य को हृदयंगम करने में हम अल्पज्ञ अपने को असहाय पाते हैं, लेकिन आपकी टिप्पणी एवं व्याख्याओं के द्वारा इसे समझना सरल हो जाता है।

आचार्य श्री के साहित्य पर हो रहे शोध कार्य की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। यदि इस संबंध में भोपाल में विद्वद्वर्ग का एक सेमीनार आयोजित किया जावे तो समाज के सभी वर्गों को तथ्यपरक जानकारी एवं धर्म लाभ प्राप्त होगा। इस संबंध में आपके द्वारा किये गए प्रयास से सभी लाभान्वित होंगे।

पुनः जिनभाषित के उत्तरोत्तर विकास के लिए हमारी शुभकामनाएँ।

अरविन्द फुसकेले
उपाध्यक्ष-पारस जन कल्याण संस्थान
ई.डब्ल्यू.एस.-541, कोटरा, भोपाल

'जिनभाषित' मई 2002 का सम्पादकीय "दोनों पूजा पद्धतियाँ आगमसम्मत' वस्तुतः सम्यक विश्लेषण है। आपने इस तरह समन्वय का जो प्रयास किया है वह तभी असरकारी होगा जब कि लोग पूजा के यथार्थ को समझेंगे।

दामोदर जैन,
S-334, नेहरु नगर, भोपाल

सुभाषित

- **अपना उद्देश्य सिद्धि का नहीं, सिद्ध बनने का होना चाहिए।**
- **संयम और साधना आत्मदर्शन के लिए हो, प्रदर्शन के लिए नहीं।**
- **प्रदर्शन करने से दर्शन का मूल्य कम हो जाता है, यदि उसके साथ दिग्दर्शन और जुड़ जाये तो उसका मूल्य और भी कम हो जाता है।**
- **साधन वही है जो साध्य को दिला दे। कारण वही है जो कार्य को सम्पादित करे। औषधि वही है जो रोग को दूर करे। तप वही है जो नर से नाराण बना दे।**

आचार्यश्री विद्यासागर 'सागर बूँद समाय' से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

उच्चतम न्यायालय का सराहनीय निर्णय

भारत के उच्चतम न्यायायल ने दिनांक 12 सितम्बर को माध्यमिक कक्षाओं के नवनिर्मित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप 2002 को संविधान के अनुरूप घोषित करने का जो निर्णय दिया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। दूध का दूध पानी का पानी कर देने वाले इस निर्णय ने भारतीय अस्मिता की रक्षा की है और देश के विभिन्न धर्मावलम्बियों के मन में जो क्षोभ व्याप्त था उसका शमन किया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम का निर्माण करनेवाले तथाकथित विशेषज्ञों ने हिन्दी, इतिहास और समाजविज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में भारत के विभिन्न धर्मों एवं जातियों के विषय में ऐसी अनर्गल, अशोभनीय, अप्रामाणिक बातें ठूँस दी थीं, जिनसे उन धर्मों एवं जातियों के प्रति घृणा और अनास्था का भाव उत्पन्न होता था। इसने उन धर्मों के अनुयायियों के स्वाभिमान को गहरी चोट पहुँचाई थी, जिससे उनका हृदय क्षोभ से आन्दोलित था। 11वीं कक्षा के इतिहास की पुस्तक में जैनधर्म के विषय में यह लिखा गया था कि जैनों के चौबीस तीर्थंकरों में से केवल भगवान् महावीर ही ऐतिहासिक पुरुष हैं, शेष तेईस तीर्थंकर काल्पनिक हैं और भगवान् महावीर की साधना का जो रूप वर्णित किया गया था, वह जैनधर्म में मान्य साधना से बिलकुल विपरीत और अशोभनीय था। जैनधर्मालम्बियों ने केन्द्रीय शासन से इसका घोर विरोध किया था। अन्य धर्मावलम्बियों की तरफ से भी विरोध प्रकट किया गया था। इसके फलस्वरूप मानव संसाधन मंत्रालय ने नया पाठ्यक्रम निर्मित कराया जिसमें से उक्त आपत्तिजनक अंशों को निकाल दिया गया। साथ ही पाठ्यक्रम में सभी धर्मों के मूल सिद्धान्तों की शिक्षा देने का प्रावधान किया गया, जिससे विद्यार्थियों को सभी धर्मों के बारे में सही जानकारी मिल सके और उनके प्रति समभाव उत्पन्न हो। वस्तुत: सर्वधर्मसमभाव अर्थात् किसी भी धर्म के प्रति घृणा न होना ही राष्ट्रीय दृष्टि से धर्मनिरपेक्षता है।

किन्तु उक्त पाठ्यक्रम के विचारधारा-विशेष से प्रतिबद्ध निर्माताओं एवं राजनीतिक दलों ने सरकार के उक्त कदम का घोर विरोध किया, उस पर शिक्षा के भगवाकरण और तालिबानीकरण के आरोप लगाये तथा नवीन पाठ्यक्रम को लागू होने से रोकने के लिए उच्चतम न्यायालय में जनहित याचिका प्रस्तुत कर दी। उच्चतम न्यायालय ने उस समय पाठ्यक्रम को लागू करने पर रोक लगा दी थी किन्तु अब विषय पर विधिवत् सुनवाई कर तथा गंभीरतापूर्वक विचार विमर्श कर यह निर्णय दिया है कि नवीन संशोधित पाठ्यक्रम न तो असंवैधानिक है, न ही धर्मनिरपेक्षता की भावना के विरुद्ध, अत: उसे लागू किया जा सकता है। निर्णय का विवरण, प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर', भोपाल (दिनांक 13, सितम्बर, 2002) में इस प्रकार दिया गया है-

"नई दिल्ली, 12 सितंबर (एजेंसियाँ)। सुप्रीम कोर्ट ने आज भगवाकरण के आरोपों को खारिज करते हुए माध्यमिक स्कूलों के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप-2002 को लागू करने और संशोधित पाठ्यक्रम वाली इतिहास एवं हिंदी सहित सामाजिक विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए केंद्र सरकार को हरी झंडी दे दी।

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि संविधान धार्मिक शिक्षा का अध्ययन प्रतिबंधित नहीं करता और स्कूलों में इससे संबंधित पाठ्यक्रम लागू करने को सरकार का गैरधर्मनिरपेक्ष कार्य नही कहा जा सकता। न्यायमूर्ति एमबी शाह, डीएम धर्माधिकारी और एचके सेम की तीन सदस्यी खंडपीठ ने दो-एक के बहुमत से अरुणा राय और अन्य की जनहित याचिका पर यह फैसला सुनाया याचिका में केंद्र पर आरोप लगाया गया था कि सरकार समीक्षा के नाम पर पाठ्यक्रम में अपनी राजनीतिक और धार्मिक विचारधार को शामिल करना चाहती है।

खंडपीठ ने कहा कि महात्मा गाँधी खुद धर्म की शिक्ष देने के पक्षधर थे। शिक्षा को मूल्य आधारित बनाने की दृष्टि से धार्मिक शिक्षा देने में कुछ भी गलत नहीं है। न्यायमूर्ति शाह ने कहा कि जिस पाठ्यक्रम को चुनौती दी गई है उसमें ऐसी कोई धार्मिक शिक्षा शामिल नहीं है, जिससे अपनी इच्छा का धार्मिक अध्ययन चुनने के छात्रों के मौलिक अधिकार का संरक्षण करने वाले संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन होता है। न्यायाधीशों ने इस संबंध में तीन अलग-अलग निर्णय दिए।

न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने अपने अलग फैसले में न्यायमूर्ति शाह से सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि धार्मिक शिक्षा तो सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं में भी लागू की जा सकती है। न्यायमूर्ति सेम ने हालाँकि न्यायमूर्ति शाह के फैसले से आम तौर पर सहमति व्यक्त की, लेकिन उन्होंने केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड से विचार-विमर्श न करने को लेकर सरकार की आलोचना की। खंडपीठ ने इतिहास और हिंदी सहित सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रमों को लागू करने पर लगी अंतरिम रोक हटा ली। इससे लाखों छात्रों ने राहत की साँस ली है, जो अभी तक इन पुस्तकों के बिना काम चला रहे थे। कोर्ट ने कहा कि एनसीईआरटी द्वारा तैयार स्कूली पाठ्यक्रमों को सिर्फ इस आधार पर कि केंद्रीय परामर्शदात्री बोर्ड से सलाह मशविरा नहीं किया गया, निरस्त करना असंवैधानिक है।

बोर्ड कोई वैधानिक निकाय नहीं है। खंडपीठ ने सरकार को भविष्य की शिक्षा नीति के लिए बोर्ड के पुर्नगठन का निर्देश दिया। इस फैसले से सुप्रीम कोर्ट का मार्च 2002 का अंतरिम आदेश रद्द हो गया, जिसमें नए पाठ्यक्रम को देश भर में लागू किये जाने पर रोक थी। कोर्ट ने कहा कि पाठ्यक्रम तैयार करने वाली एनसीईआरटी एक वैधानिक संस्था है। एनसीईआरटी शिक्षा में मूल्यों के महत्त्व और सभी धर्मों के प्रेम संबंधी सार को अच्छी तरह समझती है।"

केन्द्रीय मानव संसाधन विभाग के उपर्युक्त प्रयास एवं माननीय उच्चतम न्यायालय के सटीक निर्णय से भारतीय संस्कृति एवं धर्मनिरपेक्षता के वास्तविक स्वरूप की रक्षा हुई है। एतदर्थ हम दोनों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

रतनचन्द्र जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाश्रमण दिगम्बराचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

48वीं पुण्य तिथि के अवसर पर

मुनि श्री निर्वेगसागर जी

अहिंसा और सत्य की खाद से संपुष्ट भारतीय संस्कृति के पौध का संरक्षण और संवर्धन करने में श्रमण परम्परा, संत धारा का अपना एक महत्वपूर्ण योगदान है, जिसे भूलाना नहीं अपितु बुलाना, स्मृति में बनाये रखना ही सत्पुरुषों के प्रति आस्था और समर्पण का प्रतीक है। ''सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय'' के सर्वोदयी उद्देश्य के साथ ही निज कल्याण के हेतु अनेकों आत्माओं ने इस भूमि पर साधना की, और साधना के बल पर तड़पती मानवता को समय-समय पर आध्यात्म और प्रेम वात्सल्य के शीतल जल से स्नपित कराते हुए सुख और शांति प्रदान की।

ऐसी ही श्रमण परम्परा के उज्जवल नक्षत्र ''चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज'' हुए। जिन्होंने लगभग 82 वर्ष पूर्व भौतिक सुख-सुविधाओं, इंद्रियजन्य विषय कषायों से मुख मोड़, सन् 1919 में समस्त आरम्भ और परिग्रह को त्याग कर प्रकृति पुरुस्कृत दिगम्बरत्व को अंगीकार किया तथा ''परोपकाय सतांविभूतय:'' इस सूक्ति के अनुसार इस नश्वर देह को परोपकार जैसे सत्कार्यों में वीतमोह होकर समर्पित कर दिया।

सन् 1872 दक्षिण प्रांत के येलगुल ग्राम में माँ सत्यवती की कोख से द्वितीय किन्तु अद्वितीय बालक का जन्म, नामकरण हुआ 'सातगौडा', ज्योतिषाचार्यों की घोषणा बालक एक महान संत बनेगा प्राणि मात्र का अभय प्रदाता। हुआ यूं ही ''पूत के गुण पालने में'' वाली कहावत चरितार्थ होती चली, बालक करुणा प्रेम, समवृत्ति, गंभीरता आदि गुणों के साथ-साथ दूज के चाँद की तरह यौवन की दहलीज पर पहुँच गया। शौच को जाते हुए सातगौड़ा ने देखा कि एक सर्प मेढ़क को खाने दौड़ रहा है तुरंत पत्थर पर लोटा दे मारा सर्प विपरीत दिशा में भाग गया, घर लौटने पर फूटा लोटा देख माँ ने पूछा, समाधान मिलने पर माँ की आँखों से अश्रुधारा बह पड़ी और गौरवान्वित हुई वह माँ कह पड़ी धन्य है बूटा तूने कोख सफल कर दी। करुणा ह्रदयी पुरुष पक्षियों को भी कभी खेतों से नहीं उड़ाता पास ही छना हुआ शुद्ध जल भी रख देता पीने के लिये। परिणाम स्वरूप फसल कम नहीं ज्यादा ही पैदा होती थी ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जो मन में थी।

आध्यात्मिक विकास के लिये आवश्यक होती है देह के प्रति निस्पृहता, निरीहता की, जिसका विकास होता है दृढ़ संकल्प से, सादा जीवन उच्च विचार से। 18 वर्ष की उम्र से ही आराम दायक गादी का त्याग कर माँ के द्वारा काते खादी के वस्त्र पहनते हुए 25 वर्ष की उम्र में पाद-त्राण का भी त्याग कर दिया सहिष्णुता की वृद्धि के लिये। अभी त्याग का क्रम टूटा नहीं 32 वर्ष की उम्र में ही घी व तेल का आजीवन त्याग कर दिन में मात्र एक बार ही शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करने की दृढ़ प्रतिज्ञा/आखिर, अंततोगत्वा यह माटी का पुतला माटी में ही मिलना है क्यों न इसके द्वारा कुछ चेतन की शाश्वत सत्ता का विकास किया जाए। और वैराग्य भीतर ही भीतर बढ़ता ही चला गया कि सन् 1914 में गुरु देवेन्द्रकीर्ति से निवेदन किया गया कि मुझे श्रमण दीक्षा प्रदान की जाए, पर .... ''बेटा तलवार की धार पर चलने के समान यह व्रत है अत: धीरे-धीरे कदम बढ़ाने पर पतन का भय नहीं रहता, इसलिये पहले उत्कृष्ट श्रावक के व्रत अंगीकार करो।'' गुरु के इस उपदेश को आदेश मान क्षुल्लक दीक्षा स्वीकार की। भगवान नेमिनाथ की निर्वाण भूमि गिरनार जी सिद्ध क्षेत्र में ऊपरी वस्त्र का त्याग कर मात्र एक लंगोटीधारी का पद स्वीकार किया तथा आजीवन सवारी का भी त्याग कर दिया।

तात्कालिक क्षेत्रीय तथा सामयिक प्रतिकूलताओं के बावजूद भी आगमिक चर्या का निर्दोष पालन करते हुए, अपने गुरु को ही पुन: दीक्षित कर ''गुरुणां गुरुं'' का दायित्व स्वीकार किया। कठोर तपश्चर्या मुनि जीवन में धारणा पारणा अर्थात् एक उपवास एक आहार निरन्तर, कभी लगातार 2,3,4,5 से लेकर लगातार 16 दिन तक निराहार निर्जल रहकर देह को तपाग्नि में तपाकर आत्मा को कुन्दन की तरह निर्मल और प्रकाशमान बनाने की साधना स्वरूप 35 वर्ष के मुनि जीवन में लगभग 10,000 (दस हजार) उपवास किये।

उपसर्ग और परीषहों को अपवर्ग की प्राप्ति का साधन मान सहर्ष स्वीकारते हुए समता का नित्य-प्रति विकास करते रहे। बस्ती से सुदूर एकांत गुफा में ध्यान मग्न वे साधक भिखारी के द्वारा रोटी माँगते हुए रोटी न मिलने पर कील लगी लकड़ी से मारते हुए लहूलुहान होने पर भी विदेही की तरह शान्त और निराकुल, निष्प्रतिकारक भावों से सहन करते हुए, ''शांति सागर'' इस नाम को सार्थक कर रहे थे। चीटियों, दंस मशक, क्षुद्र कीट, मकोड़े तथा बिच्छू आदि की प्रदत्त पीड़ा तो मानो आपकी साधना विकास/कर्म निर्जरा में सहयोगी ही बना रही हो तथा नग्न देह पर घंटों सर्प का लिपटना,सिंह का सामने बैठे रहना, मानो आपके प्रेम और अहिंसक भावों से वे मित्रता को प्राप्त हो रहे हो, और राजाखेड़ा की वह शत्रु द्वारा प्रहार की घटना के बावजूद भी शत्रु के प्रति भी वही अनुकम्पा का भाव आपकी ह्रदय की विशालता, ''पापी से नहीं पाप से घृणा करो'' कहावत को प्रतिबिम्बत करता है।

रमता जोगी बहता पानी, परोपकार के सत् उद्देश्य से निरन्तर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गतिशील बड़े-बड़े पहाड़, उत्थान पतन के समक्ष भी हिम्मत न हारती हुई सरिता के सदृश्य दक्षिण भारत से प्रारम्भ की पदयात्रा, अरुक-अथक। अहिंसा सत्य अपरिग्रहवाद का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुँचाते हुए कटनी, ललितपुर, मथुरा, दिल्ली, जयपुर, आदि नगरों, महानगरों में चातुर्मास कर अनेक धार्मिक व सामाजिक उत्थान के कार्य आपकी महती अनुकम्पा से ही सम्भव हुए हैं। आगम ग्रंथों की सुरक्षा हेतु ताम्रपत्र में उत्कीर्णन, बालविवाह पर प्रतिबंध, शूद्रों के उद्धार हेतु कल्याणकारी उपदेश तथा दिगम्बर साधुओं के विहार पर लगा प्रतिबंध सदा के लिये हटा। अनेकों व्यक्तियों ने आपकी वीतराग मुद्रा, सदुपदेश से प्रभावित सदा-सदा के लिये व्यसनों, पापों, कुरीतियों के अनुकरण से तिलांजलि दे दी।

''जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु:'' जिसका जन्म हुआ उसकी मृत्यु निश्चित ही होगी चाहे वो महावीर, राम, कृष्ण, बुद्ध अथवा कोई भी महापुरूष क्यों न हो, लेकिन प्रण/व्रत को छोड़ प्राणों की रक्षा करना दृढ़ संकल्पित महामानव को मंजूर नहीं, और जब आंखों की ज्योति मंद पड़ने लगी, जीव जन्तुओं का समीचीन रक्षण असंभव सा प्रतीत होने लगा तब देशभूषण कुलभूषण मुनियों की निर्वाण स्थली कुंथलगिरी सिद्ध क्षेत्र पर महाव्रतों की निर्दोषता हेतु सल्लेखना व्रत को अंगीकार किया। 17 अगस्त सन् 1955 को यम सल्लेखना रूप प्रतिज्ञा ग्रहण की, तथा सभी खाद्य पदार्थों का त्याग कर मात्र जल शेष रख ''मृत्यु महोत्सव'' की उत्साह पूर्वक तैयारी प्रारम्भ की। देह क्षीण होती चली गयी और आत्मा पुष्ट होती चली गई, समता तो मानो आसमान को ही छू रही हो, निराकुल, परमशांत, आत्म परिणामों के साथ भादों सुदी दूज को प्रात: 6 बजे आत्मा ने ''महाप्रयाण'' कर दिया, नश्वर देह यहीं पड़ी रही और आत्मा स्वर्ग लोक पधार गई।

सत्य ही है जिन्होंने अपने जीवन को संयम सदाचरण रूपी पुष्पों से श्रृंगारित किया, वे ही जीवन के अन्तिम क्षणों का सहर्ष स्वागत करते हैं, और इस जीवन रूपी मंदिर पर कलशारोहण करते हैं। आज महायोगी हमारे बीच नहीं है फिर क्या उनके आदर्श उनकी चर्या हमारी आत्मा को आज भी आंदोलित नहीं करती, सत्पथ पर चलने की प्रेरणा नहीं देती ? अवश्य देती है ! ऐसे महाश्रमण, बालब्रम्हचारी, महातपस्वी, उपसर्ग विजयी, दिगम्बर जैनाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के चरणों में सम्पूर्ण विश्व का बारम्बार कोटिश: नमन नमन नमन ------

एक बूढ़ी गाय की आत्मकथा

श्रीमती रंजना पटोरिया

तुम क्यों इतना हठ कर रही हो मुझसे? मेरे जीवन में ऐसी क्या दिलचस्प बात है, जो मैं तुम्हें सुनाऊँ? पर तुम नहीं मानती तो मुझे अपनी जीवन कथा कहनी ही होगी, सुनो।

मेरा जन्म आज से कई वर्ष पहले एक किसान के घर हुआ था। मैं सुबह शाम अपनी माँ का ताजा दूध पी लिया करती और उसी के साथ जंगल चरने जाया करती थी। माँ का प्यार पाकर मैं मतवाली बन जाती और सारे जंगल को अपनी उछलकूद तथा शरारतों से भर देती। मेरे बालसाथी दूसरे बछड़े थे। इस प्रकार कुछ वर्षों से मैं सयानी हो गई और तब मेरा जीवन भी थोड़ा बदला मेरी माँ अब बूढ़ी हो चुकी थी। अचानक एक दिन वह मर गई। मरते समय माँ ने मुझे किसान की सेवा करने का आदेश दिया। कुछ ही समय बाद मैंने एक सुंदर बछड़े को जन्म दिया। मालिक और मालकिन दोनों ही मुझे चाहते थे, मैं बहुत दूध जो देती थी। मेरा बछड़ा उनके पुत्र के समान था। मेरे दूध से मालिक के यहाँ दही, मक्खन, घी की कमी नहीं रहती थी। मुझे दु:ख सिर्फ इस बात का था कि किसान बछड़े को पर्याप्त दूध पीने नहीं देता था।

धीरे-धीरे मेरे दिन कटते गए। मेरी दो संतानें हैं। दोनों बछड़े बैल के रूप में किसान की सेवा कर रहे हैं। जब मैं बूढ़ी हो गई तब एक दिन किसान ने मुझे दूसरों के हाथ बेच दिया।

वे लोग मुझे कसाईखाने ले आए। वहाँ बहुत सी दूसरी गाएँ व भेड़ बकरियाँ थीं। सबके चेहरे पर मौत की छाया थी। परंतु कुछ भले लोग आए और मुझे व मेरे साथ वाली गायों को खरीदकर ले चले। ये लोग ''गौहत्या विरोधी समिति'' के सदस्य थे। तभी से मैं गौशाला में रहती हूँ। मुझे यह भी पता चला है कि मेरी जाति की रक्षा के लिए बड़े-बड़े आंदोलन किए जा रहे हैं। लेकिन दु:ख की बात यह है कि जो लोग सड़कों पर जितने उत्साह से नारे लगाते हैं वे उतने उत्साह से मेरे सामने चारा नहीं डालते।

इस तरह मेरा जीवन सुखदु:ख की धूप-छाँव से गुजरा है। यह कितने दु:ख की बात है। जिस भारत में गायों को माता का स्थान दिया जाता है। उसी भारत में उसका कत्ल किया जाता है। इस गौशाला से मैं सुखी हूँ और जीवन के आखिरी दिन बिता रही हूँ। तुम्हारी हमदर्दी के लिए धन्यवाद।

कलेक्टर बँगला के सामने
सिविल लाइन, कटनी (म.प्र.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम मार्दव

आचार्य श्री विद्यासागर जी

आज पर्व का दूसरा दिन है। कल उत्तम क्षमा के बारे में आपने सुना, सोचा, समझा और क्षमा भाव धारण किया है। वैसे देखा जाए तो ये सब दस-धर्म एक में ही गर्भित हो जाते हैं। एक के आने से सभी आ जाते हैं। आचार्यों ने सभी को अलग-अलग व्याख्यायित करके हमें किसी न किसी रूप में धर्म धारण करने की प्रेरणा दी है। जैसे रोगी के रोग को दूर करने के लिये विभिन्न प्रकार से चिकित्सा की जाती है। दवा अलग-अलग अनुपात के साथ सेवन करायी जाती है। कभी दवा पिलाते हैं, कभी खिलाते हैं और कभी इंजेक्शन के माध्यम से देते हैं। बाह्य उपचार भी करते हैं। वर्तमान में तो सुना है कि रंगों के माध्यम से भी चिकित्सा पद्धति का विकास किया जा रहा है। कुछ दवाएं सुंघाकर भी इलाज करते हैं। इतना ही नहीं, जब लाभ होता नहीं दिखता तो रोगी के मन को सान्त्वना देने के लिए समझाते हैं कि तुम जल्दी ठीक हो जाओगे। तुम रोगी नहीं हो। तुम तो हमेशा से स्वस्थ हो अजर-अमर हो। रोग आ ही गया है तो चला जायेगा, घबराने की कोई बात नहीं है। ऐसे ही आचार्यों ने अनुग्रह करके विभिन्न धर्मों के माध्यम से आत्म-कल्याण की बात समझायी है।

प्रत्येक धर्म के साथ उत्तम विशेषण भी लगाया है। सामान्य क्षमा या मार्दव धर्म की बात नहीं है, जो लौकिक रूप से सभी धारण कर सकते हैं। बल्कि विशिष्ट क्षमा भाव जो संवर और निर्जरा के लिए कारण है, उसकी बात कही गयी है। जिसमें दिखावा नहीं है, जिसमें किसी सांसारिक ख्याति, पूजा, लाभ की आकांक्षा नहीं है। यही उत्तम विशेषण का महत्त्व है।

दूसरी बात यह है कि क्षमा, मार्दव आदि तो हमारा निजी स्वभाव है, इसलिए भी उत्तम धर्म है। इसके प्रकट हुए बिना हमें मुक्ति नहीं मिल सकती। आज विचार इस बात पर भी करना हे कि जब मार्दव हमारा स्वभाव है तो वह हमारे जीवन में प्रकट क्यों नहीं है? तो विचार करने पर ज्ञात होगा कि जब तक मार्दव धर्म का विपरीत मान विद्यमान है तब तक वह मार्दव धर्म को प्रकट नहीं होने देगा। केवल मृदुता लाओ, ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा किन्तु इसके विपरीत जो मान कषाय है उसे भी हटाना पड़ेगा। जैसे हाथी के ऊपर बंदी का बैठना शोभा नहीं देता, ऐसे ही हमारी आत्मा पर मान का होना शोभा नहीं देता। यह मान कहाँ से आया? यह भी जानना आवश्यक है। जब ऐसा विचार करेंगे तो मालूम पड़ेगा कि अनन्त काल यह जीव के साथ है और इस तरह से जीव का धर्म जैसा बन बैठा है। इससे छुटकारा पाने के दो ही उपाय है या कहो अपने वास्तविक स्वरूप को पाने के दो ही उपाय हैं। एक विधि रूप है तो दूसरा निषेध रूप है। जैसे रोग होने पर कहा जाए कि आरोग्य लाओ, तो आरोग्य तो रोग के अभाव में ही आयेगा। रोग के अभाव का नाम ही आरोग्य है। इसी प्रकार मुदुता को पाना हो तो यह जो कठोरता आकर छिपकर बैठी है उसे हटाना होगा। जानना होगा कि इसके आने का मार्ग कौन सा है, उसे बुलाने वाला और इसकी व्यवस्था करने वाला कौन है? तो आचार्य कहते हैं कि हम ही सब कुछ कर रहे हैं। जैसे अग्नि राख से दबी हो तो अपना प्रभाव नहीं दिखा पाती, ऐसे ही मार्दव धर्म की मालिक यह आत्मा कर्मों से दबी हुई है और अपने स्वभाव को भूलकर कठोरता को अपनाती जा रही है।

विचार करें, कि कठोरता को लाने वाला प्रमुख कौन है? अभी आप सबकी अपेक्षा ले लें। तो संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के पाँचों इन्द्रियों में से कौन सी इन्द्रिय कठोरता लाने का काम करती है? क्या स्पर्शन इन्द्रिय से कठोरता आती है, या रसना इन्द्रिय से आती है, या घ्राण या चक्षु या श्रोत, किस इन्द्रिय से कठोरता आती है? तो काई भी कह देगा कि इन्द्रियों से कठोरता नहीं आती। यह कठोरता मन की उपज है। एक इन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक कोई भी जीव ऐसे अभिमानी नहीं मिलेंगे जैसे कि मन वाले और विशेषकर मनुष्य होते हैं। थोड़ा सा भी वित्त-वैभव बढ़ जाए तो चाल में अन्तर आने लगती है। मनमाना तो यह मन ही है। मन के भीतर से ही माँग पैदा होती है। वैसे मन बहुत कमजोर है, वह इस अपेक्षा से कि उसका कोई अङ्ग नहीं है लेकिन वह अङ्ग-अङ्ग को हिला देता है। विचलित कर देता है। जीवन का ढाँचा परिवर्तित कर देता है और सभी इन्द्रियाँ भी मन की पूर्ति में लगी रहती हैं।

मन सबका नियन्ता बनकर बैठ जाता है। आत्मा भी इसकी चपेट में आ जाती है और अपने स्वभाव को भूल जाती है। तब मुदृता के स्थान पर मान और मद आ जाता है। इन्द्रियों को खुराक मिले या न मिले चल जाता है लेकिन मन को खुराक मिलनी चाहिये। ऐसा यह मन है। और इसे खुराक मिल जाये, इसके अनुकूल काम हो जाए तो यह फूला नहीं समाता और नित नयी माँगें पूरी करवाने में चेतना को लगाये रखता है। जैसे आज कल कोई विद्यार्थी कॉलेज जाता है। प्रथम वर्ष का ही अभी विद्यार्थी है अभी-अभी कॉलेज का मुख देखा है। वह कहता है-पिताजी! हम कल से कॉलेज नहीं जायेंगे। तो पिताजी क्या कहें? सोचने लगते हैं कि अभी एक दिन तो हुआ है और नहीं जाने की बात कहाँ से आ गयी? क्या हो गया? तो विद्यार्थी कहता है कि पिताजी आप नहीं समझेंगे नयी पढ़ाई है। कॉलेज जाने के योग्य सब सामग्री चाहिए। कपड़े अच्छे चाहिए। पॉकेट में पैसे भी चाहिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और यूनिवर्सिटी बहुत दूर है, रास्ता बड़ा चढ़ाव वाला है इसलिए स्कूटर भी चाहिए। उस पर बैठकर जायेंगे इसके बिना पढ़ाई सम्भव नहीं है।

यह कौन करवा रहा है? यह सब मन की ही करामात है। यदि इसके अनुरूप मिल जाए तो ठीक अन्यथा गड़बड़ हो जायेगी। जैसे सारा जीवन ही व्यर्थ हो गया, ऐसा लगने लगता है। कपड़े चाहिए ऐसे कि बिल्कुल टिनोपाल में तले हुए हों हाँ जैसे पूरियाँ तलती है। यह सब मन के भीतर से आया हुआ मान-कषाय का भाव है। सब लोग क्या कहेंगे कि कॉलेज का छात्र होकर ठीक कपड़े पहनकर नहीं आता। एक छात्र ने हमसे पूछा था कि सचमुच ऐसी स्थिति आ जाती है तब हमें क्या करना चाहिए? तो हमने कहा कि ऐसा करो टोपी पहन लेना और धोती पहनकर जाना, वह हँसने लगा। बोला यह तो बड़ा कठिन है। टोपी पहनना तो फिर भी सम्भव है लेकिन धोती वगैरह पहनूँगा तो सब गड़बड़ जो जायेगी। सब से अलग हो जाऊँगा। लोग क्या कहेंगे? हमने कहा कि ऐसा मन में विचार ही क्यों लाते हो कि क्या कहेंगे? अपने को प्रतिभा सम्पन्न होकर पढ़ना है। विद्यार्थी को तो विद्या से ही प्रयोजन होना चाहिये।

आज यही हो रहा है कि व्यक्ति बाहरी चमक-दमक में ऐसा झूम जाता है कि सारी की सारी शक्ति उसी में व्यर्थ ही व्यय होती चली जाती है और वह लक्ष्य से चूक जाता है। यह सब मन का खेल है। मान कषाय है। मान-सम्मान की आकांक्षा काठिन्य लाती है और सबसे पहले मन में कठोरता आती है, फिर बाद में वचनों में तदुपरान्त शरीर में भी कठोरता आने लगती है। इस कठोरता का विस्तार अनादिकाल से इसी तरह हो रहा है और आत्मा अपने मार्दव-धर्म को खोता जा रहा है। इस कठोरता का, मान कषाय का परित्याग करना ही मार्दव धर्म के प्रकटीकरण के लिए अनिवार्य है।

आठ मदों में एक मद ज्ञान का भी है। आचार्यों ने इसी कारण लिख दिया है कि-ज्ञानस्य फलं किं? उपेक्षा, अज्ञाननाशो वा' उपेक्षा भाव आना और अज्ञान का नाश होना ही ज्ञान का फल है। उपेक्षा का अर्थ है रागद्वेष की हानि होना और गुणों का आदान (ग्रहण) होना। यदि ऐसा नहीं होता तो वह ज्ञान कार्यकारी नहीं है। 'ले दिपक कुएँ पड़े' वाली कहावत आती है कि उस दीपक के प्रकाश की क्या उपयोगिता जिसे हाथ में लेकर भी यदि कोई कूप में गिर जाता है। स्व-पर का विवेक होना ही ज्ञान की सार्थकता है। पर को हेय जानकर भी यदि पर के विमोचन का भाव जागृत नहीं होता और ज्ञान का मद आ जाता है कि मैं तो ज्ञानी हूँ तो हमारा यह ज्ञान हमारा एकमात्र बौद्धिक व्यायाम ही कहलायेगा।

ज्ञान का अभिमान व्यर्थ है। ज्ञान का प्रयोजन तो मान की हानि करना है, पर अब तो मान की हानि होने पर मानहानि का कोर्ट में दावा होता है। मार्दव धर्म तो ऐसा है कि जिसमें मानकी हानि होना आवश्यक है। यदि मान की हानि हो जाती है तो मार्दव धर्म प्रकट होने में देर नहीं लगती।

आप शान्तिनाथ भगवान के चरणों में श्रीफल चढ़ाते हैं तो भगवान श्रीफल के रूप में आपसे कोई सम्मान नहीं चाहते न ही हर्षित होते हैं, बल्कि वे तो अपनी वीतराग मुद्रा से उपदेश देते हैं कि जो भी मान कषाय है वह सब यहाँ विसर्जित कर दो। यह जो मन, मान कषाय का स्टोर बना हुआ है, उसे खाली कर दो। जिसका मन, मान कषाय से खाली है वही वास्तविक ज्ञानी है। उसी के लिये केवलज्ञान रूप प्रमाण-ज्ञान की प्राप्ति हुआ करती है। वही तीनों लोकों में सम्मान पाता है।

हम पूछते हैं कि आपको केवलज्ञान चाहिये या मात्र मान-कषाय चाहिये? तो कोई भी कह देगा कि केवलज्ञान चाहिए। लेकिन केवलज्ञान की प्राप्ति तो अपने स्वरूप की ओर, अपने मार्द्रव धर्म की ओर प्रयाण करने से होगी। अभी तो हम स्वरूप से विपरीत की प्राप्ति होने में ही अभिमान कर रहे हैं। वास्तव में देखा जाए तो इन्द्रिय ज्ञान, ज्ञान नहीं है। इन्द्रिय ज्ञान तो पराश्रित ज्ञान है। स्वाश्रित ज्ञान तो आत्म-ज्ञान या केवलज्ञान है। जो इन्द्रिय ज्ञान और इन्द्रिय के विषयों में आसक्त नहीं होता, वह नियम से अतीन्द्रिय ज्ञान को प्राप्त कर लेता है; सर्वज्ञ दशा को प्राप्त कर लेता है।

'मनोरपत्यं पुमान्निति मानवः' कहा गया है कि मनु की संतान मानव है। मनु को अपने यहाँ कुलकर माना गया है। जो मानवों को एक कुल की भाँति एक साथ इकट्ठे रहने का उपदेश देता है, वही कुलकर है। सभी समान भाव से रहें। छोटे-बड़े का भेदभाव न आवे तभी मानव होने की सार्थकता है। अपने मन को वश में करने वाले ही महात्मा माने गये हैं। मन को वश में करने का अर्थ मन को दबाना नहीं है, बल्कि मन को समझाना है। मन को दबाने और समझाने में बड़ा अन्तर है। दबाने से तो मन और अधिक तनाव-ग्रस्त हो जाता है, विक्षिप्त हो जाता है। किन्तु मन को यदि समझाया जाये तो वह शान्त होने लगता है। मन को समझाना, उसे प्रशिक्षित करना, तत्त्व के वास्तविक स्वरूप की ओर ले जाना ही वास्तव में, मन को अपने वश में करना है। जिसका मन संवेग और वैराग्य से भरा है। वही इस संसार से पार हो जाता है। जैसे घोड़े पर लगाम हो तो वह सीधा अपने गन्तव्य पर पहुँच जाता है। ऐसे ही मन पर यदि वैराग्य की लगाम हो तो वह सीधा अपने गन्तव्य मोक्ष तक ले जाने में सहायक होता है।

सभी दश धर्म आपस में इतने जुड़े हुए हैं कि अलग-अलग होकर भी सम्बन्धित हैं। मार्दव धर्म के अभाव में क्षमा धर्म रह पाना संभव नहीं है, और क्षमा धर्म के अभाव में मार्दव धर्म टिकता नहीं है। मान-सम्मान की आकांक्षा पूरी नहीं होने पर ही तो क्रोध उत्पन्न हो जाता है। मुदृता के अभाव में छोटी सी बात से मन को ठेस पहुँच जाती है और मान जागृत हो जाता है। जब मान जागृत हो जाता है तो क्रोध की अग्नि भड़कने में देर नहीं लगती।

द्वीपायान मुनि रत्नत्रय को धारण किये हुए थे। वर्षों की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपस्या साथ थी। उस तपस्या का फल, चाहते तो मीठा भी हो सकता था किन्तु वे द्वारिका को जलाने में निमित्त बन गये। दिव्यध्वनि के माध्यम से जब उन्हें ज्ञात हुआ कि मेरे निमित्त से बारह वर्ष के बाद द्वारिका जलेगी तो यह सोचकर वे द्वारिका से दूर चले गये कि कम से कम बारह वर्ष तक अपने को द्वारिका की ओर जाना ही नहीं है। समय बीतता गया और बारह वर्ष बीत गये होंगे-ऐसा सोचकर वे विहार करते हुए द्वारिका के समीप एक बगीचे में आकर ध्यानमग्न हो गये। वहीं यादव लोग आये और द्वारिका के बाहर फेंकी गई शराब को पानी समझकर पीने लगे। मदिरापान का परिणाम यह हुआ कि यादव लोग नशे में पागल होकर द्वीपायन मुनि को देखकर गालियाँ देने लगे, पत्थर फेंकने लगे। जब बहुत देर तक यह प्रक्रिया चलती रही और द्वीपायन मुनि को सहन नहीं हुआ तो तैजस ऋद्धि के प्रभाव से द्वारिका जलकर राख हो गयी। तन तो सहन कर सकता था लेकिन मन सहन नहीं कर सका और क्रोध जागृत हो गया।

महाराज श्री (आचार्य श्री ज्ञानसागर जी) ने एक बार उदाहरण दिया था। वही आपको सुनाता हूँ। एक गाँव का मुखिया था। सरपंच था। उसी का यह प्रपञ्च है। आप हँसिये मत। उसका प्रपञ्च सबको दिशाबोध देने वाला है। हुआ यह कि एक बार उससे कोई गलती हो गयी और उसे दंड सुनाया गया। समाज गलती सहन नहीं कर सकती ऐसा कह दिया गया और लोगों ने इकट्ठे होकर उसे घर जाकर सारी बात कह दी। घर के भीतर उसने भी स्वीकार कर लिया कि गल्ती हो गयी, मजबूरी थी। पर इतने से काम नहीं चलेगा। लोगों ने कहा कि यही बात मञ्च पर आकर सभी के सामने कहना होगी कि मेरी गलती हो गयी और मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। फिर दण्ड के रूप में एक रुपया देना होगा। एक रुपया कोई मायने नहीं रखता। वह व्यक्ति करोड़ रुपया देने के लिए तैयार हो गया लेकिन कहने लगा कि मञ्च पर आकर क्षमा मांगने तो सम्भव नहीं हो सकेगा। मान खण्डित हो जायेगा। प्रतिष्ठा में बट्टा लग जाएगा। आज तक जो सम्मान मिलता आया है वह चला जायेगा।

सभी संसारी जीवों की यही स्थिति है। पाप हो जाने पर, गलती हो जाने पर कोई अपनी गलती मानने को तैयार नहीं है। असल में भीतर मान कषाय बैठा है वह झुकने नहीं देता। पर हम चाहें तो उसकी शक्ति को कम कर सकते हैं, और चाहें तो अपने परिणामों से उसे संक्रमित (ट्रांसफर्ड) भी कर सकते हैं। उसे अगर पूरी तरह हटाना चाहें तो आचार्य कहते हैं कि एक ही मार्ग हैं-समता भाव का आश्रय लेना होगा। अपने शान्त और मृदु स्वभाव का चिन्तन करना होगा। यही पुरुषार्थ मान-कषाय पर विजय पाने के लिए अनिवार्य है।

आत्मा की शक्ति और कर्म की शक्ति इन दोनों के बीच देखा जाये तो आत्मा अपने पुरुषार्थ के बल से आत्म-स्वरूप के चिन्तन में मान कषाय के उदय में होने वाले परिणामों पर विजय प्राप्त कर सकता है। मान को जी सकता है। इतना संयम तो कषायों की जीतने के लिए आवश्यक ही है। सम्यग्दर्शन तो जीव जन्म से ही लेकर आ सकता है लेकिन मुक्ति पाने के लिये सम्यग्दर्शन के साथ जो विशुद्धि चाहिये वह चारित्र के द्वारा ही आयेगी। वह अपने आप आयेगी, ऐसा भी नहीं समझना चाहिये। आचार्यों ने कहा है कि आठ साल की उम्र होने के उपरान्त कोई चाहे तो सम्यग्दर्शन के साथ चारित्र को अङ्गीकार कर सकता है। लेकिन चारित्र अङ्गीकार करना होगा, तभी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा और मुक्ति मिलेगी। कषायों पर विजय पाने योग्य समता परिणाम चारित्र को अङ्गीकार किये बिना आना/होना संभव नहीं है। आत्म की अनन्त शक्ति भी सम्यक्चारित्र धारण करने पर ही प्रकट होती है।

एक बात और कहूँ कि सभी कषायें परस्पर एक दूसरे के लिए कारण भी बन सकती हैं। जैसे मान को ठेस पहुँचती है तो क्रोध आ जाता है। मायाचारी आ जाती है। अपने मान की सुरक्षा का लोभ भी आ जाता है। एक समय की बात है कि एक व्यक्ति एक सन्त के पास पहुँचा। उसने सुन रक्खा था कि सन्त बहुत पहुँचे हुए हैं। उसने पहुँचते ही पहले उन्हें प्रणाम किया और विनयपूर्वक बैठ गया। चर्चा वार्तालाप के बाद उसने कहा कि आप हमारे यहाँ कल आतिथ्य स्वीकार करिये। अपने यहाँ हम आपको कल के भोजन के लिय निमन्त्रित करते हैं। सन्त जी निमन्त्रण पाने वाले रहे होंगे, इसलिए निमन्त्रण मान लिया। देखा निमन्त्रण 'मान' लिया, इसमें भी 'मान' लगा है।

दूसरे दिन ठीक समय पर वह व्यक्ति आदर के साथ उन्हें घर ले गया, अच्छा आतिथ्य हुआ। मान-सम्मान भी दिया। अन्त में जब सन्त जी लौटने लगे तो उस व्यक्ति ने पूछ लिया कि आपका शुभ नाम मालूम नहीं पड़ सका। आपका शुभ नाम मालूम पड़ जाता तो बड़ी कृपा होती। सन्त जी ने बड़े उत्साह से बताया कि हमारा नाम शान्तिप्रसाद है। वह व्यक्ति बोला बहुत अच्छा नाम है। मैं तो सुनकर धन्य हो गया, आज मानों शान्ति मिल गयी। वह उनको भेजने कुछ दूर दस बीस कदम साथ गया उसने फिर से पूछा लिया कि क्षमा कीजिये, मेरी स्मरण शक्ति कमजारे है। मैं भूल गया कि आपने क्या नाम बताया था? सन्त जी ने उसकी ओर गौर से देखा और कहा कि शान्तिप्रसाद, अभी तो मैंने बताया था। वह व्यक्ति बोला हाँ ठीक-ठीक ध्यान आ गया आपका नाम शान्तिप्रसाद है। अभी जरा दूर और पहुँचे थे कि पुनः व्यक्ति बोला कि क्या करूँ? कैसे मेरा कर्म का तीव्र उदय है कि मैं भूल-भूल जाता हूँ। आपने क्या नाम बताया था? अब की बार सन्त जी ने घूरकर उसे देखा और बोले शान्तिप्रसाद, शान्तिप्रसाद-मैंने कहा ना। वह व्यक्ति चुप हो गया और आश्रय पहुँचते-पहुँचते जब उसने तीसरी बार कहा कि एक बार और बता दीजिये आपका शुभ नाम। उसे तो जितनी बार सुना जाय उतना ही अच्छा है। अब सन्त जी की स्थिति बिगड़ गयी, गुस्से में आ गये। बोले क्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहता है तू। कितनी बार तुझे बताया कि शान्तिप्रसाद, शान्तिप्रसाद। वह व्यक्ति मन ही मन मुस्कराया और बोला, मालूम पड़ गया है कि नाम आपका शान्तिप्रसाद है पर आप तो ज्वालाप्रसाद हैं। अपने मान को अभी जीत नहीं पाया, क्योंकि मान को जरा सी ठेस लगी और क्रोध की ज्वाला भड़क उठी।

बंधुओं! ध्यान रखो जो मान को जीतने का पुरुषार्थ करता है वही मार्दव धर्म को अपने भीतर प्रकट करने में समर्थ होता है। पुरुषार्थ यही है कि ऐसी परिस्थिति आने पर हम यह सोचकर चुप रह जायें कि यह अज्ञानी है। मुझसे हँसी कर रहा है से या फिर सम्भव है कि मेरी सहनशीलता की परीक्षा कर रहा है। उसके साथ तो हमारा व्यवहार, माध्यस्थ भाव धारण करने का होना चाहिये। कोई वचन व्यवहार अनिवार्य नहीं है। जो विनयवान हो, ग्रहण करने की योग्यता रखता हो, हमारी बात समझने की पात्रता जिसमें हो, उससे ही वचन व्यवहार करना चाहिये। ऐसा आचार्यों ने कहा है। अन्यथा 'मौनं सर्वत्र साधनम्'-मौन सर्वत्र/सदैव अच्छा साधन है।

द्वीपायन मुनि के साथ यही हुआ कि वे मौन नहीं रह पाये, और यादव लोग भी शराब के नशे में आकर मौन धारण नहीं कर सके। 'मदिरापानादिभिः मनसः पराभवो दृश्यते' मंदिरापान से मन का पराभव होते देखा जाता है। पराभव से तात्पर्य है पतन की ओर चले जाना। अपने सही स्वभाव को भूलकर गलत रास्ते पर मुड़ जाना। गाली के शब्द तो किसी के कानों में पड़ सकते हैं लेकिन ठेस सभी को नहीं पहुँचती। ठेस तो उसी के मन को पहुँचती है जिसे लक्ष्य करके गाली दी जा रही है। या जो ऐसा समझ लेता है कि गाली मुझे दी जा रही है। मेरा अपमान किया जा रहा है।

द्वीपायन मुनि को भीतर तो यही श्रद्धान था कि मैं मुनि हूँ। मेरा वैभव समयसार है। समता परिणाम ही मेरी निधि है। मार्दव मेरा धर्म है। मैं मानी नहीं हूँ, लोभी नहीं हूँ। मेरा यह स्वभाव नहीं है। रत्नत्रय धर्म उनके पास था, उसी के फलस्वरूप तो उन्हें ऋद्धि प्राप्त हुई थी। लेकिन मन में पर्याय बुद्धि जागृत हो गयी कि गाली मुझे दी जा रही है। आचार्य कहते हैं कि 'पज्जयमूढ़ा हि परसमया' जो पर्याय में मुग्ध है, मूढ़ है वह पर-समय है। पर्याय का ज्ञान होना बाधक नहीं है परन्तु पर्याय में मूढ़ता आ जाना बाधक है। पर्याय बुद्धि ही मान को पैदा करने वाली है। पर्याय बुद्धि के कारण उनके मन में आ गया कि ये मेरे ऊपर पत्थर बरसा रहें हैं, मुझे गाली दी जा रही है और उपयोग की धारा बदल गयी। उपयोग में उपयोग को स्थिर करना था, पर स्थिर नहीं रख पाये। उपयोग आत्म-स्वभाव के चिन्तन से हटकर बाहर पर्याय में लग गया और मान जागृत हो गया।

जो अपने आप में स्थित है, स्वस्थ है उसे मान-अपमान सब बराबर हैं। उसे कोई गाली भी दे तो वह सोचता है कि अच्छा हुआ अपनी परख करने का अवसर मिल गया। मालूम पड़ जायेगा कि कितना मान कषाय अभी भीतर शेष है। यदि ठेस नहीं पहुँचती तो समझना कि उपयोग, उपयोग में है। ज्ञानी की यही पहचान है कि वह अपने स्वभाव में अविचल रहता है। यह विचार करता है कि दूसरे के निमित्त से मैं अपने परिणाम क्यों बिगाड़ूँ? अगर अपने परिणाम बिगाडूंगा तो मेरा ही अहित होगा। कषाय दुःख की कारण है। पाप-भाव दुःख ही है। आचार्य उमास्वामी ने कहा है 'दुःखमेव वा' आनन्द तो तब है कि जब दुःख भी मेवा हो जाये। सुख और दुःख दोनों में साम्य भाव आ जाये।

मान कषाय का विमोचन करके ही हम अपने सही स्वास्थ्य का अनुभव कर सकते हैं, साम्य भाव ला सकते हैं। जैसे दूध उबल रहा है अब उसको अधिक नहीं तपाना है तब या तो उसे सिगड़ी से नीचे उतार कर रख दिया जाता है या फिर अग्नि को कम कर देते हैं। तब अपने आप वह धीरे-धीरे अपने स्वभाव में आ जाता है, स्वस्थ हो जाता है अर्थात् शान्त हो जाता है और पीने योग्य हो जाता है। ऐसे ही मान कषाय के उबाल से अपने को बचाकर हम अपने स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं। मान का उबाल शान्त होने पर ही मार्दव धर्म प्राप्त होता है। मान को अपने से अलग कर दें या कि अपने को ही मान कषाय से अलग कर लें, तभी मार्दव धर्म प्रकट होगा।

अन्त में इतना ही ध्यान रखिये कि अपने को शान्तिप्रसाद जैसा नहीं करना है। हाँ, यदि कोई गाली दे, कोई प्रतिकूल वातावरण उपस्थित करे तो अपने को शान्तिनाथ भगवान को नहीं भूलना है। अपने परिणामों को संभालना अपने आत्म परिणामों की सँभाल करना ही धर्म है। यही करने योग्य कार्य है। जिन्होंने इस योग्य कार्य को सम्पन्न कर लिया वे ही कृतकृत्य कहलाते हैं। वही सिद्ध परमेष्ठी कहलाते हैं, जिनकी मुदृता को अब कोई खण्डित नहीं कर सकता। हम भी मुदृता के पिण्ड बनें और जीवन को सार्थक करें।

'समग्र' से साभार

सुभाषित

- **जीवन निश्चित ही संघर्षमय है, लेकिन साधक उसे हर्षमय होकर अपनाता है।**
- **साहस, धैर्य, सहिष्णुता नहीं होने के कारण ही चित्त विक्षिप्त सा होता है और चित्त का चंचल होना साधक की सबसे बड़ी कमजोरी है।**

आचार्यश्री विद्यासागर 'सागर बूँद समाय' से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्वराज पर्युषण: विचार के वातायन से

मुनि श्री समता सागर जी

पर्वराज पर्युषण का पुन: आगमन हो रहा है। यह पर्व ही नहीं पर्वराज माना गया है। पर्युषण का अर्थ है सब ओर से इन्द्रिय और मन की असंयत प्रवृत्ति को रोककर आत्मा के बारे में चिन्तन मनन करना। इस पर्युषण का ही दूसरा नाम दशलक्षण पर्व है। लक्षण से किसी वस्तु को जाना पहचाना जाता है। जिन बातों से हम अपनी आत्मा को जान पहचान सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं वह है दशलक्षण। इन दशलक्षणों से आत्मा के विशुद्ध धर्ममय होने की जानकारी मिलती है। यहाँ इस बात को भी समझना जरूरी है कि यह दशलक्षण विभिन्न धर्म नहीं है बल्कि धर्म के दश अंग ही हैं। अर्थात् पृथक्-पृथक् सत्ता में नहीं किन्तु इनका सम्मिलित आचार-बोध ही धर्म है। इसे इस तरह से समझना चाहिये कि धर्म एक सुवासित पुष्प है और दशलक्षण उसकी पांखुरी है। धर्म एक हार है और दशलक्षण उसकी मणियाँ, या धर्म एक सागर है और दशलक्षण उसकी लहरें। अत: कुछ भिन्न दिखाई देते हुए भी यह सब मूलत: अभिन्न ही है। यदि सोंचें कि धर्म के दश ही लक्षण क्यों हैं? तो इसका अभिप्राय में इतना ही समझता हूँ कि सुना गया है कि रावण दशमुखी था, (यथार्थ में वह एकमुखी ही था, उसके हार में दशमुख दिखाई देते थे) तो लगा कि जब रावण अर्थात् अनीति और अधर्म के दशमुख हो सकते हैं तो नीति और धर्मरूप राम के दशमुख क्यों नहीं हो सकते। पर्युषण के यह दशमुख न्याय, नीति और धर्मरूप आतमराम के ही दशलक्षण हैं।

पर्युषण के इन दिनों को पर्व कहा गया है। पर्व का अर्थ अवसर, सन्धि, पोर या किसी से जोड़ने वाला बिन्दु, यह सब पर्व के ही पर्यायवाची माने गये हैं। जिन क्षणों में जीवन जीने के लिये नया प्रकाश मिलता है, परमात्मा के प्रति प्रेम प्रीति का भाव जन्मता है। नया आनन्द उल्लास उमंग का वातावरण बनता है। पुरानी दिनचर्या बदलती है। खानपान और विचारों में परिवर्तन का क्रम शुरु हो जाता है और मन सद्विचारों से भरकर तन का साथ देने लगता है, बैर विरोध विसम्बाद से हटकर वात्सल्य मैत्री और सौहार्द की अभिवृद्धि होती है वह है दशलक्षण पर्व। सच बात तो यह है कि पर्व हमारी उदास टूटी हुई जिंदगी को उत्सव से जोड़कर चला जाता है। यह दशलक्षण पर्व प्रतिवर्ष माघ, चैत्र और भाद्रमास के शुक्लपक्ष की पंचमी से चतुर्दशी तक तीन बार आता है किन्तु भाद्रमास की विशेषता ही कुछ अलग है। सुहावना मौसम, वर्षा ऋतु का आगमन, समशीतोष्ण प्रकृति, तथा व्यवसाय की मंदता आदि कारणों से सारे देश में भाद्रमास का ही यह पर्व विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य और ब्रह्मचर्य रूप इन दशलक्षणों में क्षमा को प्रथम स्थान दिया गया है। जिसका कारण है कि क्षमा का भाव ही संपूर्ण धर्म-साधना की मनोभूमि प्रदान करता है। इसके आने पर ही मृदुता आदि शेष धर्मों की बात आती है। क्षमा से प्रारंभ हुई यह धर्म-यात्रा आत्मरमण रूप ब्रह्मचर्य में परिणत हो जाती है। तथा अन्त में सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन कर पर्व का समापन कर दिया जाता है। किसी को माफ कर देना या किसी से माफी माँग लेने मात्र का नाम क्षमा नहीं है क्योंकि यह कार्य तो बहुत ऊपरी औपचारिक भी हो सकता है पर इस धर्म का अर्थ तो सहनशीलता सहिष्णुता से है। प्रतिकूल परिस्थितियों के उपस्थित होने पर भी क्षमा, समता का भाव धारण करना क्षमा धर्म है। मार्दव धर्म मृदुता का प्रतीक है। धन, पद, ज्ञान, बल, वैभव आदि को पाकर भी अहंकार नहीं करना तथा विनम्रता का व्यवहार करना मार्दव धर्म है। जो मन में है वही वाणी और कर्म में निष्कपट भाव से आचरित हो, इसी भीतर बाहर की एक जैसी परिणति को आर्जव धर्म कहा है। शौच पवित्रता का प्रतीक है, जिसमें शारीरिक शुद्धि के साथ-साथ संतोष रूप जल से लोभ कषाय की निवृत्ति कर आत्मशुद्धि की जाती है। पाँचवा धर्म सत्य का है, जिसमें परम सत्य को पाने के लिये हित मित प्रिय वचनों का व्यवहार किया जाता है। संयम के धर्म में मन और इन्द्रियों के विषयों से विरत आत्म-नियंत्रण की शिक्षा ली जाती है। प्राणि रक्षा वाली परम अहिंसक चर्या इस धर्म में अपनाना पड़ती है। तप का धर्म आत्मशोधन के लिये परम रसायन है। तपकर जैसे स्वर्ण शुद्ध हो जाता है वैसे ही कर्म कालिमा हटने से आत्मा निर्मल हो जाती है। अंतरंग और बहिरंग के भेद से 12 प्रकार के तप मुक्ति के साधन माने गये हैं। त्याग प्रकृति प्रदत्त नैसर्गिक प्रक्रिया है। वृक्ष में पत्ते आते हैं, फल लगते हैं और झर जाते हैं। प्राणी जो श्वांस लेता है उसे छोड़ना ही पड़ता है। राग के वशीभूत किये गये संचित द्रव्य का चतुर्विध दान में लगाना त्याग धर्म है। इसके बाद आने वाला आकिञ्चन्य धर्म हमें एकदम निर्विकल्प रखना चाहता है। मैं, मेरा और तु, तेरा की सूक्ष्म विकल्पधारा से भी इसमें मुक्त होना पड़ता है क्योंकि त्याग के बाद भी मन की यह विकल्पधारा आत्मशीलन में बाधक बनती है। इस धर्म के आते ही परमब्रह्म में रमण की स्थिति आती है। देह के अशुचि स्वभाव को समझते हुये विषय वासना विरक्त आत्मरमणता का नाम ही ब्रह्मचर्य है।

प्रकृति भी हमें दशलक्षण वाले नैसर्गिक जीवन को अपनाने का संदेश देती है। बीज से वृक्ष तक की यात्रा में यह धर्म का जीवन अवतरित होते दिखता है। क्षमाशीला मूक सहिष्णु माँ धरती की गोद में जब विनम्रता का बीज गिरता है, अपने कठोर कवच को गला कर खुद को मिटाकर माटी में मिलता है तब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फूटने वाले सीधे सरल अंकुर स्वच्छता के गीत गाते आगे बढ़ते हैं। सत्य के असीम आकाश का अनुभव पाने वाले उन पौधों को जीवन रक्षा हेतु संयम का बंधन डालना ही पड़ता है। सूरज के प्रखर तप में तपे परिपक्व फलों का जब दान होता है तब त्याग की मूर्ति बना वह वृक्ष आकिञ्चन्य अकेला खड़ा हुआ उस योगी सा प्रतीत होता है जो स्थित प्रज्ञ परमब्रह्म में तल्लीन हो गया है। बीज से वृक्ष तक की इस जीवन यात्रा में हमें जो बोध मिला है मैं समझता हूँ कि वह अपने आत्मधर्म का समूचा सार संदेश है। क्षमा से ब्रम्होपलब्धि तक का यह ऊर्ध्वारोही उपक्रम हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा का पूर्ण प्रगटीकरण है। ऐसे इस पर्वराज पर्युषण को सिर्फ पारम्परिक पर्व ही नहीं मानना चाहिए। इसे एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला भी कहा जा सकता है जिसमें हम स्वयं पर रिसर्च करते हैं, स्वयं का अन्वेषण, स्वयं की खोज करते हैं। यही एक ऐसा अवसर है जिसमें हम दशधर्म के रसायन से आत्म-तत्त्व का शोधन करते हैं इसलिये इन पर्वों से हम औपचारिक नहीं किन्तु वास्तविकता से जुड़े। पर्व से जुड़े हुये आयोजनों के प्रयोजन को भी यदि हम आत्मसात करें तो अंदर कुछ नुतन, कुछ नया अतिशय आनन्द घटित हो सकता है।

फिरोजाबाद में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना

फिरोजाबाद में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री समतासागर जी तथा मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज एवं ऐलक श्री निश्चयसागर जी का पावन वर्षायोग स्थानीय महावीर बाहुबली जिनालय प्रांगण में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना के साथ हो रहा है। महाराज श्री का ससंघ मंगल प्रवेश 13 जुलाई को प्रात: काल हुआ। 14 जुलाई को आचार्य श्री विद्यासागर जी का 34वाँ दीक्षा दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया, जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने आकर भाग लिया, शोभायात्रा तथा विनयांजलि एवं संस्मरण सुनाने की श्रृंखला प्रात: तथा मध्याह्न दोनों बार काफी देर तक चली। मुनिद्वय तथा ऐलक जी ने अपने गुरु के प्रति आभार भक्ति प्रदर्शित करते हुये रोचक संस्मरण सुनाये। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी, श्री अनूपचंद एडवोकेट, डॉ. विमला जैन तथा बैनाड़ा बन्धु (आगरा),सेठ समाई लाल कन्नौज तथा टीकमगढ़, मैनपुरी आदि के अनेक विद्वान तथा गणमान्य श्रेष्ठी पधारे थे।

24 जुलाई को मध्याह्न काल में साधु संघ का वर्षायोग स्थापना कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास तथा धूमधाम से हुआ। बाहर से काफी गणमान्य श्रेष्ठी तथा विद्वान अनुमोदना हेतु पधारे। 25 जुलाई को वीरशासन जयंती का कार्यक्रम भी बड़ी धूमधाम से हुआ। मुनिश्री ने सारगर्भित प्रवचन दिये। अन्यान्य विद्वानों ने भी श्रावण प्रतिपदा वीर देशना के महत्व पर प्रकाश डाला। छदामी लाल जैन, श्री महावीर जिनालय में मुनि संघ विराजमान है, प्रतिदिन प्रात: 7.45 से 9 बजे तक मुनिश्री के प्रवचन होते हैं, जिसमें जैन-जैनेतरों की अपार भीड़ रहती है। रविवार को विशेष प्रवचन विभिन्न स्थानों पर बदल-बदल कर दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक होते हैं, जिसमें क्रमश: तीनों महाराज बड़ा ही प्रभावोत्पादक प्रवचन देते हैं। मुनि श्री समतासागर तथा मुनि श्री प्रमाणसागर व ऐलक श्री बड़े ही श्रुत मर्मज्ञ विद्वान हैं। आगम के संदर्भ में आधुनिक विज्ञान तथा व्यावहारिक पक्ष को जोड़कर इस प्रकार ढाल देते हैं कि अबालवृद्ध तथा विद्वान, सभी श्रोताओं के हृदय में बिठा देते हैं। प्रतिदिन 3 से 4 बजे तक सर्वार्थ सिद्धि तथा 4 से 5 बजे तक रत्नकरण्ड श्रावकाचार का अध्यापन भी चल रहा है (रविवार को छोड़कर)। फिरोजाबाद का समाज बड़ा ही भाग्यशाली है। यहाँ आचार्य श्री महावीर कीर्ति, मुनि श्री विद्यानंद, आचार्य श्री विद्यासागर जी, आचार्य श्री विमलसागर ससंघ, आचार्य श्री सन्मतिसागर (अंकलीकर) ससंघ, मुनि श्री अमितसागर जी ससंघ, मुनि श्री निर्णयसागर जी आदि महान संतों का चातुर्मास हुआ है। आचार्य श्री विद्यासागर जी का 1975 में इसी महावीर जिनालय में चातुर्मास हुआ था। आज उन्हीं के परम शिष्यों ने धूम मचा रखी है।

डॉ. विमला जैन
फिरोजाबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तमक्षमा धर्म

न अहं, न शर्म; भूल से परे क्षमा धर्म

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

"क्षमा वीरस्य भूषणम्" अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है इसे कहना सरल है, किन्तु जीवन में उतारना बहुत कठिन है। मनुष्य भूल करे और उसका परिमार्जन करले, भूल बड़ी है तो प्रायश्चित करले और अपने मूल स्वभाव में वापिस आ जाये तो उसे वीर कहलाने से कोई कैसे रोक सकता है। यह वीरता माँगने से नहीं आती, छीनने से नहीं मिलती, खरीदने पर प्राप्त नहीं होती बल्कि इसे गुणग्रहण के भावपूर्वक हृदय में धारण करना पड़ता है। सामान्यतया कहा जाता है कि क्रोधकषाय के अभाव का नाम क्षमा है, किन्तु यह निषेधात्मक होने से उत्तम क्षमा की कोटि में नहीं आती। जब क्षमा हृदय में स्थापित हो और क्रोधोत्पत्ति के अनेकानेक प्रसंग उपस्थित हो जायें फिर भी व्यक्ति क्षमाशील बना रहे तो क्षमा धर्म प्रभावी होता है। जैनाचार्य कहते हैं कि-

कोहणे जो ण तपादि, सुर-णर-तिरिएहि किरमाणे वि।
उपसग्गे वि रउद्दे तस्य खमाणिम्मला होदि॥

अर्थात् देव, मनुष्य और तिर्यञ्चों (पशुओं) के द्वारा घोर व भयानक उपसर्ग पहुँचाने पर भी जो क्रोध से संतप्त नहीं होता, उसके निर्मल (पवित्र) क्षमा धर्म होता है। क्षमाभाव से चित्तवृत्ति हिंसा से दूर होती है, वैरभाव से दूर होती है, प्राणीमात्र के प्रति मित्रता एवं दया के भाव जन्म लेते हैं, करुणा की अविरल धारा दीन दुःखी जनों पर अमृत वर्षा का सिंचन कर पुष्ट बनाती है, बैर के स्थान पर निर्बैर और निर्वेद का स्वर चहुँओर गुंजायमान होने लगता है। अपमान के प्रसंग किसके जीवन में नहीं आते और मान किसका खण्डित नहीं होता? क्रोध को शान्त किये बिना कौन सुखी हो पाता है? हिंसा की संस्कृति से कौन सा परिवार, समाज और राष्ट्र प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है? जीवन की बगिया में फूल महकते हैं तो मुरझाते भी हैं। जो मुरझाते हैं उनका दुःख न मनाकर नये फूल उगाने की चेष्टा ही सार्थक होती है। मानवीय भूलों की सहजता पर नेपाली भाषा के प्रमुख कवि श्री विक्रमवीर थापा ने लिखा है कि -

बिना वेदना की भी क्या जिन्दगी कहें
जहाँ तीक्ष्ण शूल न हो।
उस आदमी को भी क्या आदमी कहें
जिसकी जिन्दगी में भूल न हो॥

क्षमा मानव का स्वभाव है, यह क्रोध कषाय के अभाव में होती है। उत्तम शब्द जोड़ने से तात्पर्य सम्यग्दर्शन सहित जानना चाहिये, क्योंकि सम्यग्दर्शन के बिना धर्म नहीं होता है। किसी भी प्रकार के कटुक वचन कहे जाने पर, अनादरित होने पर, शरीर का घात किए जाने पर भी भावों में मलिनता न आना ही उत्तम क्षमा है। क्षमावान् व्यक्ति के मन में हमेशा यही भावना रहनी चाहिए कि-

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु वैरं मज्झं ण केण वि ॥

अर्थात् मैं सब जीवों पर क्षमा करता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा करें। मेरी सभी से मित्रता है, मेरी किसी से भी शत्रुता नहीं है। दशलक्षण धर्म पूजन में कविवर द्यानतराय जी ने कहा है कि- "उत्तम क्षमा जहाँ मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई।" शत्रुता से रहित सुखी जीवन की लालसा किसे नहीं है, किन्तु सब क्रोध को क्रोध से जीतना चाहते हैं, हिंसा को हिंसा से पाटना चाहते हैं, वैर को वैर से काटना चाहते है; जो त्रिकाल में संभव नहीं है। क्षमा एक अनोखा धर्म है जो मर्म पर पहुँचकर संसार एवं संसार से पार शान्ति का पथ प्रशस्त करता है। क्षमा की महत्ता अप्रतिम है। नीतिकार कहते हैं कि-

पुष्प कोटि समं स्तोत्रं, स्तोत्र कोटि समं जपः।
जपकोटि समं ध्यानं, ध्यान कोटि समं क्षमा॥

अर्थात् करोड़ों पुष्पों की कोमलता के समान स्तोत्र होता है। भगवान के करोड़ों स्तोत्रों के समान जप है। करोड़ों जप के समान ध्यान है और करोड़ों ध्यान के समान क्षमा है। तात्पर्य है कि एक क्षमा के होने पर करोड़ों स्तोत्र, जप एवं ध्यान करने की आवश्यकता नहीं; किंतु एक क्षमा के नहीं होने पर करोड़ों जप, तप, ध्यान निरर्थक हैं। संसार के सभी महापुरुषों ने वैभाविक परिणति कराने वाले क्रोध को छोड़कर शीतलता दायक क्षमा को अंगीकार किया तभी वे महापुरुष बन सके। गजकुमार मुनि को ससुर के द्वारा सिर पर गीली मिट्टी की बाड़ लगाकर जलते अंगारे भरकर जला दिया गया किन्तु वे समता भाव में स्थित रहे। उनके लिए आत्म वैभव ही सबकुछ था, वे शरीर के प्रति निष्ठुर एवं निर्ममत्व बने रहे। पाँचों पाण्डव तप्त लौह आभूषणों को पहनाये जाने पर शरीर को जलता हुआ देखते रहे, किन्तु परम शक्तिमान होने पर भी बदला लेने का विचार नहीं किया और सद्गति पायी। राम सीता का हरण करने पर भी रावण के प्रति निर्बैर बने रहे तथा मर्यादित जीवन जीते रहे। ये प्रसंग जीवन के ऐसे सुखद प्रसंग हैं जो परम सुख का पथ प्रशस्त करते हैं।

क्षमा की साकार मूर्ति दिगम्बर संत होते हैं जो न राग करने वाले पर राग करते हैं और न द्वेष करने वाले पर द्वेष। वे तो वीतरागता के पथिक एवं वीतरागता के उपासक होते हैं। जिसने संसार को क्षमा कर क्षमा का संसार रच लिया है, संसार के बैरी क्रोध को जीत लिया है, जिसने सभी जीवों को अपना मित्र बना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिया है, जिसका मन परोपकार में लगा हुआ है, जिसे सताना नहीं आता, जिसे स्वभाव में रमने की कला आ गयी है, ऐसा साधक क्षमाशील होता है और परम अहिंसा धर्म का पालन करता है।

घृणा का कोई संसार नहीं होता, बल्कि संसार से घृणा मिटे; यह महापुरुष की भावना होती है। क्रोध एक नशे की तरह है जो विवेक को मारता है,संयम के बाँध को तोड़ता है, कुकर्म से जोड़ता है, शरीर को तप्त करता है, प्रकृति से दूर ले जाता है, नरक गति में ले जाता है, अत: क्रोध त्याज्य ही है।

शान्त व्यक्ति ही साधना का अधिकारी होता है। कर्मरूपी मैल का क्षय किये बिना आत्मिक गुणों की आराधाना संभव नहीं है। जिनाज्ञा है कि-

जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा।
जो न उवसमइ तस्स णत्थि आराहणा॥

अर्थात् जो उपशान्त होता है उसकी आराधना सफल होती है, जो उपशान्त नहीं होता है उसकी आराधना ठीक नहीं है। उपशान्त का तात्पर्य उप = समीप, शान्त = शान्ति। अत: जो शान्ति के समीप है वह उपशान्त है। शान्ति का आधार आत्मा है शरीर नहीं अत: आत्मा की निकटता आवश्यक है। जो आत्मा के निकट है, क्षमा उसका निजभाव है, अत: क्षमा के बिना शान्ति की कल्पना या शान्ति की कामना ही निरर्थक है। यह क्षमा कर्मक्षय से आती है।

भर्तृहरि कहते हैं कि "भज क्षमां" अर्थात् क्षमा की भक्ति करो। बिना क्षमा की भक्ति के आत्मविरोधी क्रोध- रिपु पर विजय प्राप्त नहीं हो सकती अत: हमारे जीवन में क्षमा आये तथा हम पृथ्वी सदृश क्षमा को धारण कर सकें तभी हम वीर हैं, तभी हम महावीर हैं।

धर्मात्मा होने का सबसे बड़ा प्रमाण क्षमाशील होना है। श्रीराम ने रावण से कहा कि "तुम मेरी सीता मुझे वापिस कर दो। मेरा तुमसे कोई बैर नहीं है।" श्री दत्त मुनि व्यन्तरदेव कृत उपसर्ग को जीतकर केवल ज्ञानी हुए। चिलाती पुत्र मुनि व्यन्तरदेव कृत उपसर्ग जीतकर सर्वार्थसिद्धि को प्राप्त हुए। कार्तिकेय मुनि क्रोंच राजा के प्रकोप को सहकर देव हुए। गुरुदत्त मुनि ने कपिल ब्राह्मण के उपसर्ग को क्षमा से जीता और मोक्ष प्राप्त किया। श्री धन्यमुनि चक्रराजकृत उपसर्ग से विचलित नहीं हुए और केवलज्ञान प्राप्त किया। पाँचों पाण्डवों ने अग्नि में तप्त आभूषण पहनाये जाने पर भी उफ तक नहीं की। पाँच सौ मुनि दण्डक राजा के उपसर्ग से व्यथित नहीं हुए और सिद्ध हुए। भगवान पार्श्वनाथ पर कमठ ने घोर उपसर्ग किया और पत्थरों की वर्षा की, पानी बरसाया भगवान ने अन्त तक क्षमा को धारण किया। कमठ का क्रोध पार्श्व की क्षमा के आगे नतमस्तक हो गया। कहा भी है-

समता सुधा का पान करके जो सदा नि:शंक हैं,
शोकार्त्त न करता उन्हें प्रतिकूल कोई प्रसंग है।
कमठ ने उपसर्ग ढाया था सताने के लिए,
पार्श्व को कारण बना वह मुक्ति पाने के लिए॥

राजकुमार मुनि पर पांशुलश्रेष्ठी का उपसर्ग, चाणक्य आदि पाँच सौ मुनियों पर मंत्री द्वारा किया गया उपसर्ग, सुकुमालमुनि को स्यालिनी द्वारा खाया जाना, सुकौशल मुनि का व्याघ्र द्वारा खाया जाना,पणिक मुनि का जल का उपसर्ग सहकर मोक्ष जाना, श्रेणिक द्वारा यशोधर मुनि के गले में मृत सर्प डालना और मुनि को चींटियों द्वारा काटे जाने पर भी उफ तक न करना क्षमा शीलता के ऐसे विलक्षण उदाहरण हैं जिन्हें जानने-सुनने पर अपने क्रोधियों पर ही क्रोध आने लगता है। स्वयं के अपकृत्यों पर घृणा होने लगती है और स्वयं से प्यार होने लगता है। ऐसी क्षमा हमारे हृदय में आ जाये; यह प्रयत्न हम सब करें।

कुछ लोग क्षमा को आदान-प्रदान का भाव मानते हैं जबकि इसका विनिमय संभव नहीं है। इसे तो धारण किया जा सकता है, किया जाता है। कुछ लोग क्षमा माँगने के लिए दबाव डालते हैं, शक्ति का भय दिखाते हैं, लोक-लाज के नाम पर याचना भी करते हैं। यह सब निरर्थक परिश्रम है क्योंकि जब तक क्षमा का विचार स्वयं ही उत्तरदायी व्यक्ति के मन में जन्म नहीं लेता तब तक क्षमा याचना या क्षमा करने का भाव ही उत्पन्न नहीं होता। नीति कहती है कि-

"क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात।" "क्षमा वीरस्य भूषणम्" भी इसलिए कहा है। छोटे आदमी की क्षमा क्षमा कम याचना अधिक है। भय या प्रीति क्षमा के कारक नहीं हैं। शक्तिमान की क्षमा या उच्च पदासीन व्यक्ति की क्षमा सामाजिक मूल्यों एवं सौहार्द की सृष्टि करती है, अत: क्षमा याचना के द्वारा भी की जाय वह श्लाघनीय (प्रशंसनीय) एवं आदरणीय ही है। क्षमा के लिए समय एवं अवसर की प्रतीक्षा जरूरी नहीं है। मानव समाज दण्डनीय कृत्य के लिए दण्ड की वकालत करता है, उसे उचित मानता है, प्रताड़ित करता है वह पापास्रव कर रहा है अत: वह दया का पात्र तो है ही। क्षमा माँग लेना भूल का अन्त करना है, भविष्य के लिए प्रायश्चित है। क्षमायाचना के साथ ही अन्त:करण की शुद्धि हो जाती है। इतने पर भी यदि कोई क्षमायाचना को ठुकराता है तो उसे पापात्मा समझकर क्षमा कर देना चाहिए। क्षमायाचना स्व के प्रयोजन की सिद्धि (स्वार्थपूर्ति) के लिए है; लेकिन यह स्वार्थ आध्यात्मिक अर्थों वाला है। इससे जीवन में नकारात्मकता के स्थान पर सकारात्मकता, निष्क्रियता के स्थान पर सक्रियता और क्षोभ के स्थान पर क्षेम की सृष्टि होती है। क्षमा देने वाले से भी अधिक निर्मल भावों के लिए अन्तर्द्वन्द्व क्षमायाचक के मन में चलता है। पश्चाताप की भावना, उदारता, करुणाशीलता, अहिंसा आदि निज परिस्थितियाँ, सामाजिक-नैतिक-धार्मिक दबाव आदि बाह्य परिस्थितियाँ क्षमा याचना की भावना को आसान बना देते हैं। इसके लिए अहं और शर्म की भावना से छुटकारा पाना आवश्यक है। क्षमायाचना, क्षमादान और क्षमाशीलता तीनों सुखद भविष्य का निर्माण करते हैं अत: हर दृष्टि से, हर स्थिति में उपादेय एवं अनुकरणीय है।

पता- एल- 65, न्यू इंदिरा नगर, पार्ट ए, बुरहानपुर (म.प्र.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

... और मौत हार गई

पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया

इस भोग प्रधान युग में जब कि चारों ओर उपभोक्तावादी आंतरिक रूचि और प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने वाले सबल निमित्त प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवक-युवतियों का बड़ी संख्या में संयम के दुरूह मार्ग पर कदम बढ़ाने के लिए आकृष्ट होना एक अतीव आश्चर्यकारी घटना के रूप में इतिहास में स्थान पायेगी। इस घटना के मुख्य सूत्रधार हैं युग प्रवर्तक आचार्य विद्यासागर जिनकी मोहक प्रशांत वीतराग मुद्रा के दर्शन मात्र से व्यक्ति के हृदय में वैराग्य भावना अंकुरित हो आंदोलित होने लगती है। बिना कुछ कहे भी उनकी चमत्कारी मुद्रा वह सब कुछ कह देती है जो उपदेशों के द्वारा नहीं कहा जा सकता। क्या इसमें अधिक आश्चर्य की बात और कोई हो सकती है कि जिन कॉलेज शिक्षा प्राप्त युवक-युवतियों के माता-पिता एवं गुरुजनों के प्रेम, रोष, झिड़की, धमकी भरे उपदेश आदेश भी जिनकी उच्छृंखल भोगवादी जीवन प्रणाली में तनिक भी सुधार नहीं ला पाते हैं, वहाँ उन युवक-युवतियों को इस युगांतरकारी संत की प्रथम झलक मात्र अंतर्चिंतन के लिए विवश कर देती है और वे संत के चरण कमलों के समीप भौरों की तरह मंडराने लगते हैं। जहाँ युवक-युवतियों को सदाचार के साधारण नियमों को स्वीकार करने के लिए अनेक आग्रहपूर्ण उपदेश भी विशेष अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं करा पाते, वहीं पू. आचार्यश्री की वैराग्य की सविशेष मौन उपदेश देने वाली वीतराग मुद्रा का ऐसा जादुई प्रभाव उन युवक-युवतियों के हृदयों पर पड़ता है कि वे आजीवन ब्रह्मचर्य जैसे असिधारा व्रत प्रदान करने के लिए आचार्यश्री से आग्रह करने लगते हैं। साधना के अभ्यास के बिना प्रारंभ में ही आजीवन व्रत देने के लिए आचार्यश्री के राजी नहीं होने पर वे दुखी होते हैं, किंतु अंत में गुरु आज्ञानुसार सावधि व्रत की साधना के अभ्यास के पश्चात् आजीवन व्रत ग्रहणकर संयम की शीतल छाया तले आत्म शांति को विकसित करते हुए जीवन सफल बना रहे हैं।

इस अलौकिक संत आचार्य विद्यासागर का व्यक्तित्व ऐसी ही अनेक मुद्रा, वाणी और लेखनी की लोकोत्तर विशेषताओं का पुंज रहा है। संभवत: युगजयी शैतान (मोह) को यह महान साधक अपनी सत्ता साम्राज्य की एकछत्रता में बाधक प्रतीत हुआ और उसने इस बाधा को दूर करने के लिए मौत से सहायता मांगी। लगता है मौत को मोह पर दया आई और उसने मोह की सहायता के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ आचार्यश्री पर आक्रमण किया। भीषण आक्रमण के बाद प्राप्त हुई असफलता से मौत निराश हुई और एक दो बार नहीं लगातार 5 बार आक्रमण करती रही, किंतु हर बार असफल रही और ऐसे मौत हार गई।

प्रथम बार मौत का आक्रमण आचार्यश्री के बुंदेलखंड की भूमि पर प्रथम प्रवेश के समय सतना में हुआ। मोह को तब यह अवश्य आभास हुआ होगा कि इस संत को बुंदेलखंड में प्रवेश और बुंदेलखंड में प्रवास उसके लिए विशेष संकट का कारण बनेगा। सतना में तीव्र ज्वर का प्रकोप हुआ। साधारणतया यह बात सहज समझ में नहीं आती थी कि ज्वर की इतनी तीव्रता मेंभी आचार्यश्री अपने परिणामों में समता कैसे बनाए रखते थे। अस्वस्थ अवस्था में ही वे सतना से कटनी आ गए। शहरों के सभी प्रकार के प्रदूषण युक्त वातावरण को अपनी आध्यात्मिक साधना के अनुकूल नहीं जानकर आचार्यश्री ने कुंडलपुर वर्षायोग स्थापित करने का मन पहले से ही बना लिया लगता था। कटनी में एक और संकट आ गया। आचार्यश्री के प्रथम शिष्य और गृहस्थ जीवन के लघु भ्राता क्षुल्लक समयसागर जी उनसे भी अधिक अस्वस्थ हो गए। अत: कटनी से विहार करने की परिस्थितियाँ पूर्णत: प्रतिकूल थीं, किंतु इस दृढ़ संकल्पी पुरुषार्थी महात्मा को, परिस्थितियों की प्रतिकूलता अपनी लक्ष्य पूर्ति से कब रोक सकी है। और तीव्र ज्वर की अवस्था में ही वन के अनुरूप तीर्थ कुंडलपुर की ओर विहार कर गए। अपनी अस्वस्थता को कदाचित् न सही किंतु अपने प्रथम शिष्य और लघु भ्राता की अस्वस्थता भी उनको कटनी में बांध नहीं सकी। जिस दिन आचार्यश्री कुंडलपुर पहुँचे उसके दूसरे दिन मैं भी किशनगढ़ से कुंडलपुर पहुँचा। कटनी के सिंघई परिवार की सेठानी जी के आंसुओं से भीगे वे शब्द आज भी मेरे मन में गूंजने लगते है "भैय्या जी कैसे भी करके आचार्यश्री को वापिस कटनी ले चलो। यहाँ कुंडलपुर में सब कुछ प्रतिकूल है और कुछ भी अनुकूल नहीं है। यहाँ मच्छर है, जलवायु आर्द्र है, यहाँ दूध नहीं है, सब्जी नहीं है, वैद्य नहीं है, औषधि नहीं है। यहाँ चातुर्मास किसी भी तरह उपयुक्त नहीं रहेगा। किंतु इस अलौकिक महात्मा को प्रतिकूलताओं की कब चिंता रही। प्रत्युत उन्होंने तो प्रतिकूलताओं को ही अनुकूलता समझा है।" जीविताशा धनाशा च येषां तेषां विधि विधिः। किं करोषि विधिस्तेषां येषां आशा निराशता॥ और ऐसे दृढ़ संकल्प शक्ति के कारण प्रतिकूलताएं स्वत: अनुकूलताओं में बदल गईं... और मौत हार गई।

द्वितीय बार नैनागिरि सिद्धक्षेत्र पर भाद्रपद मास में आचार्यश्री पर रोग ने भीषण आक्रमण किया। स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि हम लोग बुरी तरह घबरा गए। सब उपचार विफल हो रहे थे। दो तीन दिन पहले ही पं. जगन्मोहन लाल जी शास्त्री पर्युषण पर्व में प्रवचन करने इन्दौर गए थे। आचार्यश्री ने कहा -"मेरी समाधि का समय आ गया है तुरंत पंडित जी को बुलाओ।" उसी समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्दौर आदमी भेजकर पंडित जी को बुलवाया गया। पंडित जी इन्दौर में पर्युषण में एक भी दिन प्रवचन नहीं कर पाए और उन्हें लौटना पड़ा। पंडित जी के आने पर आचार्यश्री ने उन्हें कहा ''पंडित जी मेरा समाधि का समय आ गया है। मैं समाधि लेना चाहता हूँ, आप सहयोग करें।'' पंडितजी स्थिति की विषमता को देखकर भी घबराए नहीं और दृढ़ शब्दों में बोले ''आचार्यश्री आपके शरीर पर केवल आपका ही अधिकार नहीं है। यह समाज की सम्पत्ति है। आपको इस प्रकार गहन विचार किए बिना समाधि लेने की बात नहीं सोचनी चाहिए, अभी आपके द्वारा इस कलि काल में महती धर्म प्रभावना होना है। जल्दी ही आपका रोग दूर हो जाएगा।'' पंडितजी के आगे आचार्यश्री निरुत्तर हो गये। धीरे-धीरे रोग शमन होने लगा और कुछ ही दिनों में पूज्यश्री स्वस्थ हो गए। जिस चमत्कारी ढंग से ऐसा भीषण रोग हुआ उसी चमत्कारी ढंग से वह दूर भी हो गया और ऐसे मौत हार कर भाग गई।

तृतीय बार थुबौन क्षेत्र के द्वितीय चातुर्मास में आचार्यश्री पर अत्यंत भीषण रोग का आक्रमण हुआ। संभवत: इस बार पहले दो बार की अपेक्षा रोग की भीषणता अधिक थी। रोग के कारण शरीर केवल हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया था। उस समय का आचार्यश्री का फोटो देखकर उन्हें पहिचान पाना कठिन है। तीन-चार मुनिराज कठिनता से उन्हें खड़ाकर आहार के लिए उठाते थे। कई दिन तक केवल आधा पौन कटोरी काढा मात्र आहार में दिया जाता रहा। उस औषधि के आहार के समय सैकड़ों ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी बहिनें एवं श्रावक, श्राविकाएँ धर्मशाला के बगल की चट्टानों पर औषधि के निरंतराय आहार के लिए णमोकार मंत्र का जाप देते रहते थे। अंत में 15-20 दिन के बाद धीरे-धीरे आचार्यश्री स्वस्थ होने लगे और पर्युषण के चतुर्दशी के दिन सब भक्त जनों की प्रार्थना पर 10 मिनिट उपदेश दिया। सब श्रोता धन्य हो गए। आगामी 8-10 दिनों में आचार्यश्री उठने-बैठने, चलने लगे और धीरे-धीरे स्वस्थ हुए। ऐसे पुन: मौत हार गई।

चौथी बार पू. आचार्यश्री ने मौत का सामना किया कुंडलपुर से किशनगढ़ की यात्रा के बीच जयपुर में। कुंडलपुर से जयपुर तक की लगभग 700 किलोमीटर की लगातार लम्बी यात्रा भीषण गर्मी के दिनों में पूरी की। यह यात्रा वास्तव में कठिन रही। मार्ग में एक बार तो लालसोट के आस-पास आहार की व्यवस्था भी नहीं बन पाई। गर्मी में लम्बा चलने के कारण जयपुर आते-आते आचार्यश्री को तीव्र ज्वर ने आ घेरा, जो धीरे-धीरे टाइफाइड में बदल गया। निरंतर 106 डिग्री के आस-पास ज्वर रहने लगा। आचार्यश्री के सानिध्य के बिना पंच कल्याणक उत्सव नहीं कराने का संकल्प लिए मदनगंज-किशनगढ़ की समाज उनके जयपुर तक आने से अत्यंत हर्षित थी, किंतु आचार्यश्री की यह असाधारण अस्वस्थता समाज की चिंता का कारण बन गई। पू. आचार्यश्री के सानिध्य के अभाव में लगभग चार वर्षों से टाला जाता रहा यह पंच कल्याणक उत्सव पुन: अनिश्चय के घेरे में आ गया। ज्यों-ज्यों पंच कल्याणक की तिथियाँ निकट आ रही थीं हमारे श्वांस ऊपर नीचे हो रहे थे। जयपुर के कुशल वैद्य सुशील कुमार जी का उपचार चल रहा था। एक-डेढ माह की लम्बी टाइफाइड की बीमारी ने आचार्यश्री की देह को इतना कृष बना दिया था कि उठना बैठना भी दूभर था। पंच कल्याणक उत्सव में केवल 10-12 दिन का समय शेष रह गया था। पू. आचार्यश्री हमारी चिंता को जान रहे थे और समय पर किसी भी तरह किशनगढ़ पहुँचने के लिए चिन्तित थे। दूसरे दिन प्रात: काल आचार्यश्री ने, जिस मंदिर में ठहरे हुए थे उसकी वेदी की तीन प्रदक्षिणा लगाई। हमने इस को साधारण रूप में लिया, किंतु संभवत: आचार्यश्री तो अपनी देह की शक्ति को तोल रहे थे। शाम को लगभग 5 बजे मैं किसी सज्जन के निमंत्रण पर भोजन करने गया ही था कि पीछे से मंदिर के माली ने आकर समाचार दिया कि महाराज पीछी कमंडलु उठाकर मंदिर के बाहर आ गए हैं और चांदपोल की ओर जाने की तैयारी में है। मैं उलटे पांव लौटा और पू. आचार्यश्री का कमंडलु पकड़ चलने लगा। रास्ते में आए दो-तीन मंदिरों में आचार्यश्री से रूकने की प्रार्थना की, किंतु वे तो आगे बढ़ते गए। मेरा विचार था कि उन्हें आधा किलोमीटर से अधिक चलना नहीं चाहिए। किंतु वे तो चलते रहे और चांदपोल दरवाजे के बाहर खजांची जी की नसियाँ में आकर रूके। अब हमें यह विश्वास हो गया कि अब आचार्यश्री किशनगढ़ की ओर विहार करेंगे। सांयकाल वैद्य जी आए। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री को एक-डेढ़ किलोमीटर से अधिक नहीं चलाना है, नहीं तो टायफाइड का पुन: आक्रमण हो जायेगा। किशनगढ़ से और भी लोग आ गए। उस रात हम सो नहीं सके। योजनाएँ बनाने में ही रात निकल गई। रात को नौ बजे किशनपोल बाजार से एक दुकान से लकड़ी का पटिया व प्लास्टिक की रस्सी खरीदकर डोली बनवाई जिसमें आचार्यश्री को बैठाकर ले जाया जा सके। किशनगढ़ से एक जीप में चौके का पूरा सामान आ गया। पुरुष महिलाएँ भी आ गए। रात को ग्यारह बजे अजमेर केसरगंज के श्री श्रीपत जी को फोन किया और उनसे जैसवाल नव युवक मंडल के आठ मजबूत युवकों को डोली उठाने के लिए भेजने के लिए कहा। उन्होंने तुरंत जीप से आठ युवकों को भेजा जो प्रात: पाँच बजे तक जयपुर पहुँच गए। हम सबने मिलकर मीटिंग की और आचार्यश्री को डोली से ले जाने की योजना बनाई। हमने सोचा कि एक-डेढ़ किलोमीटर तक चलने के बाद सड़क के किनारे किसी वृक्ष के नीचे थोड़ी देर तक विश्राम करने की आचार्यश्री से प्रार्थना करेंगे और जब वे बैठ जायेंगे तो उठने से पहले ही उन्हें चार युवक पकड़कर डोली में बैठा देंगे और एकदम तेजी से चल पड़ेंगे। युवक इतने उत्साही थे कि वे कहने लगे कि चार-चार युवक बारी-बारी से डोली उठायेंगे और एक दिन में बीस पच्चीस किलोमीटर आसानी से पार कर लेंगे। चौका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनाने के लिए रास्ते में आने वाले उपयुक्त स्थानों की सूची बनाई। ऐसे ही योजना बनाते प्रात: काल हो गया। आचार्यश्री सामायिक के बाद विहार के लिए तैयार हुए। जयपुर समाज के भाई-बहिन एवं वैद्य सुशील कुमार जी आए। वैद्य जी ने हमसे पुन: कहा कि उनकी कल कही हुई बात का पूरा ध्यान रखा जाये। आचार्यश्री ने जयपुर की जनता द्वारा किए जा रहे घोषों के बीच विहार प्रारंभ किया। इस को हम चमत्कार नहीं तो क्या कहें कि आकाश में कहीं बादल दिखाई नहीं देते हुए भी एकाएक आचार्यश्री के विहार के समय बादल छा गए और रिमझिम बरसात प्रारंभ हो गई। लगता था जैसे जयपुर से किशनगढ़ के पूरे विहारकाल में इन्द्र ने आगे-आगे वर्षा की व्यवस्था की हो। एक-दो किलोमीटर तक भीड़ कम हो गई। हम तथा अजमेर के युवक योजना की क्रियान्विति के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैंने आचार्यश्री से प्रार्थना की कि वे वैद्य जी की राय के अनुसार एक साथ अधिक दूर नहीं चलें और अभी 5-7 मिनिट विश्राम कर लेवें। हमने सड़क के किनारे पाटा लगा दिया था। डोली के सामान की जीप साथ चल रही थी। आचार्यश्री ने विश्राम स्वीकार नहीं किया। कहने लगे श्रमण श्रम करते हैं, विश्राम नहीं। आचार्यश्री आगे बढ़ते रहे और हम सब लोग असहाय से बगलें झाँकने लगे। पुन: चार-पाँच किलोमीटर चलने तक तनिक विश्राम की प्रार्थना की, वह भी नहीं सुनी गई। हम सब बहुत घबरा गए। वैद्य जी की चेतावनी बार-बार याद आ रही थी। थोड़ी दूर चलने पर मैंने आचार्यश्री से पुन: वैद्य जी द्वारा एक-दो किलोमीटर से अधिक नहीं चलने की बात कही और पुन: विश्राम की प्रार्थना की। आचार्यश्री ने कहा वैद्य जी को अपनी बात कहने दो और मुझे अपना काम करने दो। आचार्यश्री के चरण बिना रूके बढ़ते रहे। आचार्यश्री ने हमको डोली तैयार करने का एवं उन्हें डोली पर बैठाने का बिल्कुल अवसर ही नहीं दिया और गंतव्य की ओर उनके चरण बढ़ते रहे। हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ से एक दूसरे की ओर देखते रहे और चलते रहे। डोली में जबर्दस्ती पकड़कर बैठा देने की बात तो बहुत दूर रही परंतु डोली में बैठने की प्रार्थना करने का भी साहस हम में से कोई नहीं जुटा सका। आचार्यश्री के आत्म-बल और आत्म-तेज के आगे सभी भीगी बिल्ली बने चुपचाप साथ-साथ चलते रहे। पाठक गण अनुमान नहीं लगा पायेंगे कि उस सुबह डेढ़ माह की देह तोड़ भीषण टायफाइड से पीड़ित आचार्यश्री पहली बार कितना चल लिए होंगे। आप अधिक से अधिक 5-7-8-10 किलोमीटर का अनुमान लगा रहे होंगे। किंतु सच मानिए उस सुबह आचार्यश्री जयपुर से 18 किलोमीटर चलकर भांकरोटा आए। हम लोग बहुत चिंतित थे। हमने वैद्यजी से कहा "वैद्यजी हम क्या कोई भी, संकल्प के पक्के आचार्यश्री के आगे कुछ नहीं कर सकता था।" वैद्य जी कहने लगे "ऐसे संतों का जीवन तो असाधारण है जिस पर साधारण जीवन पर लागू होने वाले आयुर्वेद के सिद्धांत पूर्णत: लागू नहीं होते।" बैद्य जी ने यह भी कहा कि मेरे ज्ञान के अनुसार रोगियों के इतिहास की पहली घटना है कि जब डेढ़ माह से तीव्र टायफाइड से पीड़ित रोगी, पहली बार अठारह किलोमीटर तो बहुत होता है एक किलोमीटर भी पैदल चल सका हो। यह तो लोकोत्तर महात्मा के जीवन की, लोकोत्तर घटना है। अंत में गर्भ कल्याणक के दिन सांयकाल किशनगढ़ के निकट आचार्यश्री पहुँच ही गए। वह किशनगढ़ का पंच कल्याणक महोत्सव आचार्यश्री का सान्निध्य पा ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बन गया। ऐसे फिर मौत हार गई और आचार्यश्री जीत गए।

पाँचवी बार अमरकंटक के पास पैंड्रा रोड़ में आचार्यश्री पर जानलेवा हरपीज रोग का आक्रमण हुआ। रोग ने पूरी तीव्रता ग्रहण की। उठना बैठना भी कठिन। आहार औषधि लेना भी कठिन। प्रारंभ में रोग का निदान नहीं हो सका। बाद में जब निदान हुआ तो रोग अपने चरम उत्कर्ष पर था। आठ-दस दिन अत्यंत कठिनाई के रहे। धीरे-धीरे रोग शमन हुआ। परंतु फिर भी आगामी कुछ समय तक रोग का प्रभाव रहता है और पूर्ण स्वस्थता में कुछ माह लग जाते हैं। सभी लोग यह समझते थे कि अभी आचार्यश्री पैदल नहीं चल पायेंगे और उन्हें पैंड्रा रोड ही ठहरना पड़ेगा। किंतु लोकोत्तर संत की लोकोत्तर वृत्ति किसको आश्चर्य में नहीं डाल देगी कि आचार्यश्री अपूर्ण स्वस्थ दशा में ही बिहार कर 45 किलोमीटर का लम्बा कठिन पहाड़ी मार्ग चलकर अमरकंटक पहुँच गए। और ऐसे फिर मौत हार गई।

पू. आचार्यश्री के जीवन की अनेक घटनाएँ और उनकी चर्या उनकी लोकोत्तरता को सिद्ध करती है। भयंकर रोगों के उक्त पाँच जान लेवा अवसरों पर जिस प्रकार मौत के मुँह तक पहुंचकर पुन: स्वस्थ हुए, इससे सिद्ध होता है कि आचार्यश्री का जीवन में संघ का विस्तार एवं गण पोषण का महान कार्य करना शेष था इसीलिए मौत हर बार हार गई। जन्म के साथ मृत्यु तो निश्चित है किंतु इस महान संत की आज्ञा लेकर समाधि साधना के साथ ही मौत आयेगी नही तो अपना नियोजित प्रभावना कार्य पूर्ण होने तक असामयिक अनचाही आई मौत पहले भी हारी है और आगे भी हारेगी।

लुहाड़िया सदन, जयपुर रोड़
मदनगंज-किशनगढ़- 305801
जिला-अजमेर (राज.)

मुक्तक

योगेन्द्र दिवाकर

कोशिश से धूल में भी फूल मिल जाता है,
कोशिश से अवसर भी अनुकूल मिल जाता है।
सागर की लहरों से हार नहीं माने तो,
तैरने से उसका भी कूल मिल जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका

कु. समता जैन

युवा पीढ़ी परिवार, समाज एवं राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति है। वर्तमान के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने पर ही वह भविष्य बनाती है। अर्थात् पुरानी पीढ़ी का अनुभव एवं नई पीढ़ी का संघर्ष अवश्य ही कार्यशील होकर नया निर्माण एवं फलीभूत हो सकता है। युवा पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के मध्य एक लंबा अंतराल होता है। समाज का उत्थान युवा ही कर सकते हैं, क्योंकि बचपन विवेक हीन होता है, जो खेल कूद में बीत जाता है। तथा बुढ़ापा सामर्थ्यहीन होता है जो रोगों के घिरने के कारण निकल जाता है। युवाओं में विवेक तथा सामर्थ्य दोनों ही रहते हैं। बुजुर्ग पुरानी बातें एवं बीते जमाने के गीतों को दोहराते रहते हैं, और उसे अच्छा बताते हैं। कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब नई पीढ़ी, पुरानी मान्यताओं, परम्पराओं एवं धारणाओं को ठुकराने की कोशिश करती है, जो उचित नहीं है। इसे नये और पुरानों के बीच संघर्ष कह सकते हैं। काल चक्र तो गतिमान है; जो बदलते परिवेश, परिस्थितियों के अनुसार 'स्व' को ढाल लेते हैं, वे पुराने होकर भी नये कहे जावेंगें।

विश्व में किसी भी राष्ट्र, समाज ने उन्नति की है, तो उस उन्नति की नींव युवाओं के कंधों पर ही मिलेगी। सरदार भगतसिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, सुभाषचंद्र बोस जैसे महान क्रांतिकारियों ने अपनी कुर्बानी देकर फिरंगी सरकार को खदेड़कर भारत देश को आजादी का मंगल प्रभात दिखाने की भरपूर कोशिश की थी। युवा शक्ति का मूल्यांकन और सदुपयोग जिस राष्ट्र के नेता ने कर लिया हो, वह राष्ट्र किसी न किसी दिन विश्व का अजेय शत्रु और स्वर्ग का कोना, अवश्य बनेगा।

नई पीढ़ी बुद्धिमान, उत्साही एवं सुसंस्कारी भी है। शिक्षा, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में हमारी युवा पीढ़ी धीरे-धीरे ही सही किंतु प्रतिष्ठित होती जा रही है। यह जैन समाज के लिए खुशी की बात है आज हमारे समाज के युवा हजारों की संख्या में डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., केन्द्र एवं राज्य सरकारों में उच्च पदों पर हैं। पत्रकार, कवि आदि क्षेत्रों में भी नये चेहरे उभर रहे हैं। श्रम, सेवा एवं संस्कारों के बल पर ही व्यक्ति आगे बढ़ता है। जिसने संस्कारों को गौण मान लिया, वह उन्नति कर ही नहीं सकता है। और ये संस्कार हमें अपने माता-पिता से मिलते हैं। माता-पिता का व्यवहार बिना सिखाये ही बच्चों के अंत:करण में उदारता, सद्भावना, मैत्री, सहयोग और समानता जैसे गुणों का सफल एवं स्थाई प्रत्यारोपण कर देता है।

युवा ही समाज के कर्णधार, भूत और भविष्य के सेतु तथा वर्तमान के सशक्त आधार होते हैं। उनके अंतरंग से हमें सौहार्द की सरिता सूखने नहीं देना चाहिये। उन्हें हमेशा प्रेरित करते रहना चाहिये। जब कोई कार्य युवाओं द्वारा गलत किया जाता है, तो समस्त अनैतिकता एवं बिगड़ते दूषित वातावरण का आरोप भी प्राय: युवकों पर ही लगा दिया जाता है, लेकिन हम यह भूल जाते हैं, कि युवा शक्ति को अधर्म, विध्वंश एवं अनैतिकता की ओर उन्मुख करने में उस समाज का भी योगदान है, जो स्वयं शोषण, अनाचार और अत्याचार की नींव पर खड़ा है। आज की स्थिति इतनी विषम है, कि हम अपने को छोड़ सभी को भ्रष्टाचारी एवं पतित सिद्ध करने का दावा करते हैं। हम लोगों में से किसी के पास भी इतना समय नहीं है कि वह आत्मावलोकन करके इस समस्या का सही निदान खोज सके। असंतोष और विद्रोह का विष वृक्ष निरंतर ही बढ़ता चला जा रहा है। समाज ऐसा होना चाहिये, जहाँ युवकों के अंतर्गत भातृत्व, प्रेम, स्नेह, सद्भाव, दया, करुणा, सेवा, परोपकार एवं धर्म के सतरंगी मधुर मंजुल इंद्र धनुष लहरायें। युवा वर्ग समाज की पहचान और देश की शान होता है। आज वह अपने जीवन के चौराहे पर खड़ा होकर कर्तव्य विमुख हो रहा है। युवा समाज भोगवाद के जुनून में अपनी बुद्धि वासना से जोड़ चुका हो, वहाँ ऐसी परिस्थिति में युवा वर्ग की जीवन दिशा खोज पाना असंभव तो नहीं, लेकिन कठिन अवश्य है। आज युवा भौतिकता की चकाचौंध में गुम हो गये हैं, ये टेलीविजन संस्कृति के बढ़ते प्रभाव में भ्रमित सी नकारात्मक दिशा की ओर बढ़ रहे हैं। युवाओं में दुर्व्यसन भी तेजी से गति पकड़ रहे हैं। जैसे जुआ खेलना, शराब पीना, तंबाकू, पान, गुटखा आम बात हो गई है। इसकी गिनती फैशन में होने लगी है। इस प्रकार दुर्व्यसन में करीब 75% युवा पीढ़ी उलझी हुई है, दुर्व्यसन तभी छूट सकते हैं, जब वह धर्म के मर्म को समझे। धर्म ही इस भ्रमात्मक स्थिति से निकाल सकता है। लेकिन आज भी नई पीढ़ी का धर्म के प्रति उदासीन होना स्वाभाविक है। आज की पीढ़ी किसी बात को तर्क की कसौटी पर कसे बिना मानने को तैयार नहीं है। क्योंकि आज का युग वैज्ञानिक युग है। पर जैन धर्म की आधार शिला भी तो वैज्ञानिक है। आवश्यकता है, उन्हें सही तरीके से समझाने की। आज सारे देश में विद्यार्थियों में अनुशासन हीनता बढ़ती जा रही है। उसका कारण धार्मिक शिक्षा का अभाव है। यदि हम नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं करायेंगे तो वह भटक जायेगी। धार्मिक शिक्षा से नई पीढ़ी को सुसंस्कृत, सभ्य, अहिंसा प्रिय बनाया जा सकता है। और उनका नैतिक स्तर पतन की ओर जाने से रोका जा सकता है।

धर्म के विकास के लिये युवा पीढ़ी में हमें कथनी और करनी के अंतर को समाप्त करना होगा। अर्थात् हमें कर्म और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वचन में एकरूपता लानी होगी तभी हम युवा पीढ़ी को धर्म की भावना में निहित वास्तविक कल्याण की ओर कर पायेंगे।

युवा शक्ति एक ऐसी शक्ति है, जिससे बड़े से बड़े काम आसानी से हो जाते हैं। क्योंकि युवाओं में जोश होता है, कुछ कर गुजरने की क्षमता होती है और जो करना चाहते हैं,उसे जल्द ही करके सबके सामने प्रस्तुत करते हैं। युवाओं की तार्किक शक्ति, सोचने, विचारने की शक्ति बच्चों और वृद्धों की अपेक्षा अधिक होती है। वे जो सोच लेते हैं, करके दिखलाते हैं। धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये आवश्यक है, कि नव युवकों को इस ओर प्रेरित किया जाये। इसी बात को लक्ष्य करके जगह-जगह मंडल, युवा संगठन, युवा फेडरेशन आदि संस्थायें स्थापित हैं।

विज्ञान के नवीनतम आरामदेह संसाधन और भोग सामग्रियाँ इतने समय के पश्चात भी मानव जगत में शांति का सौहार्दपूर्ण वातावरण निर्मित करने में समर्थ नहीं हो सकीं हैं, और नहीं भविष्य में कर पाना ही संभव है। आज युवा को भौतिक पर्यावरण की चकाचौंध से हटाकर धर्म की आरे प्रेरित करना है, क्योंकि विश्व में शान्ति लाना है। शांति लाने का एक मात्र उपाय धार्मिक भावनायें जागृत करना है।

आज अंग्रेजी शिक्षा युवाओं पर अधिक हावी है। बदलते परिवेश में तो अंग्रेजी शिक्षा गलत नहीं है। किंतु अपने धर्म एवं संस्कारों के साहित्य को भी इसमें जोड़ना जरूरी है। युवा वर्ग आदि कोई बात स्वीकारना भी चाहता है, तो उसके लिए वैज्ञानिक आधार होना जरूरी है। हमारा धर्म बौद्धिक, वैज्ञानिक एवं तर्क संगत की त्रिवेणी है। किंतु प्रस्तुतीकरण, भाषा-शैली पुरानी है, जो नई पीढ़ी को कम आकर्षित कर रही है। इसे नया रूप देना जरूरी हो गया है। एक ओर तो हम पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। वहीं दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृति वाले शाकाहार, रहन-सहन एवं फैशन में भारतीयता की नकल कर रहे हैं। सभा-संस्थाओं के कार्यक्रमों में अथवा प्रवचनों में हम देखते हैं कि बुजुर्ग एवं बच्चे युवक-युवतियाँ सभी होते हैं कितु मेरा अनुभव है कि काफी संख्या में युवा पीढ़ी ध्यान से प्रवचन/व्याख्यान/भाषणों को सुनते हैं तथा यदि कहीं उन्हें शंका होती हैं, तो पास बैठे लोग तुरंत समाधान भी करते हैं। क्या उसे इनकी धर्म प्रभावना नहीं मान सकते हैं? अवश्य मानते हैं।

हमारा प्रत्येक जैन-परिवार से आग्रह है कि साधु-साध्वियों के सान्निध्य में होने वाले प्रवचनों, सभाओं में अवश्य ही युवा पीढ़ी को भेजने एवं साथ ले जाने का लक्ष्य रखें। युवक-युवतियों से भी कहना है कि घर में कभी अश्लील साहित्य न पढ़ें, बल्कि जैन साहित्य अवश्य पढ़ें। जिससे कि अपने संस्कारों को पूर्ववत् संजाये रखें और गर्व का अनुभव करें। तथा समस्त युवा वर्ग से आग्रह है कि हमेशा अहिंसामयी जैन-धर्म का प्रचार-प्रसार करें। तब हम कह सकते हैं कि समाज में युवाओं की अहं भूमिका है। समाज का उत्थान युवाओं के द्वारा ही हुआ है, और होता रहेगा।

सुपुत्री - श्री सुरेश जैन 'मारौरा'
जीवन सदन, सर्किट हाउस के पास शिवपुरी (म.प्र.)

वाह रे! दूध के धुले

मुनि श्री उत्तमसागर जी

सब जन अपने आप को, समझत हैं निर्दोष।
किन्तु उन्हें यह होश ना, यह भी है इक दोष॥

मात्र दोष ही देख मत, कुछ तो गुण भी देख।
दोष देखना आपका, बडा दोष है एक ॥

कठिन काम समझो वही, जो खुद को उपदेश।
सरल काम समझो वही, जो पर को उपदेश॥

सज्जन पूजन भजन में, अपना समय बिताय।
दुर्जन भोजन कलह में, जीवन व्यर्थ गमाय॥

दुर्गुण रूपी खून से, भरे हो खुद हि आप।
फिर भी दूध के ही धूले, क्यों समझत हो आप॥

पाप करे दिन रात तो, पुण्य कहाँ से आय।
बोये बीज बबूल तो, आम कहाँ से आय॥

केवल दुर्गुण देखना, दुर्जन का है काम।
ज्यों सूअर मल शोधता, पाकर भी फल-धाम॥

साथी का साथी बनो, चलो साथ ही साथ।
यह न बने तो मत करो, साथी का ही घात॥

आँखें सब को देखतीं, खुद को देखत नाहि।
दुर्जन भी पर दोष ही,-देखे खुद को नाहि॥

सज्जन का धन गुण रहा, दुर्जन का धन दोष।
दोनों उद्यम नित करें, भरने निज-निज कोष॥

बोली गोली से बड़ी, कर देती है घाव।
याते ऐसा बोल मत, बिगड़े सब के भाव॥

दुर्जन की अरु आग की समझो एक ही जात।
दूसरों को तो शुद्ध करे, स्वयं राख हो जात॥

(संघस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिज्ञासा-समाधान

पं. रतनलाल बैनाड़ा

जिज्ञासा - त्रस नाड़ी की लम्बाई कितनी है? क्या त्रस नाड़ी और लोक नाड़ी एक ही बात है?

समाधान - लोकनाड़ी और त्रस नाड़ी को लगभग सभी लेखकों ने पर्यायवाची माना है। यद्यपि लोकनाड़ी शब्द 'सिद्धान्तसार दीपक' आदि ग्रन्थों में पढ़ने को तो मिलता है पर लोकनाड़ी और त्रसनाड़ी के स्वरूप में भेद नहीं करके दोनों का एक ही स्वरूप लिखा है। परन्तु जब गौर से देखें तो लोक के मध्य भाग में एक राजू चौड़ी और एक राजू मोटी तथा चौदह राजू लम्बी लोकनाड़ी तथा एक राजू मोटी, चौड़ी एवं तेरह राजू के कुछ कम लम्बी त्रस नाड़ी उचित प्रतीत होती है।

लोक का जितना भाग त्रस जीवों का निवास क्षेत्र है उसे त्रस नाड़ी या त्रस नाली कहते हैं। यद्यपि पूरी चौदह राजू लम्बी लोक नाड़ी के, निचले एक राजू से कुछ अधिक भाग में त्रस जीवों का निवास नहीं है, फिर भी आचार्यों ने त्रस नाड़ी को चौदह राजू लम्बा भी माना है। जैसा कि 'सिद्धांतसार दीपक' के प्रथम अधिकार श्लोक नं. 72 में कहा है -

लोकस्य मध्यभागेऽस्ति त्रसनाड़ी त्रसान्विता।
चतुर्दशमहारज्जूत्सेधा रज्जवेक विस्तृता ॥ 92॥

अर्थ - लोक के मध्य भाग में त्रस जीवों से समन्वित, चौदह राजू ऊँची और एक राजू चौड़ी त्रसनाड़ी (नाली) है।

श्री त्रिलोकसार गाथा 143 में इस प्रकार कहा है-

लोयबहुमज्झदेसे रुक्खे सारत्व रज्जुपदटजुदा ।
चोद्दसरज्जुत्तुंगा तसणाली होदि गुणणामा ॥ 43॥

अर्थ - लोकाकाश के मध्य प्रदेशों में (बीच में) वृक्ष के मध्य में रहने वाले सार भाग के सदृश, तथा एक राजू प्रतर सहित चौदह राजू ऊँची और सार्थक नाम वाली त्रस नाली है।

तिल्लोयण्णत्तिकार आ.यतिवृषभ ने तो एक विवक्षा से अधिकार 2 गाथा 8 के द्वारा सम्पूर्ण लोक को भी नाड़ी कहा है:

उववाद-मारणंतिय-परिणद-तस-लोय-पूरणेण गदो।
केवलिणो अवलंबिय सव्व-जगो होदि तस-णाली॥8॥

अर्थ - अथवा उपपाद और मारणांतिक समुद्घात में परिणत त्रस तथा लोकपूरण समुद्घात को प्राप्त केवली का आश्रय करके सारा लोक त्रस-नाली है। ॥8॥ त्रस नाड़ी का स्वरूप तिल्लोयपण्णत्तिकार ने अधिकार-2, गाथा-6 में इस प्रकार कहा है:

लोय-बहु मज्झ देसे तरुम्मि सारं व रज्जु-पदर-जुदा।
तेरस रज्जुच्छेहा किचूंणा होदि तस-णाली ॥6॥
ऊण-पमाणं दंडा कोडि-तियं एक्कवीस-लक्खाणं।
वासट्ठिं च सहस्सा दुसया इगिदाल दुतिभाया ॥7॥

अर्थ - वृक्ष में (स्थित) सार की तरह, लोक के बहुमध्य भाग में एक राजू लम्बी चौड़ी और कुछ कम तेरह राजू ऊँची त्रस-नाली है। त्रसनाली की कमी का प्रमाण तीन करोड़, इक्कीस लाख, बासठ हजार दो सौ इकतालीस धनुष एवं एक धनुष के तीन भागों में से दो (2/3) भाग है।

भावार्थ - त्रस नाड़ी की ऊँचाई 14 राजू है। इसमें सातवें नरक के नीचे एक राजू प्रमाण कलकल नामक स्थावर लोक है। इसमें त्रस जीव नहीं रहते। शेष तेरह राजू में से भी ऊपर और नीचे का कुछ स्थान घटाने से कुछ कम तेरह राजू प्रमाण त्रस नाड़ी सिद्ध होती है जो इस प्रकार है-

1. महातम प्रभा नामक सप्तम भूमि जो आठ हजार योजन मोटी है, के मध्य भाग में ही नारकियों का निवास है अर्थात् नीचे के 3999-1/3 योजन में (3199466-2/3 धनुष) त्रस जीव नहीं हैं। अत: यह संख्या 13 राजू में से घटानी चाहिए।

2. उर्ध्वलोक में सर्वार्थसिद्धि विमान के ध्वजदण्ड से ईष्त्प्राग्भार नामक आठवीं पृथ्वी 12 योजन दूर है ईष्त्प्राग्भार पृथ्वी की मोटाई 8 योजन है इसके ऊपर दो कोश मोटा घतोदधि वलय,एक कोश मोटा घनवातवलय तथा 1575 धनुष मोटा तनुवातवलय है। उर्ध्वलोक के इन 96000 + 64000 + 4000 + 2000 + 1575 धनुष = 167575 धनुष हुए।

इस प्रकार अधोलोक और उर्ध्वलोक दोनों त्रसजीव रहित स्थान का जोड़ (32162241-2/3 धनुष) कम बैठता है।

उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार लोकनाड़ी का विस्तार 14 राजू और त्रस नाड़ी का विस्तार 13 राजू में से 32162241-2/3 धनुष कम मानना चाहिए।

जिज्ञासा - क्या संसारी अवस्था में जीव को मूर्तिक कहा जा सकता है?

समाधान - ''जीव अमूर्तिक ही है'' ऐसा एकान्त नहीं है। जैसा सर्वार्थ सिद्धि अध्याय-2, सूत्र-7 की टीका में कहा है-

हिन्दी अर्थ -आत्मा के अमूर्तत्व के विषय में अनेकान्त है। यह कोई एकान्त नहीं कि आत्मा अमूर्तिक ही है। कर्मबन्ध रूप पर्याय की अपेक्षा उसका आवेश होने के कारण कथंचित् मूर्त है और शुद्ध स्वरूप की अपेक्षा कथंचित् अमूर्त है।

बंधं पडि एयत्तं लक्खणदो हवइ तस्स णाणत्तं।
तम्हा अमुत्ति भावो णेयंतो होई जीवस्स॥

अर्थ - यद्यपि आत्मा बन्ध की अपेक्षा एक है, तथापि लक्षण की अपेक्षा वह भिन्न है। अत: जीव का अमूर्तिक भाव अनेकान्त रूप है। वह एक अपेक्षा से तो है और एक अपेक्षा से नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वार्थसिद्धि अध्याय -1 के 27 वें सूत्र की टीका में इस प्रकार कहा है:-"रुपिषु इत्यनेन पुद्गला: पुद्गल द्रव्यसंबन्धाश्च जीवा: परिगृह्यन्ते" सूत्र में कहे गये "रुपिषु" इस पद से पुद्गलों का और पुद्गलों से बद्ध जीवों का ग्रहण होता है।

वृहदद्रव्यसंग्रह गाथा-7 की टीका में ब्रह्मदेव सूरी ने इस प्रकार कहा है:- **हिन्दी अर्थ** - "ववहारा मुत्ति" क्योंकि जीव अनुपचरित असद्‌भूत व्यवहार नय से मूर्तिक है, अत: कर्म बन्ध होता है। जीव मूर्तिक किस कारण से है? "बंधादो" अनन्त ज्ञानादि की उपलब्धि जिसका लक्षण है ऐसे मोक्ष से विलक्षण अनादि कर्म बन्धन के कारण जीव मूर्त है।

तत्वार्थसार 5/16-19 में आ. अमृतचन्द्र स्वामी ने इस प्रकार कहा है-"अमूर्तिक आत्मा का मूर्तिक कर्मों के साथ बन्ध असिद्ध नहीं है, क्योंकि अनेकान्त से आत्मा में मूर्तिकपना सिद्ध है। कर्मों के साथ अनादिकालीन नित्य संबंध होने से आत्मा और कर्मों में एकत्व हो रहा है। इसी एकत्व के कारण अमूर्त आत्मा में भी मूर्तत्व माना जाता है। जिस प्रकार एक साथ पिघलाए हुए स्वर्ण तथा चांदी का एक पिण्ड बनाए जाने पर परस्पर प्रदेशों के मिलने से दोनों के एकरूपता मालूम होती है। आत्मा के मूर्तिक मानने में एक युक्ति यह भी है कि उस पर मदिरा (मूर्त पदार्थ) का प्रभाव देखा जाता है इसलिए आत्मा मूर्तिक है। क्योंकि मदिरा अमूर्तिक आकाश में मद को उत्पन्न नहीं कर सकती।

श्री वीरसेन स्वामी ने धवल पु. 13/11, 333 तथा धवल पु. 15/33-34 में इस प्रकार कहा है-संसार अवस्था में जीवों में अमूर्तपना नहीं पाया जाता। इसीलिए "जीव द्रव्य अमूर्त है तथा पुद्गल द्रव्य मूर्त फिर इनका बंध कैसे हो सकता है" यह प्रश्न ही नहीं उठता। प्रश्न-यदि संसार अवस्था में जीव मूर्त है तो मुक्त होने पर वह अमूर्तपने को कैसे प्राप्त हो सकता है? उत्तर-यह कोई दोष नहीं है क्योंकि जीव में मूर्तपने का कारण कर्म है, कर्म का अभाव होने पर तद्‌जनित मूर्तत्व का भी अभाव हो जाता है और इसलिए सिद्ध जीवों के अमूर्तपने की सिद्धि हो जाती है। इस प्रकार संसारी जीव व्यवहारनय से मूर्त है और निश्चयनय से अमूर्त है यह सिद्ध होता है।

जिज्ञासा - जैन आगम में उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण होते हैं। वर्तमान में उन 25 मूलगुणों वाला या उनमें से एक मूलगुण वाला भी कोई मुनि दृष्टिगोचर नहीं होता? तो क्या वर्तमान में उपाध्याय परमेष्ठी का अभाव मानना चाहिए।

समाधान - जैन आगम में उपाध्याय परमेष्ठी की परिभाषा करते हुए आचार्यों ने 25 मूलगुणधारी के अलावा जो पठन-पाठन एवं संघ को उपदेश आदि देने का कार्य करते हैं और आचार्यों द्वारा उपाध्याय पद पर नियुक्त किये जाते हैं उनको भी उपाध्याय परमेष्ठी कहा है। द्रव्यसंग्रह गाथा-53 में इस प्रकार कहा है-

जो रयणत्तयजुत्तो णिच्चं धम्मोवदेसणे णिरदो।
सो उवज्झाओ अप्पा जदिवरवसहो णमो तस्स ॥53॥

गाथार्थ - जो रत्नत्रय सहित, निरंतर धर्म का उपदेश देने में तत्पर है, वह आत्मा उपाध्याय है, मुनिवरों में प्रधान है, उसे नमस्कार हो।

श्री राजवार्तिक अ. 9 सूत्र 24 की टीका में इस प्रकार कहा है -"विनयेनोपेत्य यस्माद् व्रतशीलभावनाधिष्ठानादागमं श्रुताख्यमधीयते इत्युपाध्याय:" जिस व्रत शील भावनाशाली महानुभाव के पास जाकर भव्यजन विनयपूर्वक श्रुत का अध्ययन करते हैं वे उपाध्याय हैं।

सर्वार्थसिद्धि 309, सूत्र 24 की टीका में इस प्रकार कहा है-"मोक्षार्थ शास्त्रमुपेत्य यस्मादधीयत इत्युपाध्याय:" अर्थ-मोक्ष के लिए पास जाकर जिससे शास्त्र पढ़ते हैं वह उपाध्याय कहलाता है।

आ. कुन्दकुन्द ने भी नियमसार गाथा-74 में इस प्रकार कहा है- रयणत्तयसंजुत्ता जिणकहियपयत्थदेसया सूरा। णिक्कंखभावसहिया उवज्झायाएरिसा होंति। अर्थ-रत्नत्रय से संयुक्त जिनकथित पदार्थों में शूरवीर उपदेशक और नि:कांक्ष भाव सहित, ऐसे उपाध्याय होते हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार उपाध्याय परमेष्ठी के विशेष 25 गुणों से रहित, अध्ययन करने-कराने में तत्पर तथा आचार्य द्वारा उपाध्याय पद पर दीक्षित मुनिराज को भी उपाध्याय परमेष्ठी मानना आगम सम्मत है। वर्तमान में ऐसे उपाध्याय परमेष्ठी का अभाव नहीं मानना चाहिए।

जिज्ञासा - क्या शास्त्रों में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि दंतमंजन करके ही मंदिर जाना चाहिए?

समाधान -श्री भव्यमार्गोपदेश उपासकाध्ययन में भट्टारक जिनचंद्रसूरी ने इस प्रकार कहा है:

दन्तकाष्ठं तदा कार्यं गण्डूषै: शोधयेन्मुखम्।
तदा मौनं प्रतिग्राह्यं यावद्देव विसर्जनम् ॥347॥
क्षेत्र प्रवेशनाद्यैश्च मन्त्रै: क्षेत्रप्रवेशनम्।
तत: ईर्यापथं शोध्यं पश्चात् पूजां समारभेत् ॥348॥

अर्थ- देव पूजा से पूर्व काष्ठ की दातुन करनी चाहिए और जल के कुल्लों द्वारा मुख की शुद्धि करनी चाहिए। तत्पश्चात् देव विसर्जन करने तक मौन ग्रहण करना चाहिए ॥347॥ जिनमंदिर में प्रवेश करने आदि के मंत्रों का उच्चारण करते हुए धर्म क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए। पश्चात् ईर्यापथ की शुद्धि करके पूजा को प्रारंभ करें ॥348॥

श्री धर्मसंग्रह श्रावकाचार (पं. मेघावी) में इस प्रकार कहा है-

मत्वेति चिकुरान्मृष्ट्वा दन्तामपि गृहव्रती।
देशे निर्जन्तुके शुद्धे प्रमृष्टे प्रागुदड्मुख: ॥50॥
गालितैर्निर्मलैर्नीरै: सन्मन्त्रेण पवित्रितै:।
प्रत्यहं जिनपूजार्थं स्नानं कुर्याद्यथाविधि ॥51॥

अर्थ - जिनपूजादि में स्नान करने को निर्दाध समझकर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गृहस्थों को चाहिए कि अपने केश तथा दाँतों को धोकर पूर्व दिशा अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके जीवरहित, पवित्र तथा मार्जन (झाड़े) किये हुए किसी स्थान में छाने हुए तथा शास्त्रोक्त मन्त्रों से पवित्र किए हुए निर्मल जल से प्रतिदिन जिनपूजा के लिए स्नान करें ॥50-51 ॥

श्री यशस्तिलकचम्पू उपासकाध्ययन (रचियता-सोमदेव) श्लोक नं. 439 में कहा है :-

दन्तधावनशुद्धास्यो मुखवासोवृताननः।
असंजातान्यसंसर्गः सुधीर्देवानुपाचरेत् ॥439 ॥

अर्थ- दातोन से मुख शुद्ध करे और मुख पर वस्त्र लगाकर दूसरों से किसी तरह का सम्पर्क न रखकर जिनेन्द्र देव की पूजा करें ॥439 ॥

सागारधर्मामृत अध्याय 6 के श्लोक नं. 3 की स्वोपज्ञ टीका करते हुए पं. आशाधर जी ने शुचिः शब्द के अर्थ में "विधिवत् शौच, दंतधाव न आदि करके" पूजन करे ऐसा कहा है।

इस प्रकार उपर्युक्त श्रावकाचारों के अनुसार दन्तधावन (मंजन) करके ही मंदिर प्रवेश या पूजन करने का विधान पाया जाता है।

प्रश्नकर्ता - एच.डी. बोपलकर, उस्मानाबाद

जिज्ञासा -स्वर्ग के इन्द्रों में से कौन-कौन से इन्द्र दक्षिणेन्द्र हैं और कौन से उत्तरेन्द्र ?

समाधान - तत्त्वार्थसूत्र के अनुसार 16 स्वर्गों में 12 इन्द्र हैं अर्थात् सौधर्म ऐशान, सानत्कुमार व माहेन्द्र में एक-एक इन्द्र है। ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ, शुक्र-महाशुक्र, सतार-सहस्त्रार इन चार युगलों में एक-एक इन्द्र हैं तथा आनत, प्राणत, आरण, अच्युत इन चार स्वर्गों में एक-एक इन्द्र है। यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए कि स्वर्ग नं. 1-3-5-7-9-11-13-15 तो दक्षिण के हैं, यदि इनमें इन्द्र रहता है तो दक्षिणेन्द्र है और शेष बचे हुए 2-4-6-8-10-12-14-16 ये उत्तर के स्वर्ग हैं, यदि इनमें इन्द्र रहता है तो उत्तरेन्द्र होता है।

सभी शास्त्र सौधर्म, सानत्कुमार, ब्रह्म, लान्तव,आनत तथा आरण स्वर्ग के इन्द्रों को दक्षिणेन्द्र मानने में एक मत हैं, परन्तु पाँचवें एवं छठे युगल के किस स्वर्ग में इन्द्र रहता है इस संबंध में शास्त्रों में विभिन्न मत पाये जाते हैं।

(अ) निम्नलिखित शास्त्रों में पाँचवें युगल के महाशुक्र स्वर्ग में छठे युगल के सहस्त्रार स्वर्ग में इन्द्र माने गये हैं-श्री तिलोयपण्णत्ति अधिकार-8, गाथा नं. 131 से 135 एवं 341 से 352, सिद्धांतसार दीपक अधिकार-15, श्लोक 6-7, श्री त्रिलोकसार गाथा 454।

(आ) निम्नलिखित शास्त्रों में पाँचवें युगल के शुक्र स्वर्ग में और छठे युगल के सतार स्वर्ग में इन्द्र माने गये हैं-सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, तत्त्वार्थवृत्ति, श्लोकवार्तिक इन सभी में तत्त्वार्थसूत्र अध्याय-4, के 19वें सूत्र की टीका में तथा वृहदद्रव्यसंग्रह की गाथा 35 की टीका में।

(इ) हरिवंशपुराण सर्ग 6 श्लोक नं. 101-102 के अनुसार ब्रह्म और शुक्र स्वर्ग में इन्द्र माने गये हैं तथा लान्तव-कापिष्ठ युगल स्वर्ग में और सतार-सहस्त्रार स्वर्ग में इन्द्र माने गये हैं।

उपर्युक्त तीनों मतों को ध्यान में रखने से यह निश्चित होता है कि-

1. उपर्युक्त "अ" मान्यता वाले शास्त्रों के अनुसार पहले, तीसरे, पाँचवें, सातवें और तेरहवें, पन्द्रहवें स्वर्ग के 6 इन्द्र दक्षिणेन्द्र हैं और शेष 6 इन्द्र, उत्तरेन्द्र हैं।

2. उपर्युक्त "आ" मान्यता के अनुसार पहले, तीसरे, पाँचवे, सातवें, नौवें, ग्यारहवें, तेरहवें, पन्द्रहवें स्वर्ग के आठ इन्द्र दक्षिणेन्द्र हैं शेष चार इन्द्र उत्तरेन्द्र हैं।

3. श्री हरिवंशपुराण के अनुसार पहले, तीसरे, पाँचवे, नौवें, तेरहवें और पन्द्रहवें स्वर्ग के 6 इन्द्र दक्षिणेन्द्र और शेष 6 इन्द्र उत्तरेन्द्र हैं।

1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा- 282002 (उ.प्र.)

'जिनभाषित' के सम्बन्ध में तथ्यविषयक घोषणा

प्रकाशन स्थान	:	1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक-प्रकाशक	:	रतनलाल बैनाड़ा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	.	1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.)
सम्पादक	:	प्रो. रतनचन्द्र जैन
पता	:	137, आराधना नगर, भोपाल- 462003 (म.प्र.)
स्वामित्व	:	सर्वोदय जैन विद्यापीठ 1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा- 282002 (उ.प्र.)

मैं, रतनलाल बैनाड़ा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है।

रतनलाल बैनाड़ा, प्रकाशक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, छात्रावास, सांगानेर एक आदर्श संस्था

महावीर प्रसाद पहाड़िया

विश्व विख्यात गुलाबी नगर जयपुर से 10 किलोमीटर दक्षिण में स्थित सांगानेर की ऐतिहासिक पुण्य धरा पर परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं उनके सुयोग्य शिष्य मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज की मंगल प्रेरणा से 1 सितम्बर 1996 को श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान अन्तर्गत आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास का बीजारोपण हुआ, भवन का शिलान्यास हुआ और मात्र 8-9 माह के अल्प समय में ही छात्रावास भवन की प्रथम मंजिल के 35 कमरे व भूतल का विशाल ध्यान कक्ष निर्मित होकर उसमें छात्रावास का शुभारम्भ, 20 जुलाई 1997 को वीर शासन जयंती एवं गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर, कर दिया गया। 10वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को शास्त्री कक्षा (बी.ए.) तक के 5 वर्षीय अध्ययन हेतु प्रवेश दे दिया गया।

वर्तमान में छात्रावास भवन की तीनों मंजिलें व सम्पूर्ण परिसर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। भवन में छात्रों हेतु 100 कमरे, 6 शिक्षण कक्ष, वाचनालय कक्ष, अतिथि कक्ष, ध्यान कक्ष, समस्त छात्रों के एक साथ भोजन करने की क्षमतावाला विशाल हॉल एवं सुसज्जित भोजनशाला पूर्ण रूप से तैयार है तथा इनका उपयोग वर्तमान में रह रहे 135 छात्रों द्वारा हो रहा है। इसके अतिरिक्त दो मंजिला आधुनिक सुविधाओं से युक्त अधिष्ठाता निवास भी गत वर्ष बनकर तैयार हो चुका था। जिसमें छात्रावास के अधिष्ठाता एवं छात्रों को आगमानुकूल धार्मिक शिक्षा देकर मार्ग प्रशस्त करने वाले ख्यातिप्राप्त विद्वान श्री रतनलाल जी बैनाड़ा, अन्य ब्रह्मचारी शिक्षक गण एवं जाने-माने जन कवि तथा छात्रावास के उपअधिष्ठाता श्री राजमल जी बेगस्या निवास करते हैं। ऐसे शानदार और दर्शनीय भवन को इतने कम समय में पूरा करने का श्रेय श्री गणेश जी राणा की अध्यक्षता में गठित सुयोग्य प्रबन्धसमिति एवं उसके दो सदस्य श्री माणकचन्द्र जी मुशर्रफ एवं श्री रतनलाल जी नृपत्या को जाता है।

संस्थान का मूल उद्देश्य आचार्य कुन्दकुन्द देव की परंपरा में आगमानुसार छात्रों को तथा अन्य श्रावकों को उसके कर्तव्यों एवं संस्कारों से अलंकृत करते हुए श्रमण संस्कृति की रक्षा हेतु उपासक विद्वानों को तैयार करना है, जिसके लिए संस्थान में सुयोग्य विद्वानों एवं ब्रह्मचारी भाईयों द्वारा प्रवचन कला का प्रशिक्षण, जैन दर्शन का पठन-पाठन एवं व्रतविधनादि कराने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसमें संस्थान के निर्देशक तथा दिगम्बर जैन संस्कृत कॉलेज, जयपुर के प्राचार्य एवं देश के जाने-माने विद्वान श्री शीतलचन्द्र जी जैन भी समर्पित एवं वात्सल्य भाव से स्वयं छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। समय-समय पर बाहर से विद्वानों को बुलाकर भी छात्रों को प्रशिक्षित कराया जाता है। छात्रावास के सभी छात्र लौकिक एवं नियमित शिक्षा प्राप्त करने हेतु श्री दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय जयपुर में प्रतिदिन जाते हैं।

छात्रावास में 10वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को विधिवत् साक्षात्कार लेकर प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र 5 वर्ष छात्रावास में रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री (बी.ए.) की उपाधि प्राप्त करने के साथ-साथ छात्रावास में प्रात: सांय धर्मग्रन्थों की शिक्षा प्राप्त कर योग्य विद्वान बनकर समाज को समर्पित होते हैं। छात्रों को प्रात: सायं एवं रात्रि को छात्रावास में प्रार्थना, ध्यान, पूजन, जैनदर्शन का अध्ययन उपर्युक्त वर्णित विद्वानों एवं योग्य ब्रह्मचारीयों द्वारा कराया जाता है। ब्रह्मचारी भाईयों में श्री संजीव भैया, श्री महेश भैया, श्री भरत भैया आदि उच्च कोटि के समर्पित विद्वान हैं। संस्थान और यहाँ के छात्र आपकी सेवाओं का भरपूर लाभ ले रहे हैं, तथा इन्हें पाकर धन्य हैं। व्यवस्थापक एवं अधीक्षक के रूप में श्री सुकान्त जी व संस्कृत शिक्षक के रूप में श्री राकेश जी की सेवायें भी उल्लेखनीय हैं।

समय की माँग को देखते हुए छात्रों को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। संस्कृत एवं अंग्रेजी की अतिरिक्त कक्षायें लगाकर छात्रों को ये दोनों विषय सुदृढ़ कराये जाते हैं। छात्रों को खेल के शानदार मैदान के साथ-साथ खेल की आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है। वाचनालय एवं पुस्तकालय की भी सुविधा उपलब्ध है। यहाँ छात्रों को भोजन-वस्त्र, निवास, बिजली-पानी, फीस, कॉलेज आने-जाने हेतु वाहन सुविधा आदि सब नि:शुल्क उपलब्ध है।

हम गर्व से कह सकते हैं कि यह छात्रावास आज देश में दिगम्बर जैन जगत की शान है और यहाँ के अध्ययन कर निकलने वाले छात्र निर्विवाद रूप से भारतीय संस्कृति और सभ्यता में ढले हुये आदर्श तथा संस्कारित व्यक्ति के रूप में ही देश व धर्म की सेवार्थ निकलते हैं।

अल्प समय में छात्रावास की शानदार प्रगति के पीछे निर्ग्रन्थ धर्म गुरुओं का आशीर्वाद एवं प्रेरणा भी रही है। संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ श्री 108 विद्यासागर जी महाराज, मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज ससंघ का तो स्थापना से लेकर निरन्तर आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन मिलता ही रहा है, साथ ही अन्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छात्रावास में पधारने वाले संतों ने भी छात्रावास की प्रगति एवं उद्देश्यों को देखते हुये भरपूर आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया है। छात्रावास में गतवर्ष आचार्य श्री 108 बाहुबली सागर जी महाराज ससंघ, उपाध्याय श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ, मुनि श्री 108 तरुणसागर जी महाराज ससंघ, उपाध्याय श्री 108 समतासागर जी महाराज, मुनि श्री 108 क्षमासागर जी महाराज, मुनिश्री 108 वरदत्तसागर जी महाराज ससंघ, मुनि श्री 108 रविनन्दी जी महाराज आदि पधारे और छात्रों से सीधी बातचीत की तथा उनके ज्ञानार्जन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए छात्रों को एवं संस्थान को भरपूर आशीर्वाद दिया। आचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी महाराज, आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी महाराज, परम विदुषी आर्यिका सुपार्श्वमति जी व उनके संघस्थ साधुजनों का भी छात्रावास को आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

छात्रावास के छात्र कॉलेज जाकर जो लौकिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उनका गतवर्ष का परीक्षा परिणाम भी श्रेष्ठ रहा जो निम्न प्रकार है :

कक्षा	छात्र सं.	उत्तीर्ण			अनुत्तीर्ण	परीक्षा फल
		प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी		
कनिष्ठ उपाध्याय	27	15	12	-	-	100%
वरिष्ठ उपाध्याय	27	08	17	01	01	96%
शास्त्री प्रथम वर्ष	21	20	01	-	-	100%
शास्त्री द्वितीय वर्ष	22	08	13	01	-	100%
शास्त्री तृतीय वर्ष	16	06	09	-	01	94%
आचार्य प्रथम वर्ष	01	01	-	-	-	100%

इस वर्ष जुलाई 2002 में 37 छात्रों को परीक्षा एवं साक्षात्कार लेने के बाद नवीन प्रवेश दिया गया जिन 15 छात्रों ने शास्त्री तृतीय वर्ष उत्तीर्ण कर ली उसमें से 3 छात्रों ने आचार्य में प्रवेश लिया है, दो छात्र बी.एड्. करने के लिये दिल्ली, एवं श्रृंगेरी (कर्नाटक) चले गये हैं। दो छात्रों ने एम.ए. में प्रवेश लिया है, शेष छः छात्रों की सेवायें विभिन्न जैन कॉलेज एवं जैन संस्थाऐं प्राप्त कर रही हैं। वर्तमान में छात्रावास में अध्ययनरत छात्रों की स्थिति निम्न प्रकार है :

कक्षा	गत वर्ष की स्थिति (छात्र संख्या)	वर्तमान स्थिति (छात्र संख्या)
कनिष्ठ उपाध्याय	27	37
वरिष्ठ उपाध्याय	27	27
शास्त्री प्रथम वर्ष	21	25
शास्त्री द्वितीय वर्ष	22	20
शास्त्री तृतीय वर्ष	16	21
आचार्य प्रथम वर्ष	01	03
आचार्य द्वितीय वर्ष	00	01
	114	134

इसके अतिरिक्त 8 अन्य साधर्मी युवक, जो केवल शिक्षण ही लेना चाहते हैं, भी छात्रावास में नियमित रूप से अध्ययन कर रहे हैं।

संस्थान द्वारा छात्रावास के छात्रों को ही संस्कारित नहीं किया जा रहा है अपितु समाज में या श्रावकों में धर्म के प्रति आ रही उदासीनता को दूर कर उनके जीवन में सम्यक श्रद्धा जागृत करते हुये उन्हें पूजन, ध्यान, जैनदर्शन आदि का प्रशिक्षण देश के विभिन्न स्थानों पर शिविर लगा-लगाकर दिया जाता है। गतवर्ष के शिविरों एवं उनसे लाभान्वितों का विवरण निम्न प्रकार है :

क्र.	स्थान	प्रांत	शिविरावधि	शिवि. सं.
01	शिवपुरी	मध्यप्रदेश	11 अक्टू. से 19 अक्टू.	750
02	भोपाल	मध्यप्रदेश	21 अक्टू. से 29 अक्टू.	350
03	मेरठ	उत्तरप्रदेश	21 अक्टू. से 30 अक्टू.	750
04	कोटा	राजस्थान	21 दिस. से 31 दिस.	2200
05	सोलापुर	महाराष्ट्र	02 मई से 14 मई	350
06	तारंगा जी	गुजरात	19 मई से 28 मई	450
07	मडावरा	उत्तरप्रदेश	15 मई से 25 मई	350
08	गुना	मध्यप्रदेश	25 मई से 1 जून	750
09	कृष्णानगर	दिल्ली	5 जून से 15 जून	600
10	कैलाश नगर	दिल्ली	16 जून से 23 जून	750
11	गाँधी नगर,	दिल्ली	16 जून से 23 जून	575
12	आगरा,छीपीटोला	उत्तरप्रदेश	20 जून से 30 जून	550
13	रेवाड़ी	हरियाणा	14 अप्रैल से 22 अप्रैल	130
14	मांतीतुगी	महाराष्ट्र	30 मई से 5 जून	300
15	बारामती	महाराष्ट्र	8 जून से 16 जून	450
16	उदयपुर	राजस्थान	21 जून से 29 जून	400
17	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश	22 जून से 30 जून	225
18	विश्वास नगर,	दिल्ली	23 जून से 30 जून	400

यहाँ के विद्वान छात्र पर्युषण एवं अन्य पर्वों पर प्रवचनार्थ भी देशभर में जाते हैं। गत वर्ष दसलक्षण पर्व में प्रवचन हेतु संस्थान के छात्रों एवं सम्बन्धित 129 विद्वानों को विभिन्न स्थानों पर भेजा गया था। इस वर्ष भी अभी तक बहुसँख्या में विभिन्न स्थानों से पत्र प्राप्त हो चुके हैं। आशा है कि इस वर्ष और भी अधिक विद्वानों को भेज सकेंगें।

संस्थान में छात्रों को सभी सुविधा निःशुल्क होने के कारण संस्थान पर आर्थिक भार स्वाभाविक है। संस्थान के लेखे यथा समय अंकेक्षित कराये जाकर आयकर विभाग को विवरण प्रस्तुत किया जाता है। संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है। यह भी उल्लेखनीय है कि यहाँ दिए गये सहयोग (दान) के एक-एक पैसे का सदुपयोग होता है तथा दातार को ज्ञानदान, आहारदान,औषधदान एवं अभयदान (चारों प्रकार के दान) का लाभ प्राप्त होता है। अतः अनुरोध है कि संस्थान को अधिक-से-अधिक तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर जीवन्त प्रतिमायें संस्कारित करने एवं जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में सहभागी बन पुण्यार्जन करें।

मानद् मंत्री

श्री दिग. जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाचार

समन्तभद्र विद्या विहार का भव्य शुभारंभ

नन्दनवन धरियावाद जिला उदयपुर (राज.) में जैन दर्शन के महान संत दूसरी सदी के वाग्भट आचार्य समन्तभद्र के नाम से एक शिक्षण संस्थान 2 जुलाई से प्रारंभ किया गया है।

परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज की पट्ट परम्परा के द्वितीय पट्टाधीश आचार्य शिवसागर जी महाराज की शिष्या, जैन सिद्धान्त एवं दर्शन की मर्मज्ञ विदुषी आर्यिका श्री 105 विशुद्धमति माताजी (सतना) ने अपनी द्वादश वर्षीय सल्लेखना के अन्तिम 5 वर्ष नन्दनवन की भूमि पर साधना करते हुए समाधि पूर्वक मरण किया।

इसी तप:पूत भूमि पर आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के आशीर्वाद से संस्थापक श्री क्षेत्र सिद्धान्त तीर्थ संस्थान नन्दनवन ने संस्था के अन्तर्गत समन्तभद्र विद्या विहार शिक्षण संस्था को प्रारंभ किया है।

संस्थापक श्री हंसमुख जैन प्रतिष्ठाचार्य के अनुसार निकट भविष्य में इस शिक्षण संस्था को 300 बीघा जमीन पर फैला कर उच्चतम शिक्षा, छात्रावास आदि को रूप दिया जावेगा। इस शिक्षण में एक कालांश जैन दर्शन की शिक्षा को अनिवार्य रखा गया है।

इस वर्ष इस शिक्षण संस्था में 175 बालकों ने प्रवेश लिया है, संस्था तक लाने ले जाने के लिए वाहन सुविधा उपलब्ध है।

शिक्षण के साथ-साथ बालकों को नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

कलिकाल के बढ़ते हुए इस भौतिक माहौल में सुख-शांति एवं संतोष पूर्वक निरापद जीवन कैसे जी सकें, शिक्षा के साथ-साथ कलाओं की सुगंधी जीवन में कैसे बढ़ सके इन सम्पूर्ण विषयों को मध्यगत रखते हुए अनुशासन, स्वच्छता एवं सादगी के साथ इस संस्था ने शिक्षण देने का संकल्प किया है।

वर्तमान में कक्षा तीन तक के अध्ययन कराये जा रहे हैं। प्रतिवर्ष 1-1 कक्षा की वृद्धि करते हुए कक्षा 6 से बालक-बालिकाओं के पृथक् विभाग के साथ-साथ छात्रावास सुविधा भी दिये जाने का प्रावधान है।

ए.के. जैन
जिला उदयपुर (राज.)

धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

धरियावाद जिला उदयपुर में परम पूज्य आर्यिका सुप्रकाशमती माताजी के सानिध्य में एवं प्रतिष्ठाचार्य श्री हंसमुख जी जैन के निर्देशन में छह दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर दिनाँक 22 से 27 जून तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में स्थानीय के अतिरिक्त 22 गाँवों के शिविरार्थियों ने भाग लिया शिविरार्थियों की संख्या 450 रही शिक्षणों में जैन धर्म 1,2,3,4 भाग, छहढाला एवं श्रावक संस्कार विषयों का अध्ययन कराया गया।

पूज्य माताजी सुप्रकाशमती जी, प्रतिष्ठाचार्य श्री हंसमुख जैन, पं. भागचन्द्र जी जैन, पं. आदेश्वर जी, पं. मोतीलाल जी सहित काफी विद्वज्जनों ने अध्यापन सेवाएँ दी। शिविर संयोजन श्री शांतिलाल जी डागरिया सहित सम्पूर्ण टीम ने शिविर संयोजन का भार सम्भाला।

शिविरार्थियों की सेवामें नि:शुल्क भोजन एवं पाठ्य पुस्तकों की सुविधा दी गयी।

विदित रहे पिछले 5 वर्षों से ग्रीष्मावकाश में इसी तरह के शिक्षण शिविर धरियावाद में लगाए जा रहे हैं।

शांतिलाल जैन, धरियावद

अजमेर के महावीर सर्किल पर निर्मित भव्य अहिंसा स्तूप का लोकार्पण

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि भगवान् महावीर के अहिंसा तथा जीओ और जीने दो के संदेश को देश के कोने-कोने के साथ-साथ देश की सीमा से बाहर पहुँचाएं। श्री गहलोत बुधवार को दिनांक 31.7.2002 को मध्याह्न अजमेर में महावीर सर्कल पर नगर सुधार न्यास द्वारा देश में एक मात्र निर्मित अहिंसा स्तूप के लोकार्पण के पश्चात् आयोजित विशाल समारोह को संबोधित कर रहे थे।

हीरा चंद जैन

चतुर्थ आत्म-साधना शिक्षण शिविर

दिनांक - 1-12-2002 से 8-12-2002

अत्यन्त हर्ष का विषय है परमपूज्य आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी के पादमूल में स्थित, प्राकृतिक छटा से विभूषित, उदासीन आश्रम इसरी बाजार में बाल ब्र. पवन भैया, कमल भैया, विद्वान भाई श्री मूलचन्द्र जी लुहाड़िया आदि के सान्निध्य में चतुर्थ आत्म-साधना शिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है। इस शिविर का मुख्य लक्ष्य होगा-

इस बहुमूल्य पर्याय का अवशिष्ट समय किस प्रकार बिताया जाये ताकि आत्मा का विकास हो सके।

समस्त इच्छुक धर्मानुरागी भाई बहनों से अनुरोध है कि 15-11-2002 तक आश्रम में लिखित सूचना भेज देवें ताकि आवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

1. श्री नरेश कुमार जैन, सूरज भवन, स्टेशन रोड़, पटना फोन नं. 231693 2. श्री माणिक चंद जैन गंगवाल, मे. माणिक चंद, अशोक कुमार कुंजलाल स्ट्रीट अपर बाजार राँची, (झारखंड) फोन नं. (आ.) 203796, 315420 3. श्री पारसमलजी पाटनी, एफ ई./285 (टैंक नं. 12 के निकट) साल्ट लेक सिटि, कोलकाता-700091 फोन नं. - 3349032 4. श्रीमती हीरामणी छाबड़ा ''पंकज' 188/1 जी, मनिकतल्ला मेंन रोड, कोलकाता 700054 फोन - 3580755

निवेदक -

ट्रस्टी व कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन शांति निकेतन उदासीन आश्रम

इसरी बाजार (गिरिडीह) झारखंड फोन - 06558-33158

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्षायोग : चातुर्मास 2002

साहित्यमनीषी ज्ञानवारिधि दिगम्बर जैनाचार्य प्रवर श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज के द्वारा दीक्षित-शिक्षित जैन श्रमण-परम्परा के आदर्श सन्तशिरोमणि जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज तथा उनके द्वारा दीक्षित शिष्यों का वीर निर्वाण संवत् 2528, विक्रम संवत् 2059, सन् 2002 का वर्षायोग चातुर्मास विवरण :

1. (1) संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 श्री विद्यासागर जी महाराज, (2) मुनि श्री समयसागर जी महाराज, (3) मुनि श्री योगसागर जी महाराज, (4) मुनि श्री पवित्रसागर जी महाराज, (5) मुनि श्री विनीतसागर जी महाराज, (6) मुनि श्री निर्णय सागर जी महाराज, (7) मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी महाराज , (8)मुनि श्री प्रवचनसागर जी महराज, (9) मुनि श्री प्रसादसागर जी महाराज, (10) मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, (11) मुनि श्री अक्षयसागर जी महाराज, (12) मुनि श्री प्रशस्तसागर जी महाराज, (13) मुनि श्री पुराणसागर जी महाराज, (14) मुनि श्री प्रयोगसागर जी महाराज, (15) मुनि श्री प्रबोधसागर जी महराज, (16) मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज, (17) मुनि श्री प्रभातसागर जी महाराज, (18)मुनि श्री चन्द्रसागर जी महाराज, (19) मुनि श्री सम्भवसागर जी महाराज, (20) मुनि श्री अभिनन्दन सागर जी महाराज, (21) मुनि श्री सुमतिसागर जी महाराज, (22) मुनि श्री पद्मसागर जी महाराज, (23) मुनि श्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज, (24) मुनि श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज, (25) मुनि श्री श्रेयांससागर जी महाराज, (26) मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज, (27) मुनि श्री विमलसागर जी महाराज, (28) मुनि श्री अनन्तसागर जी महाराज, (29) मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज (30) मुनि श्री शान्तिसागर जी महाराज, (31) मुनि श्री कुन्थुसागर जी महाराज, (32) मुनि श्री अरहसागर जी महाराज, (33) मुनि श्री मल्लिसागर जी महाराज, (34) मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज, (35) मुनि श्री नमिसागर जी महाराज, (36) मुनि श्री नेमीसागर जी महाराज एवं (37) मुनि श्री पार्श्वसागर जी महाराज

   कुल : (1 आचार्यश्री + 36 मुनि महाराज) एवं बाल ब्रह्मचारीगण

   नोट - (1) आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा दीक्षित प्राय: सभी साधुगण बाल ब्रह्मचारी हैं। जैन श्रमण-परम्परा के ज्ञात इतिहास/जानकारी में यह प्रथम श्रमण संघ है जिसमें वर्तमान दीक्षित 182 साधुगण एवं आर्यिकाएँ भी प्राय: बाल ब्रह्मचारिणी हैं। (2) आचार्यश्री द्वारा ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करने वाले देश के विभिन्न नगरों में लगभग 100 बाल ब्रह्मचारी भाई एवं 300 बाल ब्रह्मचारिणी बहनें भी चातुर्मास कर रही हैं। (3) आचार्यश्री के द्वारा प्रतिदिन प्रात: काल 'षट्खंडागम' (वर्गणाखण्ड) पुस्तक नं. 12 का तथा अपराह्नकाल 'समयसार' ग्रन्थ का स्वाध्याय कराया जाता है। (4) प्रत्येक रविवार को अपराह्न 3 बजे से आचार्यश्री जी का सार्वजनिक प्रवचन होता है। (5) रावण के पुत्र आदि साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों की निर्वाणस्थली, रेवा-नर्मदा नदी के तट पर अवस्थित सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावार तक पहुँचने के लिए मध्य रेलवे के दिल्ली-मुंबई मार्ग (व्हाया-इटारसी (102 कि.मी.)-खण्डवा (135 कि.मी.) पर निकटवर्ती रेल्वे स्टेशन हरदा से 22 कि.मी. है। (6) नेमावर हेतु इन्दौर 130 कि.मी. (अच्छे रोड़ से आष्टा होकर 175 कि.मी.) भोपाल (व्हाया नसरुल्लागंज) 150 कि.मी. (अच्छे रोड़ से आष्टा होकर 165 कि.मी.), खातेगाँव 14 कि.मी. एवं संदलपुर 9 कि.मी. से वाहन द्वारा पहुँचा जा सकता है। (7) नेमावर से सिद्धवर कूट 210 कि.मी., ऊन (पावागिरी) 260 कि.मी., बावनगजा (बड़वानी), 360 कि.मी. (व्हाया इन्दौर) है। सतवास-पुनामा डेम होकर जाने से प्रत्येक की 55 कि.मी. दूरी कम हो जाती है। मक्सी जी 210 कि.मी. बनेड़ियाजी 160 कि.मी. एवं गोम्मटगिरी 130 कि.मी. दूरी पर अवस्थित है।

   चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन रेवा सिद्धोदय-सिद्धक्षेत्र नेमावर- 455336 (देवास) म.प्र. फोन-कार्यालय (07274) 77818, 77990

   सम्पर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष- सुन्दरलाल जैन बीड़ी वाले, 39/2, न्यू पलासिया, इन्दौर-1 फोन-(0731) (नि.) 530645 (का.)536765 (2) कार्याध्यक्ष- पद्मकुमार काला, श्री महावीर दाल मिल्स, बानापुरा-461221 होशंगाबाद (म.प्र.), फोन-(07570)(नि.)24655 (का.) 25155, 25255 (3) महामंत्री-बी.एल.जैन , देना बैंक के सामने, हरदा-46133 फोन-(07577)23003 (4)कोषाध्यक्ष- रमेशचन्द्र काला नवरंग वस्त्र भण्डार, भगवान महावीर मार्ग, खातेगाँव (देवास) फोन-(07274) (नि.) 32713 (दु.)32228

2. (1)मुनि श्री नियमसागर जी महाराज (2) मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज (3) मुनि श्री वृषभसागर जी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुल : 3 (3 मुनि महाराज) एवं बाल ब्रह्मचारीगण
चातुर्मास स्थली : महावीर भवन, भिगवन चौक, बारामती-422103 (पूना) महाराष्ट्र।
सम्पर्क सूत्र : (1) बालचन्द्र नानचन्द संघवी, आनन्द नगर, पो.बा. नं. 11, बारामती-फोन (02112) 22426, 22618, (2) राजकुमार हीराचन्द्र शहा, 31, महावीर पथ, बारामती-24473 (का.), 22474 (नि.), (3)प्रशान्त संघवी, अरिहंत जनरल स्टोर्स, भिगवन चौक, बारामती-24753 (का.), 25519 (नि.), (4) जयकुमार पहाड़े-21170, 27170

3. (1) मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज (2) मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज (दीक्षा गुरु-ऐलाचार्य श्री नेमीसागर जी महाराज)
कुल : 2 मुनि महाराज + बाल ब्रह्मचारीगण
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन बंजी ठोलिया धर्मशाला, घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 राजस्थान फोन-(0141) 564932
सम्पर्क सूत्र : (1)हेमन्त सोगानी, एडवोकेट 2454, मरुजी का चौक, एम.एस. बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर मो. 98290-64506, फोन-(0141)560506, 570178 (2)भट्टारक जी की नसिया, सवाई रामसिंह रोड़,जयपुर फोन - 381586, 218554 (3) पारस जैन, मो. 98290-54842 फोन नं. 705259, 705266

4. (1) मुनि श्री गुप्तिसागर जी महाराज
कुल - 1 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन गुप्तिधाम, जी.टी. करनाल रोड, मु. पो. गन्नौर-131001 (सोनीपत), हरियाणा फोन-(01264) 61961

5. (1) मुनि श्री सुधासागर जी महाराज (2) क्षुल्लक श्री गम्भीरसागर जी महाराज (3) क्षुल्लक श्री धैर्यसागर जी महाराज
कुल - 3 (1 मुनि महाराज +2 क्षुल्लक महाराज) एवं बाल ब्रह्मचारीगण
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बिजौलिया मु.पो. बिजौलिया-311602 तहसील मांडलगढ़ (भीलबाड़ा) राजस्थान
सम्पर्क सूत्र : (1) भंवरलाल पटवारी, जैन भवन-(01489)36042(2) नेमीचंद दिनेश कुमार काला, काला भवन-36029 (3) सुरेश लुहाड़िया-36381

6. (1) मुनि श्री समतासागर जी महाराज (2) मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज (3) ऐलक श्री निश्चय सागर जी महाराज
कुल : 3 (2 मुनि महाराज + 1 ऐलक महाराज) बाल ब्रह्मचारीगण
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन,सेठ छदामीलाल का जैन मन्दिरजी, जैन नगर, बस स्टेण्ड के पास, फिरोजाबाद-283203 (उत्तरप्रदेश)
सम्पर्क सूत्र : (1) विजय कुमार जैन देवता-(05612) 98370, 25931 (2) प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन-46146 (3) कश्मीरचन्द्र जैन मो. 98370-57611 (4) पुष्पेन्द्र जैन 'झिलमिल' मो. 98370-50737, फोन - 42099, 46493

7. (1) मुनि श्री स्वभावसागर जी महाराज
कुल - 1 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, जुरेहरा (भरतपुर) राजस्थान

8. (1) मुनि श्री समाधिसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र- नवागढ़ (उखलद),पो. पिंपरी, जिला-परभणी (महाराष्ट्र) फोन-(02452)48901 फेक्स: 21880
सम्पर्क सूत्र : (1) मोतीलाल पाटनी, पाटनी निवास, जूना मोढा, नांदेड-431604 (महा.) फोन-(02462)42407
(2) मंत्री-बसंतराव चंद्रनाव्य, अंबुरे, अंबुरे निवास, विद्यानगर परभणी-431401 (महा.) फोन (02452)23477, 21880, 21909

9. (1) मुनि श्री सरलसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर जी, पिपरई गांव- 473 440 (गुना) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) नाथूराम सुरेशचन्द्र जैन, किराना मर्चेण्ट, पिपरई गांव (गुना) म.प्र. (07541)47223, 47208, 47272

10. (1) मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन महावीर स्कूल, रेलवे स्टेशन के पास, शिमोगा-कर्नाटक
संपर्क सूत्र : (1) एम. जगनागन, श्रुतकेवली विशाखाचार्य आश्रम, तपोनिलयं, कुंदकुंदनगर, तमिलनाडू (04183) 25912, 27018 (2) बुधराज कासलीवाल-पाण्डिचेरी-(0413)33537, 333536 (3) सोहनलाल कोठारी,सेलम (0427)212060, 212401, 212179

11. (1) मुनि श्री उत्तमसागर जी महाराज (2) मुनि श्री पायसागर जी महाराज
कुल : 2 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महातपुर-तालुका-माढा (सोलापुर) महाराष्ट्र
संपर्क सूत्र : (1) देशभूषण बारे, महातपुर, फोन-(02183) 34192, 34344

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

12. (1) मुनि श्री चिन्मयसागर जी महाराज (2) मुनि श्री पावनसागर जी महाराज
कुल : 2 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, पडाव रोड, मण्डला- 481661, मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) रायसेठ नन्दन कुमार जैन, फोन (07642)(नि.)50012 (दु.)50723 (2) मिट्ठनलाल जैन- 50156 (3) जयकुमार जैन-50085 (4) कन्छेदीलाल जैन 52551 (5) रमेश चन्द्र जैन - 50930

13. मुनि श्री सुखसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, नागनूर, तालुका-गोकाक, जिला वेलगांव, कर्नाटक
संपर्क सूत्र : वी. जे. गंगई- मझगांव (बेलगांव) (0831)480625, 488823 (2) ए.ए.नेमन्नावर, बेलगांव-(0831)452712

14. मुनि श्री मार्दवसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, आदीश्वरगिरि, नोहटा 477204 (दमोह) मध्यप्रदेश
सम्पर्क सूत्र : (1) डॉ. सन्तोष गोयल, फोन- (07606) 57224, 57222, (2) भाटिया जी- 57261, 97261

15 . (1) मुनि श्री अपूर्वसागर जी महाराज (2) मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज
कुल - 2 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मु. पो. कोथली- 416 101, तालुका-शिरोल (कोल्हापुर) महाराष्ट्र
संपर्क सूत्र : (1) दीपक बोरगावे, 1195, राजलक्ष्मी 9वीं लाईन, जयसिंगपुर (कोल्हापुर) महाराष्ट्र फोन (02322) (नि.)27474(का.)28353 (2) बसन्त भीमगोंडा पाटिल, कोथली (02322) 25664 (3) ऋषभ पाटिल - 42243, (4) अभय कुमार इंगले- 42254, (5) अन्ना साहेब चौगुले- 42262

16 . (1) मुनि श्री प्रशान्तसागर जी (2) मुनि श्री निर्वेगसागर जी
कुल - 2 मुनि महाराज
चातुर्मास स्थली : सन्त निवास, महावीर विहार, भगवान महावीर मार्ग, स्टेशन रोड़ गंजबासौदा- 464 221 (विदिशा) मध्यप्रदेश फोन- (07594) 20464
संपर्क सूत्र - (1) गुलाबचन्द्र जैन एडवोकेट, नेहरु चौक, गंजबासौदा- (07594) 20277, 20648, 22190 (2) सिंघई प्रभुदयाल जैन, महावीर मार्ग, गंजबासौदा (3) सागरमल जैन-20556 (4) श्रेयमल जैन 21796

17. मुनि श्री अजितसागर जी महाराज (2) ऐलक श्री निर्भयसागर जी महाराज
कुल - 2 (1 मुनि महाराज + 1 ऐलक महाराज)
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन प्राचीन मन्दिर जी, महावीर चौक, बैरसिया - 463 106 (भोपाल) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष- राजेन्द्र जैन, महावीर जनरल स्टोर्स, बाल विहार, फोन (07565)62412, 62237 (2) अजित जैन-62327 (3) सुभाष जैन- 62483 (4)62327 (5)62268 (6) 62217

18. (क)(1) आर्यिका श्री गुरुमति जी (2) आर्यिका श्री उज्ज्वलमति जी, (3) आर्यिका श्री चिन्तनमति जी (4) आर्यिका श्री सूत्रमति जी (5) आर्यिका श्री शीतलमति जी (6) आर्यिका श्री सारमति जी (7) आर्यिका श्री साकारमति जी (8) आर्यिका श्री सौम्यमति जी (9) आर्यिका श्री सूक्ष्ममति जी (10) आर्यिका श्री शान्तिमति जी (11) आर्यिका श्री सुशान्तमति जी।

(ख) (1) आर्यिका श्री दृढ़मति जी (2) आर्यिका श्री पावनमति जी (3) आर्यिका श्री साधनामति जी (4) आर्यिका श्री विलक्षणामति जी (5) आर्यिका श्री वैराग्यमति जी (6) आर्यिका श्री अकलंकमति जी (5) आर्यिका श्री निकलंकमति जी (8) आर्यिका श्री आगममति जी (9) आर्यिका श्री स्वाध्यायमति जी (10) आर्यिका श्री प्रशममति जी (11) आर्यिका श्री मुदितमति जी (12) आर्यिका श्री सहजमति जी (13) आर्यिका श्री संयममति जी (14) आर्यिका श्री सत्यार्थमति जी (15) आर्यिका श्री समुन्नतमति जी (16) आर्यिका श्री शास्त्रमति जी (17) आर्यिका श्री सिद्धमति जी।

(ग) (1) आर्यिका श्री ऋजुमति जी (2) आर्यिका श्री सरलमति जी (3) आर्यिका श्री शीलमति जी।

(घ) (1) आर्यिका श्री तपोमति जी (2) आर्यिका श्री सिद्धान्तमति जी (3) आर्यिका श्री नम्रमति जी (4) आर्यिका श्री पुराणमति जी (5) आर्यिका श्री उचितमति जी।

(ङ) (1) आर्यिका श्री उपशान्तमति जी (2) आर्यिका श्री ऊँकारमति जी।

(च) (1) आर्यिका श्री अकम्पमति जी (2) आर्यिका श्री अमूल्यमति जी (3) आर्यिका श्री आराध्यमति जी (4) आर्यिका श्री अचिन्त्यमति जी (5)आर्यिका श्री अलोल्यमति जी (6) आर्यिका श्री अनमोलमति जी (7) आर्यिका श्री आज्ञामति जी (8) आर्यिका श्री अचलमति जी (9) आर्यिका श्री अवगतमति जी।

कुल : 47 आर्यिकाएँ + 55 बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन चन्दाप्रभु बलात्कारगण मन्दिर जी, गाँधी चौक, चावली बाजार कारंजा (लाड़)- 444105 (वाशिम) महाराष्ट्र
संपर्क सूत्र : (1) जगदीश चौरे, राहुल एस.टी.डी. गाँधी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौक कारंजा, फोन - (07256) 22641, 22909 (2) अतुलजी जैन, महात्मा फुले चौक, भगवान महावीर मार्ग-23956 (3) डोजस गुरुजी, राजपुरा (4) मनोहर भाऊ डाकोरे, गाँधी चौक- 22764, 22164 (5) शशिकान्त चौरे-22711 (6)प्रदीप जैन-22682, 22642 (5) प्रमोद कुमार रुइवाले-22415

19. (1) आर्यिका श्री मृदुमति जी (2) आर्यिका श्री निर्णयमति जी (3) आर्यिका श्री प्रसन्नमति जी।
कुल : 3 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला, वर्णी कालोनी, सागर- 470002, मध्यप्रदेश।
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष- निर्मल कुमार जैन पटना वाले (07582)23031 (2) नाथूराम जैन पटनावाले-23056 (3) प्रमोद कुमार गुलाबचन्द्र पटनावाले-35469 (4) राकेश जैन 22643 (6) महेन्द्र सोधिया 23735

20. (1) आर्यिका श्री सत्यमति जी (2) आर्यिका श्री सकलमति जी
कुल : 2 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली - श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर जी, मु. प्रो. पहाड़ी-निवार (कटनी) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र - (1) रतनचन्द्र जैन (2) देवचन्द्र जैन (3) सुरेशचन्द्र जैन- (07622)64205 (4) विजय कुमार जैन-64206

21. (1) आर्यिका श्री गुणमति जी (2) आर्यिका श्री कुशलमति जी (3) आर्यिका श्री धारणामति जी (4) आर्यिका श्री उन्नतमति जी
कुल : 4 आर्यिकाएँ +बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर धर्मशाला, धैतल गली, भगवान महावीर मार्ग, सिरोंज-464 228 (विदिशा)
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष- शीलचन्द्र जैन बगरौदा वाले, किराना व्यापारी, छोटा बाजार- (दु.) 53068(नि.), 53328(वि.) (2) मंत्री-जितेन्द्र कुमार जैन कोठावाले, कठाली बाजार-(07591) (नि.) 52881, (दु.) 53293 (3) भूपेन्द्र कुमार जैन, चाँदनी चौक, जवाहर बाजार (नि.) 53050 (दु.) 53850 (4) रवीन्द्र जैन विजयराज-(नि.) 52696 (दु.) 53237

22. (1) आर्यिका श्री प्रशान्तमति जी (2) आर्यिका श्री विनम्रमति जी (3) आर्यिका श्री विनयमति जी (4) आर्यिका श्री अनुगममति जी (5) आर्यिका श्री संवेगमति जी (6) आर्यिका श्री शैलमति जी (7) आर्यिका श्री विशुद्धमति जी
कुल : 7 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बाजार मुहल्ला बरेला- 483001 (जबलपुर) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष-कन्छेदी लाल जैन (2) मोतीलाल जैन (3) विमल जैन (0761)890431 (4) अमित जैन - 890487, 890483, 890481

23. (1) आर्यिका श्री पूर्णमति जी (2) आर्यिका श्री शुभ्रमति जी (3) आर्यिका श्री साधुमति जी (4) आर्यिका श्री विशदमति जी (5)आर्यिका श्री विपुलमति जी (6) आर्यिका श्री मधुरमति जी (7) आर्यिका श्री कैवल्यमति जी (8) आर्यिका श्री सतर्कमति जी (9) आर्यिका श्री श्वेतमति जी
कुल : 9 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर के सामने, राघौगढ़-473226, (गुना) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष-प्रदीप जैन, कमला हार्डवेयर स्टोर्स, फोन (07544)62671, 62849(2) अशोक जैन, संजय ट्रेडर्स-62349 (3) 62516 (4)प्रशान्त जैन-62352

24. (क) (1) आर्यिका श्री अनन्तमति जी (2) आर्यिका श्री विमलमति जी (3) आर्यिका श्री निर्मलमति जी (4) आर्यिका श्री शुक्लमतिजी (5) आर्यिका श्री अतुलमति जी (6) आर्यिका श्री निर्वेगमति जी (7) आर्यिका श्री सविनयमति जी (8) आर्यिका श्री समयमति जी (9) आर्यिका श्री शोधमति जी (10) आर्यिका श्री शाश्वतमति जी (11) आर्यिका श्री सुशीलमति जी (12) आर्यिका श्री सुसिद्धमति जी (13) आर्यिका श्री सुधारमति जी।
(ख) (1) आर्यिका श्री आदर्शमति (2) आर्यिका श्री दुर्लभमति जी (3) आर्यिका श्री अन्तरमति जी (4) आर्यिका श्री अनुनयमति जी (5) आर्यिका श्री अनुग्रहमति जी (6) आर्यिका श्री अक्षयमति जी (7) आर्यिका श्री अमूर्तमति जी (8) आर्यिका श्री अखण्डमति जी (9) आर्यिका श्री अनुपममति जी (10) आर्यिका श्री अनर्घमति जी (11) आर्यिका श्री अतिशयमति जी (12) आर्यिका श्री अनुभवमति जी (13) आर्यिका श्री आनन्दमति जी (14) आर्यिका श्री अधिगममति जी (15) आर्यिका श्री अमन्दमति जी (16) आर्यिका श्री अभेदमति जी (17) आर्यिका श्री उद्योतमति जी।
कुल : 30 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें + 70 प्रतिभा मण्डल की ब्रह्मचारिणी बहनें
चातुर्मास स्थली : श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल एलोरा- 431102 तालुका खुलतावाद (औरंगाबाद) महाराष्ट्र फोन- (02437) 44491, 44432
संपर्क सूत्र : (1) अध्यक्ष-तनसुख लाल ठोले, मु.पो. सज्जनपुर (कसाबखेड़ा), तालुका खुलताबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(औरंगाबाद) (2) व्ही. ए. मनोरकर जैन, ज्ञानविद्या, प्लॉट नं. 59, नई गजानन कॉलोनी, गारखेड़ा,औरंगाबाद, फोन - (0240)442795 (3) विजयकुमार महीन्द्रकर जैन, छत्रपति नगर, गारखेड़ा, औरंगाबाद-441206

25. (1) आर्यिका श्री प्रभावनामति जी (2) आर्यिका श्री भावनामति जी (3) आर्यिका श्री सदयमति जी
कुल : 3 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, नौगामा (बांसवाडा) राजस्थान।
संपर्क सूत्र - (1) सेठ लक्ष्मीलाल - (02968) 20103 (2) सेठ सागरमल 20092 (3) सेठ बदामीलाल - 20093 (4) प्रदीप जैन-20084, 20048, (5) राजेश गाँधी-20035

26. (1) आर्यिका श्री आलोकमति जी (2) आर्यिका श्री सुनयमति जी
कुल : 2 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, बिलहरा राजा- 470051 (सागर) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) प्रकाशचन्द्र नीलेश कुमार जैन, कपड़ा व्यापारी, फोन (07584) 48344 (2) शीतलचन्द्र बड़कुल- 48329

27. (1) आर्यिका श्री अपूर्वमति जी (2) आर्यिका श्री अनुत्तरमति जी
कुल : 2 आर्यिकाएँ + बाल ब्रह्मचारिणी बहनें।
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, बनवार - 470663, तहसील-नोहटा (दमोह) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) मोहन लाल क्लाथ मर्चेण्ट, बनवार (07606)58235 (2) देवेन्द्र बमोरया - 58206 (3) लीलाधर जैन- 58225

28. ऐलक श्री दयासागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, बिजोरी मु.पो. बिजोरी, चरगवाँ रोड (जबलपुर) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) कमल कुमार जैन (07621) 64230, 34230 (2) सुजन कुमार जैन (3) मगनलाल जैन

29. ऐलक श्री नि:शंकसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर जी तिलक नगर, इन्दौर- 452001, मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र - (1) डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन- (0731) 490619 (2) प्रदीप गोयल - 491190 (3) भागचन्द्र लुहाड़िया- 490151

30. (1) ऐलक श्री उदारसागर जी महाराज (2) क्षुल्लक श्री नयसागर जी महाराज
कुल : 2 (1 ऐलक जी + 1 क्षुल्लक जी महाराज)
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी बाँसा-तारखेड़ा- 470672 (दमोह) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र : (1) माणिक चन्द्र जैन (2) सुरेश जैन, गल्ला व्यापारी- (07812)52248 (3) पद्म जैन, पद्म इलेक्ट्रिकल्स-52252

31. ऐलक श्री सिद्धान्तसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, खान्दू कॉलोनी (बांसवाड़ा) राजस्थान
संपर्क सूत्र - (1) अजित भाई फोन-(02992)(नि.) 41002 (दु.)42849 (2) अशोक जैन बैंकवाले (नि.) 43034 (का.)42965

32. ऐलक श्री सम्पूर्ण सागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी कुँआवाला, जैनपुरी रेवाड़ी-123401 (हरियाणा)
संपर्क सूत्र : (1) प्रधान-अजित प्रसाद जैन- (01274) 53645 (2) राजकुमार जैन- 55104 (3) देविन्दर जैन-(नि.) 25764 (का.) 54912

33. ऐलक श्री नम्रसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली : श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर मु.पो. मोहनगढ़ - 472101 (टीकमगढ़), मध्यप्रदेश
संकर्प सूत्र : (1) राजेन्द्र सिंघई- (07673)45752

34. ऐलक श्री प्रभावसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली- श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर जी, बलेह, तहसील-रहली, मु.पो. बलेह (सागर) मध्यप्रदेश

35. क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला, चौक, भोपाल-462001, मध्यप्रदेश फोन (0755) 748935
संपर्क सूत्र - (1) अध्यक्ष-महेश सिंघई (नि.) 544985, 544986 (दु.)537072, 534672 (2) नरेन्द्र जैन वंदना-(नि.) 748426, 234104 (3) पप्पू भूरा- 510313

36. क्षुल्लक श्री पूर्ण सागर जी महाराज
चातुर्मास स्थली - श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी, खमरिया-बिजौरा नोहटा (दमोह) मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र - (1) अध्यक्ष-रमेश चन्द्र जैन (07606) 57215 (2) डॉ. आर.सी. जैन-23120, (3)सुभाष जैन

नोट - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित वर्तमान में 59 मुनि महाराज, 109 आर्यिकाएँ, 9 ऐलक महाराज तथा 5 क्षुल्लक महाराज जी, कुल-182 साधकगण मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, इन 6 प्रान्तों में वर्षायोग कर धर्मप्रभावना कर रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ 32 का शेषांश

के ऊपर नहीं दर्शाते हुए पृष्ठ भाग पर दर्शाया है। पापुलर बेकवेल, जबलपुर ने अपने 'पापुलर फ्रूट केक' उत्पाद में अण्डों का उपयोग होने पर न भूरे रंग का चिह्न लगाया है न उत्पाद बनाने व उसकी मियाद की तारीख दी है।

विशेषकर शाकाहारी उपभोक्ताओं के हित में शाकाहारी वस्तुओं को हरा चिह्न देखकर ही खरीदने की जानकारी मिलना नितांत आवश्यक है। विभिन्न सामाजिक संगठनों, संस्थाओं को जो शाकाहार में विश्वास रखते हैं, उन्हें चाहिए कि वे पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन से, प्रचार पट्ट लिखवाकर, पर्चे वितरित करके टी.वी. केबल, सिनेमा स्लाईड्स पर शाकाहारी चिह्न की उपयोगिता का प्रचार करावें। सन्तों को चिह्न संबंधी जानकारी देकर उनके व्याख्यानों से भी प्रचार हो सकता है। मतलब यह है कि शाकाहार की भावना के हित में जैसे भी संभव हो हरे रंग के चिह्न की उपयोगिता और भूरे रंग के चिह्न वाले खाद्य पदार्थों से बचने की जानकारी सामान्यत: हर आदमी तक पहुँचाने की कोशिश की जाना आवश्यक है।

चिह्न वस्तुओं पर दर्शाने का नियम लागू हो जाने के बावजूद जिन उत्पादों पर चिह्न नहीं दिखे उसकी सूचना अपने क्षेत्र के खाद्य/औषधि निरीक्षकों, उपभोक्ता फोरम मंत्री, सांसद, विधायकों आदि से शिकायत करके दी जानी चाहिए। इस सवाल पर वकीलों को भी सतर्क रहते हुए स्वयं वैधानिक पहल करना चाहिए।

अब तक खाद्य पदार्थों पर सिर्फ चिह्न प्रकाशित होने से कई उपभोक्ता शाकाहारी/माँसाहारी होने की पहचान नहीं कर पाए हैं। काली स्याही से छपे चिह्न से तो शाकाहारी/माँसाहारी की पहचान संभव नहीं है। इस संबंध में सागर (म.प्र.) के संसद सदस्य श्री वीरेन्द्र कुमार, जो सांसद की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण समिति के सदस्य हैं, ने स्वास्थ्य मंत्री शत्रुघ्न सिन्हा के समक्ष विभाग की 5 जुलाई की बैठक में सुझाव दिया कि खाद्य पदार्थों के डिब्बों/पैकेटों पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में स्पष्ट रुप से शाकाहारी/माँसाहारी लिखा जाना चाहिए। सुझाव को व्यावहारिक मानते हुए स्वास्थ्य मंत्री शत्रुघ्न सिन्हा ने खाद्य पैकेटों पर शाकाहारी/माँसाहारी अनिवार्य रुप से लिखने व क्रियान्वित करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को तत्काल दे दिया।

सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर से जनहितार्थ जारी

भगवान् महावीर स्वामी के नाम पर मार्ग का नामकरण व सीमेंट कांक्रीट मार्ग का लोकार्पण

भगवान् महावीर स्वामी के 2601 वें जन्म जयन्ती वर्ष में सिरोंज जिला (विदिशा) में 2 कार्यक्रम सम्पन्न हुये। प्रथम पूर्व सांसद श्री राघव जी भाई की सांसद निधि से सिंचाई विभाग द्वारा जैन बड़े मंदिर के सामने घेतल गली में निर्मित सीमेंट कांक्रीट मार्ग का लोकार्पण हुआ। द्वितीय, इसके पश्चात् सिरोंज नगर पालिका द्वारा घेतल गली में अतिशय क्षेत्र नसिया जी तक के मार्ग का नाम भगवान् महावीर स्वामी मार्ग रखा गया। उपर्युक्त दोनों कार्यक्रम नामकरण एवं लोकार्पण करते हुये मुख्य अतिथि पूर्व सांसद श्री राघवजी भाई ने कहा कि भविष्य में समाजहित में जो भी कार्य मेरे द्वारा संभव होंगे उन्हें प्राथमिकता के आधार पर पूरा करूँगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये क्षेत्रीय विधायक श्री लक्ष्मीकांत शर्मा जी ने भरपूर यथासंभव सहयोग देने की घोषणा की और कहा कि मैं भी समाज का एक अंग हूँ। पूर्व सांसद एंव विधायक जी ने दिगम्बर जैन समाज, सिरोंज द्वारा धार्मिक, सामाजिक कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में भोपाल से आये हुये भगवान् महावीर स्वामी 2600वें जन्म शताब्दी समारोह के राज्य स्तरीय सदस्य एवं दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी ट्रस्ट के मंत्री शरद जैन भोपाल ने समाज के बुजुर्गों एवं अध्यक्ष के मार्गदर्शन में युवा मण्डल के कार्यों की सराहना करते हुए अनुकरणीय बताया। उल्लेखनीय है कि युवा मण्डल सिरोंज द्वारा स्थानीय शासकीय अस्पताल में एक वार्ड की गोद लेकर उसका नामकरण भी भगवान् महावीर स्वामी के नाम पर किया गया। शरद जैन भोपाल ने बताया कि शासन के निर्देशनुसार प्रत्येक शहर, पंचायत, ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा नामकरण के कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाये (सम्पर्क शरद जैन, 47, मारवाड़ी रोड़, भोपाल फोन 543522)।

शरद जैन
80 जनकपुरी, जुमेराती, भोपाल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जरूरत है शाकाहार पहचान चिह्न के नियम पालन की

जीव दया, क्रूरता निवारण, शाकाहार एवं प्राणीरक्षा में आस्था, निष्ठा रखने वाले कार्यकर्त्ताओं एवं संस्थाओं के अथक प्रयासों से केन्द्रीय स्वास्थ्य तथा परिवार-कल्याण मंत्रालय (105-ए, निर्माण भवन,नई दिल्ली) ने 'खाद्य अपमिश्रण निवारण अधिनियम, 1954' में संशोधन किया है। संशोधन के बाद अब माँसाहारी/शाकाहारी खाद्य पदार्थों के डिब्बों/पेकिंग पर यह निश्चित चिह्न प्रदर्शित करना अनिवार्य कर दिया है। इसमें माँसाहारी खाद्य पदार्थ को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि 'जिस खाद्य पदार्थ में एक संगठक के रूप में पक्षियों, ताजा जल अथवा समुद्री जीव-जन्तुओं अथवा अण्डों सहित कोई भी समग्र जीव-जन्तु या उसका कोई भाग अथवा जीव-जन्तु मूल का कोई उत्पाद अन्तर्विष्ट होगा, तो वह पदार्थ 'माँसाहारी खाद्य' माना जावेगा। किन्तु इसके अंतर्गत दूध या दूध से बने पदार्थों को माँसाहारी खाद्य नहीं माना जायेगा।' इस परिभाषा में अण्डे को माँसाहार श्रेणी में शामिल किया गया है।

माँसाहारी खाद्य पदार्थों के पेकिंग पर 'भूरे रंग' (ब्राउन कलर) तथा शाकाहारी पदार्थ पर हरे रंग का एक जैसा चिह्न छापना अनिवार्य हो गया है। उपभोक्ता, वस्तु की पहचान चिह्न के अलग-अलग रंग से कर सकेंगे। प्रतीक चिह्न का आकार उत्पाद के नाम या ब्राण्ड नाम के लिए प्रयुक्त अक्षरों की ऊँचाई के बराबर होना चाहिए। चिह्न को उत्पाद के नाम या ब्राण्ड नाम के ठीक ऊपर प्रदर्शित किये जाने का प्रावधान है। सभी प्रकार के प्रचार-प्रसार, मीडिया, विज्ञापन आदि में प्रतीक चिह्न को नियमानुसार अनिवार्य रूप से दर्शन की बाध्यता रखी गई है। प्रतीक चिह्न भरे हुए वृत्त जो व्यास से दुगनी परिधि का हो, उसे एक वर्ग के मध्य में रहना चाहिए। माँसाहारी खाद्य पदार्थों पर प्रतीक चिह्न 4 अक्टूबर, 2001 से तथा शाकाहारी पदार्थों पर 20 जून,2002 से दर्शाना अनिवार्य हो चुका है। सरकार की खुली आयात नीति से आयातित खाद्य पदार्थों पर भी प्रतीक चिह्न को चिह्नित करने का नियम लागू होगा या नहीं यह जानकारी अब तक सामने नहीं आ सकी है। शाकाहारी उपभोक्ताओं, जिनकी संख्या अमेरिका की एक बाजार शोध कंपनी 'रोपर स्टार्च वर्ल्डवाइड' द्वारा 1997 में किये गये विश्वव्यापी सर्वेक्षण अनुसार भारत में 82 प्रतिशत निकली है। इनकी शाकाहारी भावनाओं के हित में सरकार को चाहिए कि वह प्रतीक चिह्न को प्रदर्शित करने की बाध्यता आयातकर्त्ता पर भी सुनिश्चित करें।

अनेक उत्पादकों ने अपने उत्पादों पर ये प्रतीक छापन प्रारंभ कर दिया है। माँसाहारी खाद्य पदार्थों में दिल्ली की ब्रिटेनिय का उत्पाद 'गुड-डे, फ्रूट केक', मुम्बई के डोमिनोज पिज्जा के अनेक उत्पाद, गुड़गाँव (हरियाणा) की कम्पनी फ्रीटो ले इण्डिय का चिकन फ्लेवर युक्त 'पोटेटो चिप्स' (आलू पपड़ी), नई दिल्ली की नेस्ले इण्डिया लि. का 'मैगी रिच किचन सूप पाउडर तथा मैगी-एकस्ट्रा टेस्ट चिकन' आदि पर भूरे रंग से बना चिह्न देखने में आया है। कुछ ऐलोपैथिक कैपस्यूल्स, गोलियाँ एवं पाउडर के पैकेटों पर भी माँसाहारी भूरे रंग का चिह्न प्रदर्शित हुआ है। उदाहरण के लिये-मुंबई की यूनिवर्सल मेडीकेयर का उत्पाद, 'फ्री फ्लेक्स', 'इस्टोवन' व 'प्रिमोसा' केपस्यूल्स, दिल्ली की ईस्टर्न-केपस्यू प्रा. लि. के 'प्रोस्टोनिल' व 'मेगोमोस्ट' केपस्यूल्स, मुंबई के रेनबेक्सी लेबोरेटरी के 'रेवीटाल', रेवीटल केपस्यूल्स, लूपिन लिमिटेड के 'रेकोविट' केपस्यूल्स, बेरगेन हेल्थ केयर के 'ओलेवान' केपस्यूल्स और बैंगलोर की बन्नेर फार्मा. इं. प्रा. लि. की 'सेट काल मोम' टेबलेट्स आदि के बारे में कुछ जानकार बताते हैं कि उपरोक्त दवाइयों में प्राणिज स्त्रोत से प्राप्त (हड्डियों से निर्मित) जिलेटिन, विटामिन्स प्रयोग होने से यह चिह्न दर्शाया है। दूसरी और नोवार्टिज कन्जूमर हेल्थ इ.प्रा.लि. मुंबई के 'इम्पेक्ट' पाउडर में मछली तेल के अतिरिक्त ऐसे ही अन्य विटामिन्स मिलाये जाते हैं।

खुशी इस पहल से भी होती है कि कुछ उत्पादकों ने नियम प्रभावशाली होने की तारीख 20 जून, 2002 से पहले ही अपने उत्पाद पर हरे रंग का शाकाहारी चिह्न चिह्नित कर दिया। इनमें नई दिल्ली की नेस्टेले ने 'मैग्गी 2 मिनिट्स नूडल्स', के.आई.सी. फूड्स प्रा. लि. मुंबई के 'मेक्स आरेंज', 'फ्रूट पावर' पर तथा पारले बिस्कुट प्रा. लि. मुंबई ने अपने उत्पाद 'पारले मोनाको' तथा 'पारले जी' बिस्कुट एवं क्लासिक फुड्स ने 'फन ब्रेक' नामक 'टामाटो बाल्स', लिप्टन की ताजा चाय, प्रिया गोल्ड कं. की किड्स क्रीम बिस्कुट आदि शामिल हैं।

कुछ उत्पादक उपभोक्ताओं को भ्रमित करने/चिह्नों की जानकारी नहीं होने का लाभ उठाकर भूरे रंग की जगह लाल या भटा (मेजंटा) रंग से चिह्न बना रहे हैं। कुछ ने उत्पाद/ब्राण्ड नाम

शेष पृष्ठ 31 पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाकाहारी खाद्य पदार्थ के पैकेट पर चिन्ह

शाकाहारी एवं मॉसाहारी खाद्य पदार्थो के पैकेट पर प्रतीक चिन्ह बनाना अनिवार्य

मांसाहारी खाद्य पदार्थ के पैकेट पर चिन्ह

शाकाहारी खाद्य पदार्थों पर हरे रंग (ग्रीन कलर) वाला चिह्न - देखें

ऐसा न पाये जाने पर तुरंत उपभोक्ता फोरम में शिकायत करें।

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

रजि.नं. UP/HIN/29933/24/1/2001-TC डाक पंजीयन क्र.-म.प्र./भोपाल /588/2002

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : रतनलाल बैनाड़ा द्वारा एकलव्य ऑफसेट सहकारी मुद्रणालय संस्था मर्यादित, जोन-I, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं सर्वोदय जैन विद्यापीठ 1/205, प्रोफेसर्स कालोनी, आगरा-282002 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org